आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 मार्च, 2016
वर्ष : 74 ★ अंक : 03 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 मार्च, 2016 ★ फाल्गुन, 2072

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य हीरा : आचार्यपद रजत साधनावर्ष

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी
हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : editorjinvani@gmail.com
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा,
गंडवच्छासुऽणेगचित्तासु।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता,
खेल्लंति जहा व दासेहिं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.18

भ्रष्ट नारी में गृद्धि करो मत,
हृदय गाँठ मन-चंचलता।
जो लुभा पुरुष को दास रूप में,
खेल करे धर मन शठता।।

मार्च, 2016
वीर निर्वाण संवत्, 2542
फाल्गुन, 2072

वर्ष 74 अंक 3

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	मुम्बई एवं सोनगढ़ की संगोष्ठियाँ	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-सम्पादक	9
विचार-वारिधि-	आरम्भ-परिग्रह	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	11
प्रेरक-संदेश-	संयम का संकल्प भी दुःखहारक	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	12
	सद्गुणग्राही ही मोक्ष राही	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
प्रवचन-	तोड़े देह के नेह को	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	17
	अहंकार	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	19
स्वाध्याय-संदेश-	स्वाध्याय : क्या, क्यों और कैसे ?	-डॉ. के.एल. पोखरना	21
रेडिया-वार्ता-	प्राकृत के शिलालेख एवं उनके संदेश	-डॉ. दिलीप धींग	29
तत्त्व-ज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ	-श्री धर्मचन्द जैन	33
आत्म-मंथन-	अहं का दान	-डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'	36
काव्य-	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (20)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	39
प्रासंगिक-	गुरु गुण गाना रे	-महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा.	28
	आचार्यप्रवर श्री हीरा : सद्गुणों की खान	-डॉ. मंजुला बम्ब	43
	जय बोलो-बोलो रे पूज्वर हीरा की	-श्री मगनचन्द जैन	63
अंग्रेजी-स्तम्भ-	EDUCATIONAL VALUES IN JAINA CANONS	*Sh. Dulichand Jain*	48
युवा-स्तम्भ -	धार्मिक क्रियाओं की प्रभावकारिता	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	51
प्रेरक-अनुभव -	सुमिरन से मिलती शान्ति एवं एकाग्रता	-श्री प्रमोद महनोत	56
महावीर जयन्ती -	भगवान महावीर का अपरिग्रह दर्शन	-प्रो. सुमेरचन्द जैन	57
नारी-स्तम्भ -	गर्भस्थ बच्चे की हत्या का आँखों देखा विवरण	-श्रीमती सुमन कोठारी	61
धारावाहिक -	लग्न की वेला (18)	-आचार्यश्री उमेशमुनिजी 'अणु'	66
बाल-स्तम्भ -	(1) करुणा की कहानियाँ	-श्रद्धेय श्री ज्ञानमुनिजी म.सा.	72
	(2) पुस्तकें होती अनमोल	-श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा	75
विचार-	सन्तों का संग	-श्री रेणुमल जैन	65
कविता/गीत-	संयम की लौ पाकर	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	10
	तप का तेज	-डॉ. सुषमा सिंघवी	19
	ज़िन्दगी को खुशनुमा बनाना है गर	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	20
	आदिनाथाष्टकम्	-डॉ. श्वेता जैन	42
	नमन हो हस्ती गुरुवर	-डॉ. मीनाक्षी डागा	47
	ऐ मेरे भगवन्	-सुश्री निधि जैन	62
	समभाव	-डॉ. रमेश 'मयंक'	64
जीवन-व्यवहार-	जीवन के सत्य	-आचार्यश्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	78
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	77
युवक परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें (परिणाम)	-संकलित	79
शिक्षण बोर्ड-	आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड परीक्षा परिणाम	-संकलित	81
दीक्षा-रिपोर्ट-	चार मुमुक्षु बहनों की जैन भागवती दीक्षा	-नौरतनमल मेहता	83
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	98
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	119

सम्पादकीय

मुम्बई एवं सोनगढ़ की संगोष्ठियाँ

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

संगोष्ठियाँ (Seminars) ज्ञानवर्धन एवं दृष्टिकोण के विकास में सहायक होती हैं, क्योंकि इनमें सीमित समय में एक विषय के विभिन्न आयामों पर विशिष्ट विद्वानों एवं शोधपत्रों से जानकारी प्राप्त होती है। विशेषज्ञ विद्वानों से चर्चा-वार्ता का अवसर प्राप्त होता है। 'वादे वादे जायते तत्त्वबोधः' परस्पर विचार-विमर्श से तत्त्व का बोध होता है। संगोष्ठियों के माध्यम से नई दृष्टियाँ एवं नये विचार भी प्रकट होते हैं। विगत दो माह में तीन संगोष्ठियों में जाना हुआ, जिनमें से यहाँ दो संगोष्ठियों की चर्चा करना उपयुक्त समझता हूँ।

4 से 7 फरवरी 2016 को श्री महावीर जैन विद्यालय, मुम्बई के द्वारा श्री महावीर जैन चारित्र कल्याण रत्नाश्रम, सोनगढ़ (गुजरात) में 23 वें साहित्य समारोह का आयोजन हुआ। डॉ. धनवन्त भाई शाह, मुम्बई के संयोजन एवं श्री रूपमाणेक भंसाली चेरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से आयोजित इस साहित्य समारोह में अग्रांकित चार विषयों पर शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये- 1. जैनागम साहित्य, 2. जैन तीर्थ साहित्य, 3. बारह भावना, 4. जैन सज्झाय। समारोह में लगभग 150 प्रतिभागी थे। श्री महावीर जैन विद्यालय के द्वारा प्रत्येक दो वर्षों में साहित्य समारोह का आयोजन भिन्न-भिन्न विषयों पर किसी विशिष्ट तीर्थ स्थान पर किया जाता है। श्वेताम्बर जैन मूर्ति पूजक परम्परा में आगम का अध्ययन गृहस्थों के लिए निषिद्ध है, किन्तु इस साहित्य समारोह से ऐसी प्रतीति हुई कि आगम के अध्ययन का महत्त्व इस परम्परा के द्वारा भी स्वीकार किया जा रहा है। संगोष्ठी में मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी एवं दिगम्बर सभी परम्पराओं का प्रतिनिधित्व रहा। इस समारोह के कारण अनेक श्रावक-श्राविकाओं में स्वाध्याय एवं लेखन की प्रवृत्ति बढ़ रही है। संगोष्ठी में गुजराती भाषा के प्रयोग का बाहुल्य रहा। समारोह में प्रस्तुत शोध लेखों का पुस्तक रूप में प्रकाशन भी किया जाता है। भंसाली चेरिटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी वल्लभ भाई उद्घाटन में आए एवं मंगल भाई की चारों दिवस सक्रिय उपस्थिति रही। चारित्र कल्याण आश्रम में लगभग 325 बच्चे रहते हैं, जिन्हें अध्ययन के लिए अत्यन्त सुन्दर एवं प्राकृतिक वातावरण प्राप्त है। देश के अनेक भागों से आये हुए ये बालक परिवार की तरह हिलमिल कर रहते हैं तथा आश्रम के ही सीनियर सैकण्डरी विद्यालय में इनके सहित 450 छात्र अध्ययन करते हैं। प्रवेश के समय मामूली शुल्क लिया जाता है, फिर भोजन एवं आवास की व्यवस्था निःशुल्क रहती है। बच्चों के अध्ययन की व्यवस्था भी अच्छी है।

8 से 10 जनवरी 2016 को आई.आई.टी. मुम्बई परिसर में जैन विश्व भारती, लाडनूँ के भगवान महावीर इण्टरनेशनल रिसर्च सेण्टर के द्वारा आई.आई.टी. मुम्बई, मुम्बई विश्वविद्यालय एवं के.जे. सोमैया जैन अध्ययन केन्द्र के संयुक्त तत्त्वावधान में '**विज्ञान और जैन दर्शन**' विषय पर अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में लगभग 850 प्रतिभागियों एवं अतिथि श्रोताओं की उपस्थिति रही। भारत सरकार के विज्ञान एवं तकनीकी मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने अपने वक्तव्य में इस प्रकार के सम्मेलन को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बताया। अन्तरराष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधिपति श्री दलवीर भण्डारी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। मुनि डॉ. महेन्द्रकुमारजी का सान्निध्य प्राप्त था। लगभग 15 देशों के वैज्ञानिकों एवं जैन दर्शन के शताधिक अध्येताओं ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। शोध-पत्र प्रस्तोताओं की तीन श्रेणियाँ प्रमुख थीं- 1. प्लेनेरी व्याख्याता, 2. आमन्त्रित शोधपत्र प्रस्तोता, 3. साधारण पंजीकृत शोधपत्र प्रस्तोता। युवा शोधपत्र प्रस्तोताओं के लिए पृथक् से सत्र आयोजित किए गए। समस्त संगोष्ठी अंग्रेजी माध्यम से हुई। पॉवर पाइण्ट प्रजेन्टेशन आदि आधुनिक तरीकों से संगोष्ठी में विषयों की प्रस्तुति हुई। दो तीन व्याख्यान वीडियो कांफ्रेंसिंग से भी हुए।

संगोष्ठी में अनेकविध विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत हुए। प्रमुख विषय इस प्रकार रहे- 1. विश्वविज्ञान (Cosmology), 2. आत्मा और चैतन्य (Soul & Consciousness), 3. जैन तर्कशास्त्र और सापेक्षता, 4. पर्यावरण-विज्ञान और इकोलॉजी, 5. जैन गणित, 6. प्रकृति के नियम एवं कर्म-सिद्धान्त, 7. विज्ञान और अध्यात्म, 8. वर्तमान युग में जैन दर्शन की प्रासंगिकता, 9. विज्ञान, समाज एवं नीतिशास्त्र। इन विषयों के अतिरिक्त प्रेक्षाध्यान के जैव-वैज्ञानिक प्रभावों पर एक कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें वैज्ञानिकों एवं चिकित्सकों ने शरीर एवं मन के स्वास्थ्य पर ध्यान के प्रभाव को प्रस्तुत किया।

शिक्षा-प्रणाली में नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों तथा संवेगात्मक विकास के सन्दर्भ में अध्यात्म एवं विज्ञान की भूमिका पर भी विचार-विमर्श किया गया। संगोष्ठी में भौतिक शास्त्री, रसायन शास्त्री, चिकित्सक, जीवविज्ञानी, खगोल विज्ञानी आदि अनेकविध वैज्ञानिक आमन्त्रित थे। जैनदर्शन के विद्वान् अपेक्षाकृत कम ही थे। जैनदर्शन के साथ विज्ञान की चर्चा करते समय यह आवश्यक है कि जैन दर्शन के ज्ञाता को आधुनिक विज्ञान का भी बोध हो एवं वैज्ञानिक को जैनदर्शन का भी बोध हो। डॉ. मुनि महेन्द्रकुमारजी जैसे विरले संत हैं जो विज्ञान एवं जैनदर्शन दोनों को जानते हैं। एन.एल. कच्छारा, नरेन्द्र भण्डारी, पारसमल अग्रवाल, जीवराज जैन, सुरेन्द्र पोखरना जैसे वैज्ञानिक भी जैनदर्शन की जानकारी रखते हैं।

सम्मेलन में जैनदर्शन एवं विज्ञान विषयक अध्ययन को आगे बढ़ाने के सम्बन्ध में

विद्वानों के कई सुझाव प्राप्त हुए, जिनमें एक यह भी सुझाव था कि एक ऐसे महाविद्यालय की स्थापना की जाए, जिसमें विज्ञान एवं जैनदर्शन दोनों का अध्ययन किए जाने का अवसर प्राप्त हो। एतद्विषयक पाठ्यक्रम तैयार करने पर भी चिन्तन हुआ। जैनदर्शन एवं विज्ञान के समन्वय एवं तुलनात्मक अध्ययन की दिशा में भी विचार-विमर्श हुआ।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक आंइस्टीन की मान्यता है कि धर्म के बिना विज्ञान लंगड़ा है तथा विज्ञान के बिना धर्म अंधा है। धर्म एवं विज्ञान दोनों एक-दूसरे की अपेक्षा रखते हैं। विज्ञान की अपनी एक दृष्टि है, जो कारण-कार्य सिद्धान्त एवं प्रयोगों के सत्य पर आधारित है। अध्यात्म में आन्तरिक प्रयोग होते हैं, उनका अपना सत्य है तथा वहाँ भी कारण-कार्य नियम लागू होता है। जिस प्रकार विज्ञान सार्वभौमिक है, उसी प्रकार अध्यात्म भी सार्वभौमिक है। अध्यात्म का सम्बन्ध आत्मा से है। जैनदर्शन, अध्यात्म एवं जगत् दोनों का विचार करता है। जीव एवं अजीव सभी पदार्थ उसकी परिधि में आते हैं। विज्ञान की अपनी सीमाएँ हैं। आधुनिक विज्ञान मुख्यतः पुद्गल को अपने प्रयोग का विषय बनाता है। भौतिक विज्ञान में क्वाण्टम मैकेनिक्स हो अथवा चिकित्सा विज्ञान में जैनेटिक विज्ञान, रसायन विज्ञान के प्रयोग हों अथवा जीव विज्ञान एवं खगोल विज्ञान का अध्ययन, सर्वत्र विज्ञान के द्वारा रूप, रस, गंध एवं स्पर्शयुक्त पुद्गल को ही प्रयोग का माध्यम बनाया जाता है। सूचना तकनीकी में इण्टरनेट का प्रयोग हो अथवा अन्य ग्रहों पर यानों का प्रक्षेपण, उनमें भी पुद्गल ही प्रयोग का आधार बनता है। बाह्य उपकरण रूप, रस, गंध एवं स्पर्श से रहित आत्मा को नहीं पकड़ सकते। यह स्वानुभव का क्षेत्र है, भौतिक उपकरणों द्वारा इसे सीधे जानना सम्भव नहीं है। हाँ, इस चेतना के जो प्रभाव शरीर एवं व्यवहार में दिखाई देते हैं, उनके आधार पर चैतन्य के सम्बन्ध में विज्ञान भी कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकता है। चैतन्य पर जो प्रयोग हो रहे हैं, वे कोशिकाओं, मस्तिष्क, शुक्राणु, गुणसूत्र आदि पर हो रहे हैं। आत्मा का सम्यक् बोध तो अध्यात्म (Spirituality) का विषय है, विज्ञान का नहीं।

इस सम्मेलन में अनेक महत्त्वपूर्ण शोधालेख प्रस्तुत हुए। पूर्वजन्म की स्मृतियों के आधार पर जीव के पुनर्जन्म के सिद्धान्त पर डॉ. जैफरी डी. लॉग ने प्रकाश डालते हुए अमेरिका के उदाहरण प्रस्तुत किए, जिनमें कुछ बच्चों को पूर्व जन्म का स्मरण था। विश्व के प्रसिद्ध वैज्ञानिक रोजर पेनरोज स्वयं उपस्थित नहीं हुए, किन्तु स्काइप पर उन्होंने ब्रह्माण्ड के चक्रीय सिद्धान्त का प्रयोगों के आधार पर विश्लेषण किया, जो जैन दर्शन के काल चक्रीय सिद्धान्त के साथ साम्य रखता है। डॉ मुनि महेन्द्र कुमार जी ने न्यूरोसाइन्स एवं कर्म पर प्रकाश डालते हुए कर्म के प्रभाव का वैज्ञानिक विश्लेषण किया। न्यूरोसाइन्स का क्षेत्र मस्तिष्क विज्ञान है, जो मस्तिष्क की रचना एवं उसके कार्यों का अध्ययन करता है। काम, क्रोध,

हिंसा आदि के भाव जहाँ मस्तिष्क के कार्यों को प्रभावित करते हैं, वहाँ ध्यान एवं समभाव की साधना शरीर में इन विकृत भावों के प्रभाव को समाप्त कर देती है। डॉ. अशोक पानगडिया के अनुसार मस्तिष्क के एक भाग में निर्णय की क्षमता होती है तो किसी एक भाग में संवेगों का प्रवाह चलता है। उन्होंने जीवन में मस्तिष्क की कार्यप्रणाली को रेखांकित किया। जापान के डॉ. अकासाका ने जीवन के विकास में न्यूक्लिक एसिड एवं प्रोटीन नामक मॉल्यूक्यूल की भूमिका पर प्रकाश डाला।

चेतना का अनुभव हमें अनेक स्तरों पर होता है। पाँच इन्द्रियों से होने वाला ज्ञान, आहार, भय, मैथुन आदि चार संज्ञाएँ, क्रोधादि कषाय, क्षमा आदि भाव हमें चेतना का अनुभव कराते हैं, किन्तु चेतना का जैनदर्शन में मूल स्वरूप उपयोग है, जिसे ज्ञानोपयोग एवं दर्शनोपयोग के रूप में समझा जाता है। आचार्य नन्दीघोषसूरि ने वैज्ञानिक रीति से अभक्ष्य एवं अनन्तकायिक खाद्य सामग्री का वैज्ञानिक प्रयोगों के आधार पर विश्लेषण किया। उन्होंने आलू, आलू की चिप्स, अदरक, लहसुन आदि में जीवत्व की सिद्धि की। गलियों में लगने वाले ठेलों पर मिलने वाली पानी पूरी में भी उन्होंने त्रस जीवों का होना बतलाया। जैनदर्शन के अनेकान्त सिद्धान्त के आधार पर कुछ विद्वानों के द्वारा आधुनिक भौतिक विज्ञान की समीक्षा की गई। क्षमा का जीवन पर क्या प्रभाव होता है, इसका विश्लेषण डॉ. विनेय जैन ने किया। उनका कथन था कि बिना शर्त के क्षमा करना उत्तम क्षमा है और यह क्षमा व्यक्ति के निजी जीवन को तो तनाव रहित बनाती ही है, पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण में भी इसका मधुर प्रभाव अंकित होता है।

यह सम्मेलन अद्भुत था। विज्ञान एवं जैनदर्शन को लेकर अन्तरराष्ट्रीय एवं बृहत्स्तर पर सम्भवतः यह प्रथम प्रयास था। आचार्य कनकनन्दीजी, उपाध्याय ज्ञानसागरजी आदि की सन्निधि में भी जैनदर्शन एवं विज्ञान को लेकर संगोष्ठियाँ होती रही हैं, किन्तु विदेशी वैज्ञानिकों एवं जैनदार्शनिकों की उपस्थिति से इसका स्वरूप व्यापक बन गया। जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित इस सम्मेलन में कुछ सन्तों एवं लगभग बीस समणियों की भी उपस्थिति रही। आमन्त्रित विद्वानों एवं वैज्ञानिकों के आवास की व्यवस्था पाँच सितारा होटलों में की गई, जिसकी इतनी आवश्यकता नहीं थी। अन्य स्थानों पर भी ठहरने की व्यवस्था रही। यह संगोष्ठी अनेक संस्थाओं एवं अर्थपतियों के सहयोग से सम्पन्न हो सकी। छह सौ शोध-पत्र वाचकों एवं श्रोताओं ने शुल्क देकर पंजीकरण करवाया। सम्मेलन भव्यता से हुआ। वैज्ञानिकों के लिए शोध के ऐसे विषय भी सामने आए, जिन पर शोध अपेक्षित है। सम्मेलन के आयोजन में प्रमुख भूमिका कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी, समणी चैतन्यप्रज्ञाजी एवं प्रो. के.पी.मिश्रा की रही। ❖

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

(प्र.) पायच्छित्त-करणेणं भंते! जीवे किं जणयइ?

(उ.) पायच्छित्त-करणेणं पावकम्म-विसोहिं जणयइ, निरइयारे यावि भवई सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयार-फलं च आराहेइ। -उत्तराध्ययनसूत्र, उनतीसवाँ अध्ययन, सम्यक्त्व पराक्रम, प्रश्न 16

अर्थ- (प्र.) हे भगवन्! प्रायश्चित्त करने से, जीव को क्या प्राप्त होता है?

(उ.) प्रायश्चित्त करने से जीव पापकर्म की विशुद्धि करता है, फिर वह निरतिचार भी हो जाता है तथा सम्यक् प्रकार से प्रायश्चित्त को स्वीकार करता हुआ साधक मार्ग और मार्ग फल को विशुद्ध करता है एवं आचार और आचार फल की आराधना कर लेता है।

विवेचन- आत्म-दोषों एवं त्रुटियों के निराकरण का एक सशक्त उपाय है- प्रायश्चित्त। प्रायश्चित्त से दोषों की पुनरावृत्ति रुकती है तथा आत्म-शुद्धि होती है। इससे पापों का परिमार्जन होता है तथा साधना के मार्ग-स्वरूप सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र की शुद्धि बनी रहती है। इसलिए प्रायश्चित्त को आभ्यन्तर तप में स्थान दिया गया है।

प्रायश्चित्त एवं पश्चात्ताप में महान् भेद है। भूल करके पश्चात्ताप भी किया जाता है एवं प्रायश्चित्त भी। पश्चात्ताप जहाँ किसी भूल के सम्बन्ध में आर्त्तध्यान उत्पन्न करता है वहाँ प्रायश्चित्त धर्मध्यान में स्थिर करता है। पश्चात्ताप में प्रायः इस प्रकार का चिन्तन चलता है- 'अरे, मुझसे ऐसा क्यों हो गया? मुझे अकेले नहीं जाना चाहिए था, मैंने यह क्यों खा लिया? बच्चे को क्यों डाँट दिया? तब निर्णय सही क्यों नहीं हुआ? इत्यादि विचार हमें अनिष्ट घटना घटित होने के पश्चात् होते हैं, जो हमें ताप या सन्ताप उत्पन्न कराते हैं, अतः ये पश्चात्ताप के कारण होते हैं। पश्चात्ताप=पश्चात्+ताप। बाद में जो दुःख, पीड़ा या व्यथा को जन्म देता है वह पश्चात्ताप (पछतावा) है। जीवन को व्यर्थ गवां देने का भी पश्चात्ताप हो सकता है। पश्चात्ताप के दो पक्ष हैं- एक तो पूर्व में हुई भूल या त्रुटि से खिन्न एवं दुःखी होना तथा दूसरा उस खिन्नता से कुछ नई सीख लेना। अपने में सुधार की भावना से नई सीख ग्रहण करना जहाँ उपयोगी है, वहाँ खिन्न होकर रह जाना आर्त्तध्यान के सिवाय कुछ नहीं है। इसलिए जहाँ तक सम्भव हो कार्य करते समय सावधान रहना चाहिए।

प्रायश्चित्त एक आभ्यन्तर तप है। 'प्रायश्चित्त' शब्द में प्रायः का अर्थ है पाप तथा चित्त का अर्थ है 'विशुद्धि। जैसा कि वृहद्वृत्ति में कहा गया है- 'प्रायः पापं विजानीया-

तृचित्तं तस्य विशोधनम्।' पाप की शुद्धि हेतु प्रायश्चित्त किया जाता है। उदाहरण के लिए दिनभर में हुई किसी भूल का अवलोकन कर उसका प्रतिक्रमण अथवा तपश्चर्या आदि के द्वारा पुनः न दोहराने का संकल्प लेना उसकी शुद्धि का उपाय है। की हुई भूल को न दोहराना ही उस भूल को दूर करने का उपाय है। प्रायश्चित्त के नौ भेद हैं- आलोचन, प्रतिक्रमण, आलोचन-प्रतिक्रमण, विवेक, व्युत्सर्ग, तप, छेद, परिहार, उपस्थापन। भिन्न-भिन्न प्रकार की भूलों को दूर करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार का प्रायश्चित्त किया जा सकता है। कोई दोष आलोचन मात्र से दूर हो सकता है, कोई प्रतिक्रमण से, कोई दोनों से, कोई विवेक के प्रयोग से, कोई ममत्व के त्याग से, कोई तप से, कोई दीक्षा-छेद से, कोई परिहार तप से तथा कोई महाव्रतों में पुनः स्थापन से दूर होता है। अतः यथायोग्य विधि अपनाकर प्रायश्चित्त किया जा सकता है। प्रायश्चित्त आत्मशुद्धि का महान् साधन है। हमें अपनी भूल में सुधार के लिए पश्चात्ताप नहीं प्रायश्चित्त करना चाहिए। **- सम्पादक**

संयम की लौ पाकर

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

(तर्जः- जिया कब तक..........।)

सद्ज्ञान का दीप जले, मन में करना चिंतन।
संयम की लौ पाकर, निखरे जीवन कुन्दन।।टेर।।
सेवा में समन्वय हो, लघुता व समर्पण का,
सार्थक है वो जीवन, जिसमें गुण निभने का।
आज्ञा में बड़ों की रहें, अनुशासन नहीं बंधन।।1।।
मर्यादित हो जीवन, तो स्वस्थ रहे तन-मन,
पाकर यदि गर्व करे, वो व्यर्थ है धन यौवन।
वाणी में मधुरता हो, जन-जन का बने अंजन।।2।।
आए हुए विघ्नों को समभाव से सह जाएं,
गम की परछाई भी, उसको ना छू पाए।
पर को देने से मिले, खुशियों का वृन्दावन।।3।।
हर पल मन में उत्साह, करना ऊर्जा का संचार,
संकल्प में हो दृढ़ता, फिर कुछ भी ना दुश्वार।
'गौतम' से प्रभु कहते, सौहार्द का हो उपवन।।4।।

-संकलन-मनमोहनचन्द बाफणा, कानपुर

विचार-वारिधि

आरम्भ-परिग्रह

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- अर्थनीति मनुष्य को लोभी, कपटी व अशान्त बनाती है। मानव मानव को लड़ाती है, जबकि धर्मनीति प्राणिमात्र में बंधुत्व भाव उत्पन्न करती है। क्रोध की आग में प्रेम का सिंचन करती है।
- दो कारणों से जीव केवली के प्रवचन को भी नहीं सुन सकता। गौतम ने जिज्ञासा भरा प्रश्न किया- "हे भगवन्! कौनसे दो कारण हैं, जो उत्तम धर्म श्रवण में बाधक हैं?" प्रभु ने कहा- "आरम्भ और परिग्रह- इन दोनों में जो जीव उलझा है, वह इन्हें अच्छी तरह समझकर जब तक इन उलझनों की बेड़ी को काटकर बाहर नहीं निकल जाता, तब तक केवली प्ररूपित धर्म को नहीं सुन सकता।"
- परिग्रह, आरम्भ को छोड़कर नहीं रहता। आरम्भ से ही परिग्रह बढ़ता है। परिग्रह अपने दोस्त को बढ़ाने का भी बड़ा ध्यान रखता है। वह जितनी चिन्ता आरम्भ को बढ़ाने की करता है, उसकी शतांश भी संवर-निर्जरा को बढ़ाने की नहीं करता।
- आरम्भ और परिग्रह की मित्रता है, दोनों का आर्थिक गठजोड़ है, दोनों ऐसे भयंकर रोग हैं, जो हमारी चेतना-शक्ति को विकास का मौका नहीं देते।
- धन की भूख आसानी से जाती नहीं, वृद्ध हो जाने पर भी तृष्णा मानव का पिण्ड नहीं छोड़ती और वह दिन-रात उसके पीछे भागता रहता है। संसार का प्राणी आरम्भ-परिग्रह में फंसा रहता है और यही चाहता है कि दिन और बड़ा होने लगे तो वह चार घण्टे और काम कर ले। तृष्णावश सदा उसकी यही मंशा रहती है। यदि वह आरम्भ परिग्रह के परिमाण को हल्का करने के लिए तैयार नहीं होगा तो आत्म-कल्याण कैसे होगा? इसलिए बुद्धिमान आदमी वस्तुस्थिति को सोचे, विचारे और आत्मा को हल्का करने के लिए साधना करे।
- पापाचरण के मुख्य दो कारण हैं। कुछ पाप, परिग्रह के लिए और कुछ आरम्भ के लिए किये जाते हैं। कुछ पापों में परिग्रह प्रेरक बनता है। परिग्रह आरम्भ का वर्द्धक है। अगर परिग्रह अल्प है और उसके प्रति आसक्ति अल्प है तो उसके लिये आरम्भ भी अल्प होगा। इसके विपरीत यदि परिग्रह बढ़ा और अमर्यादित हो गया तो आरम्भ को भी बढ़ा देगा- वह आरम्भ महारम्भ हो जाएगा।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रेरक-विचार

संयम का संकल्प भी दुःखहारक

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

(दूदू में 11 फरवरी 2016 को सम्पन्न चार मुमुक्षु बहनों की भागवती दीक्षा के पूर्व 9 फरवरी 2016 को पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त प्रवचन का अंश)

"पडिक्कमामि एगविहे असंजमे।" मैं प्रतिक्रमण करता हूँ, एक प्रकार के असंयम से। "जे के वि गया मोक्खं" जो-जो भी मोक्ष में गये हैं वे सब असंयम से प्रतिक्रमण करके सामायिक से ही मोक्ष गये हैं। असंयम से निवृत्ति एवं संयम में प्रवृत्ति का लक्ष्य रखना ही मोक्ष मार्ग की ओर चरण बढ़ाना है। संग्रहनय के अनुसार एकमात्र संयम ही मोक्ष का द्वार है। **संयम का स्मरण मात्र भी सुख देने वाला है। अन्तर्मुहूर्त्त में सारे कर्म बंधन काटने वाला यह संयम ही है।** जयपुर के श्रेष्ठी सुजानमलजी के गोडे में तकलीफ थी। सारे उपाय विफल होने पर चिंतन चला। यदि दर्द से मुक्त हो जाऊँ तो संयम पथ पर चरण बढ़ा लूँगा। संयम शब्द के स्मरण मात्र व चिंतन के प्रभाव से उनका रोग शमन हुआ और संयम पथ पर आरूढ़ हो गये। अनाथी मुनि की बात कहूँ, रोग के निदान के लिये तिजोरी के दरवाजे खोल दिये, दुआएँ की गईं, पर रोग घटने का नाम नहीं ले रहा था। आखिर रात्रि में चिंतन किया कि यदि पीड़ा शांत हो जाए तो दीक्षा अंगीकार कर लूँगा। प्रातःकाल होते ही अनुभव किया कि रोग का नामोनिशान नहीं है और वे दीक्षित हो अनाथ से सनाथ बन गये।

साधु का जीवन उन्नत है तो श्रावकों का जीवन ऊँचा उठाने में सहायक बनेगा। पाँच बातें छोड़ने से ही संयम होता है- मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय एवं अशुभयोग। हम जितनी सरलता-सौम्यता से रहेंगे, उतनी ही सौरभ सुरक्षित रह सकती है। ज्यादा आरम्भ- समारम्भ, शादी जैसी साज-सज्जा कर दिखावा करना यह कौनसी भक्ति व धर्म का रूप है? राग नहीं हो, द्वेष नहीं हो, यह ही संयम की सच्ची दिशा है। हमारे कषाय शून्य हों, ऐसा संयम ही मोक्ष का साधन है। धर्म का मूल विनय है, विनय हर व्यवहार में झलकना चाहिये। जिन-जिन का उपकार रहा है, ऋण रहा है, मैं ऋण से मुक्त होऊँ, मेरे ऋण उऋण हों, अंतर में उपकारियों के प्रति ऐसे भाव रहने ही चाहिये। संयम मोक्ष दाता है, संयम में ही मोक्ष है। हम हमारी अहंकार वृत्ति का त्यागकर वीतरागता लाएं। यही संयम का लक्ष्य है।

प्रेरक-संदेश

आचार्यप्रवर श्री हीरा का संदेश :
सद्गुण ग्राही ही मोक्ष राही

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पदारोहण का यह रजतवर्ष चल रहा है। हमारे निवेदन पर उन्होंने साधक जीवन को गुण-ग्रहण एवं दोष-विवर्जन हेतु प्रेरित किया है, जिसका संकलन श्री जगदीशजी जैन, अध्यापक द्वारा किया गया है। **-सम्पादक**

'गुणिषु प्रमोदम्' गुणीजनों को देखकर प्रमोदभाव की अभिव्यक्ति का संचरण हो; पर वर्तमान में बहुतायत से देखने को मिल रहा है कि संत-सती, श्रावक-श्राविकाएँ, राजनेता, नगरजन, ग्रामीणजन, पड़ौसी आदि का जब कभी भी परस्पर समागम होता है तो एक-दूसरे की निंदा-आलोचना करने का प्रसंग बन ही जाता है। यह कार्य व्यक्ति को पाप जैसा कृत्य नहीं लगता, परन्तु आत्मा को अधःपतन की ओर अग्रसर करने से यह खतरनाक श्रेणी वाला अदृश्य पाप है। निंदा, मिथ्यात्व की भूमिका में ही बनती है। अहंकारी व्यक्ति ही दूसरों की निंदा करता है। अहंकारी, दूसरे के गुणों की प्रशंसा को सहन नहीं कर पाता। यदि निंदा करनी ही है तो दूसरों के दोषों की नहीं, अपितु स्वयं में निहित दोषों की करें। निंदा का रस षट्रसों से भी बढ़कर बताया गया है।

भगवान महावीर स्वामी ने दशवैकालिक सूत्र (5.2.41-44) के माध्यम से कथन कर भव्य प्राणियों को सावचेत किया है कि- "दूसरों के गुणों का वर्जन करके, दोषों को देखने वाला मरते समय तक भी संवर का आराधक नहीं होता है। जबकि दोषों का वर्जन करके गुणों को देखने वाला साधक मरते समय तक आराधक है। दोष दृष्टि रखकर दोष देखने वाला, दोषों की चर्चा करने वाला, स्वयं दोषों से ओत-प्रोत होता जाता है। निंदा करना व सुनना दोनों ही पाप के कारण हैं। स्वयं तो निंदा करनी ही नहीं, यदि कोई आकर सुनाए तो बचाव करना ही श्रेयस्कर है। हम जिस परम्परा से जुड़कर साधना कर रहे हैं, वहाँ की तो ये पंक्तियाँ स्पष्ट उद्घोष कर रही हैं- 'निंदा, विकथा नहीं पर घर की, जय बोलो रत्न मुनीश्वर की।' उन्हीं रत्न मुनिवर के नाम से यह परम्परा सुविख्यात है। पूज्य रत्नचन्द्रजी म.सा. पराई चर्चा से कोसों दूर रहे। क्योंकि इसमें रस रखने से समय और शक्ति दोनों का ही ह्रास है। कर्मबंधन के सिवाय कुछ हाथ नहीं आता। पर कुछ लोग अपनी आदत से लाचार होते हैं, मानो किसी की निंदा किये बिना उनका भोजन ही नहीं पचता। जैसे ऊँट कदली वन में जाकर भी, काँटे की ही खोज करता है, वैसे ही ये दोष दृष्टि वाले भाई महापुरुषों, सत्पुरुषों में भी दोष देखने की निंदनीय कुचेष्टा करते हैं। याद रखें- गुरुदेव फरमाया करते- हाथी-घोड़े की

सवारी करके, गधे की सवारी न करें। जिन संसारियों के बीच रह रहे हैं, उनमें गुण दोष दोनों विद्यमान हैं। उन्हें नहीं देखते हुए स्वयं को देखें।

आवश्यकता है- गुणग्राही बनकर अपने जीवन को सद्गुणों की सौरभ से महकाएँ। यह तो द्रष्टा की दृष्टि पर निर्भर करता है कि वह गुण देखता है या दोष। गुरुदेव के शब्दों में कहूँ- "मनुष्य को मल ग्रहण करने वाली मक्खी के समान नहीं, अपितु मधु ग्रहण करने वाली मक्खी के समान बनने का लक्ष्य रखना है। जब देख ही रहे हैं तो दोष देखकर अपने अनमोल मानव जीवन को वृथा बर्बाद क्यों करें? गुण देखकर अपने जीवन को सद्गुणों से आबाद करें। या तो हम देखें नहीं, यदि देखें तो गुण दृष्टि वाले बनकर केवल गुण को ही देखें। मेरी भावना के अन्तर्गत भी सुन्दर उल्लेख है-"गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे।" अधिकांश इसका नित्य पठन किया करते हैं, पर अन्तर में कितने उतर सके हैं, विचारणीय बिन्दु है।

संसार में तो गुण-दोष के मिश्रण वाले प्राणी ही मिलेंगे। पूर्ण गुणी तो मात्र परमात्मा है। अतः हम उनके गुण देखकर अपने जीवन में गुणों का संवर्धन करें। **गुणदर्शन-** अर्थात् सामने वाले के गुण देखकर, **गुणवर्णन-** उनकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हुए, **गुण ग्रहण-** जो तीसरी सीढ़ी है यानी हम स्वयं पूर्वोक्त दो प्रारम्भिक चरणों को आत्मसात् करते हुए सहज ही उन-उन गुणों के स्वामी बन जाते हैं। पूज्यपाद आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. से किसी ने पृच्छा करली कि आपको अन्य परम्परा वाले कैसे लगते हैं? सम्यक् दृष्टि या मिथ्या दृष्टि? उनका उत्तर था-भाई! मुझे मेरा ही पता नहीं, मैं उनके बारे में क्या कहूँ? उन्हीं के गुरु भाई पूज्य आचार्य विनयचन्दजी म.सा. के पास आकर जयपुर में शिवजीरामजी महाराज प्रश्नोत्तर-चर्चा किया करते। क्योंकि वे महापुरुष गुण दृष्टि वाले थे। इसीलिये उनके समीप अन्य गच्छ-परम्परा के संत-संती, फूल पर भँवरे के सदृश आया करते। दोष तो उन्हें सिर्फ स्वयं के दिखाई देते थे, अन्यों के नहीं, इसी कारण गुणग्राही साधक कहलाये। महापुरुष दूसरों के दोष कहने में मूक और दोष सुनने के समय बधिर सम रहते हैं। महापुरुषों में यही खूबी होती है कि वे दूसरों के पर्वत जितने दोषों को भी राई जितना देखते हैं और राई जितने गुण को भी पर्वत के समान दर्शाया करते हैं। किन्तु वर्तमान की तो विडम्बना ही कहें- दूसरों के दोषों को व्यक्ति स्मृति में बराबर जमा करके रखता है और मौका मिलते ही सामने वाले को सुनाने से नहीं चूकता। अगर सुनने वाला साधक गुणग्राही नहीं है तो वह भी उसके दोषों को सुना डालेगा, इससे वातावरण तो विषम होगा ही, साथ ही दोनों दुःखी भी होंगे। अतः दूसरों के दोष देखने व याद रखने की प्रवृत्ति की विस्मृति ही श्रेयस्कर है। भगवान की वाणी तो यही कहती है- "कंखे गुणे जाव सरीरभेए।" अर्थात् जब तक जीवन है, तब तक गुणों की कांक्षा करे, दोषों की कदापि नहीं। सामान्य सद्गृहस्थ को

भी निंदा करना शोभा नहीं देता। अतः जो मोक्षमार्ग के पथिक हैं, उनके लिये तो सर्वथा वर्जनीय होने से अनाचरणीय है। जो अनन्त गुणों के स्वामी बनना चाह रहे हैं, उन्हें तो सामने वाले का एक-एक गुण चुन-चुन कर संगृहीत करने की दृष्टि रखनी ही पड़ेगी। हालाँकि गुण दर्शन का कार्य कठिन है, पर इस कठिन कार्य को किये बिना मुक्ति मिलने वाली नहीं है। यह तो निश्चित समझ कर चलिये। सर्वथा गुण रहित मानव आपको कोई मिलेगा ही नहीं। कोई न कोई गुण तो उसमें अवश्यमेव होगा ही। क्योंकि सर्वथा गुणहीन मानव तो क्या कोई जड़ वस्तु भी अपने गुण धर्म से रहित नहीं होती। एक तिनका व चिमटी भर धूल में भी गुण रहे हुए हैं। शैतान से शैतान आदमी में भी कोई न कोई गुण अवश्य मिल ही जायेगा। आवश्यकता है गुण द्रष्टा सत्पुरुष बनने की। कहा भी है- "साधु ऐसा चाहिए, जैसे सूप सुभाय। सार-सार को गहि लहे, थोथा देय उड़ाय।।" हीरे-जवाहरात के बड़े व्यापारी बनकर फिरने वाले यदि कूड़े के ढ़ेर में से गंदगी इकट्ठी करने जैसा घृणित कार्य करे तो उनको शोभा नहीं देने वाला है। वैसे ही यदि चारित्रात्माएँ दूसरे के दोष देखने जैसी प्रवृत्ति रखें, तो वह शोभा देने वाली नहीं है। वह तो फिर कूड़े में से कचरा संचय करने जैसा ही घिनौना कृत्य है। वासुदेव श्री कृष्ण जैसी दृष्टि सभी की हो, जिन्हें दुर्गन्ध युक्त सड़ी देह वाली कुतिया के भी मोती के समान चमकते हुए स्वच्छ सुन्दर दाँतों की पंक्ति ही दृष्टिगत हुई। हमारी दृष्टि दुर्योधन जैसी न हो, जिन्हें नगरी में एक भी गुणीजन नज़र नहीं आया। दृष्टि हो तो युधिष्ठिर जैसी, जिन्हें एक भी अवगुणी नज़र नहीं आया।

हंस जैसे मोती ही चुगता है, वैसे ही हम भी सद्‌गुणों के ही मोती चुगें। "हंसा के तो मोती चुगे, के लंघन कर जाय।" इसी तरह या तो देखें ही नहीं और यदि देखें तो गुण ही देखें। कवि के शब्दों में- "उत्तम विद्या लीजिये, यदपि नीच पे होय। पड़यो अपावन ठोर पे, कंचन तजे न कोय।।" जैसे- गन्दे स्थान पर पड़े हुए सोने को कोई छोड़ता नहीं है, वैसे ही निकृष्ट से निकृष्ट में से कोई न कोई गुण लेने के भावों की प्रधानता रखनी चाहिये।

साधना का मार्ग दूसरों को सुधारने का नहीं, अपितु स्वयं को सुधारने का मार्ग है। यदि किसी में कोई पाप के कारण से कमी है तो भी उसके पाप से घृणा करनी है न कि पापी से। क्योंकि आज का वह पापी निमित्त मिलने पर पाप को त्यागकर धर्मी भी बन सकता है। अधिकांश बंधु यहाँ चूक जाते हैं। वे उस पापी-दुर्गुणी से ही घृणा करने लग जाते हैं जबकि वह आपके प्रेम का पात्र है। आपके प्रेम-व्यवहार से उसमें परिवर्तन होना संभव है। हमारा कर्त्तव्य है परिष्कार करना, न कि तिरस्कार करना। भगवान ने चण्डकौशिक के जीवन में समता भाव व प्रेम से अद्‌भुत आश्चर्यजनक परिवर्तन कर दिया। प्रेम में दोष दिखते भी नहीं हैं, सिर्फ गुण ही दिखते हैं। यदि दिखते भी हैं तो एक माँ की भाँति उन्हें दूर करने का प्रयत्न करता है।

गुणज्ञ बनें, गुणों के उपासक बनें, इसी संदर्भ में कहा भी है-

गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति, ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
आस्वाद्यतोया प्रभवन्ति नद्यः समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः।।

गुण गुणज्ञों के पास रहने पर ही गुण होता है, वही निर्गुण को पाकर दोष बन जाता है। उदाहरण स्वरूप नदियाँ स्वादिष्ट जल वाली होती हैं। लेकिन वे ही नदियाँ समुद्र में मिल जाने पर अपेय बन जाती हैं।

हम गुणों के पारखी बनें। जैसे हीरे की पहचान करने में जौहरी कुशल होता है, वैसे ही हम गुणों को पहचान कर ग्रहण करने में दक्ष बनें। यदि एक-एक गुण का भी संचय करेंगे तो एक दिन अनन्त गुणों से सम्पन्न हो जायेंगे। गुण तो आत्मा के भीतर ही विद्यमान हैं, दूसरों के सद्गुण निहारने से वे विकसित होते हैं अतः दूसरों के दोष देखने की भावना को गौण कर सच्चे आराधक-साधक बनें, साथ ही सद्गुणों को निहारकर भव पार होने का मार्ग प्रशस्त करें, यही मंगल मनीषा है।

-संकलन : श्री जगदीश जैन

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का विवरण

(फार्म 2 नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	:	जयपुर
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक का नाम	:	डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर
4. प्रकाशक का नाम	:	विनय चन्द डागा
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार जयपुर-302003 (राज.)
5. सम्पादक का नाम	:	डॉ. धर्मचन्द जैन
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते: जिनका पत्र पर स्वामित्व है		सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार जयपुर-302003 (राज.)

मैं, विनय चन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

मार्च, 2016

हस्ताक्षर-विनय चन्द डागा
प्रकाशक

प्रवचन

तोड़ें देह के नेह को

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा महावीर भवन, अलवर में 01 नवम्बर, 2015 को फरमाए गए इस प्रवचनांश का संकलन-सम्पादन श्री ओमप्रकाशजी गुप्ता, राजस्थान टाइम्स, अलवर द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

जो देह हमें और आपको मानव के रूप में प्राप्त हुई है, उसे सहज मत समझना। संसार के सारे धर्म और पंथ इस देह का मिलना दुर्लभ बताते आए हैं। क्यों बताते हैं, इसका कभी कारण जानने व समझने का प्रयास किया? चूँकि मुक्तिधाम का पथ सिर्फ मानव देह से ही संभव है। अन्य कोई विकल्प नहीं। स्वर्ग और देवलोक से भी नहीं, तभी तो खुद देवता मानव तन पाने के लिए लालायित रहते हैं। जब अनन्त भवों में जगह-जगह ठोकरें खाने व तरह-तरह की यातना सहन करने के उपरांत मुक्तिपुरी जाने का यह अनमोल साधन प्राप्त हो गया, हम उसका कैसा उपयोग कर रहे हैं, कभी परीक्षण किया? सही परीक्षण करने पर ही तो यह ज्ञात हो पाएगा कि हम इस देह का उपयोग अधिक कर रहे हैं या दुरुपयोग ज्यादा। विडम्बना यही तो है कि हम देह के महत्त्व को तो भूलते जा रहे हैं और इससे ममत्व में इतनी बढ़ोतरी कर रहे हैं कि इसकी सजावट व सार-सम्भाल में हर दिन गुजर रहा है। भगवान की वाणी इसीलिए संसार के भ्रमित लोगों को चेताती आ रही है कि इस देह के नेह को तोड़कर देवत्व को पाने का जो सुअवसर प्राप्त है, उसे मत खो देना।

देह से नेह कोई काम का नहीं है क्योंकि इससे नित्य नए-नए अशुभ व पाप कर्म का बंध हो रहा है। इसके विपरीत यदि नेह को छोड़कर इस देह के भीतर रही हुई शाश्वत आत्मा से नाता जोड़कर प्रभु वाणी के द्वारा उस तरफ जितने-जितने सम्यक् कदम आगे बढ़ाए जायेंगे, वे देवत्व को प्राप्त कराने में उतने ही सहायक बन जाएंगे। देवत्व में लीन होने वाली आत्मा ही मुक्ति का पथ वरण कर पाती है। हम इस बात की चिन्ता नहीं करें और न कभी ऐसा सोचें कि मोक्ष के दरवाजे पंचमकाल में बंद हैं, वरन् हर पल यह खयाल स्मृति में बना रहे कि नरक के द्वार खुले हुए हैं। जब नरक के द्वार खुले रहने का आभास रहेगा, तभी नारकीय से बचा जा सकेगा। अफसोस का पहलू यह है कि अज्ञान के दुष्प्रभाव से आदमी ने खुले हुए नरक के द्वारों को देखना ही बंद कर दिया। तभी ऐसे-ऐसे जघन्य कृत्य व गलत कार्य किए जा रहे हैं जो नरक के द्वार पहुँचाने में सहायक हो रहे हैं।

प्रभु के पावन वचनों को सुनने के बाद भी जब जीव नहीं संभलता और पाप में ही

डूबा रहता है, तब दुर्गति अवस्था से उस नादान को कोई नहीं बचा सकता। अतः हम संभलें और सत्य को सत्य मानते हुए देह से नेह को मिटाकर उसमें विराजित उस आत्म देव के दर्शन करने की साधना में जुटें, जिससे मोक्ष का मार्ग सहज हो जाता है। ध्यान रहे- साधक इस देह से क्या नहीं कर सकता। वह सब कुछ पा सकता है, क्योंकि इसमें अनन्त ऊर्जाशक्ति व भरपूर क्षमता रही हुई है। मनुष्य जब पाप और मिथ्यात्व से दूर होकर पुण्य कर्म और सम्यक्त्व की राह पर आगे बढ़ता है, तब कभी न कभी मोक्ष के दरवाजे तक पहुँच सकता है। इस चरमशरीरी देह का मकसद व ध्येय सिर्फ देवत्व में लीन होने का होना चाहिए, तभी इस देह को पाना सार्थक हो पाएगा।

देह के नेह से छुड़ाने वाला संवेग है। जब संवेग की साधना में साधक आगे बढ़ता है, तब देह से नेह का टूटना कतई मुश्किल नहीं वरन् वह बहुत सरल हो जाता है। संवेग से ही भली प्रकार पता लगता है कि यह देह नाशवान है। यह गन्दगी की ऐसी थैली है, जिसमें भयंकर बदबू व सड़ान्ध भरी हुई है, लेकिन इस देह की कीमत तब बढ़ सकती है, जब वह संवेग की साधना से परिपूर्ण हो सके। संवेग की शुद्ध साधना से जीव-अजीव, जड़-चेतन, सत्य-असत्य, पुण्य-पाप सभी का सम्पूर्ण बोध हो सकता है। ऊपर से नीचे तक मल-मूत्र-हड्डी-मांस-खून से भरी इस काया के प्रति फिर ममत्व नहीं रह पाएगा और आत्मा में लीन होने के भाव जागृत हो सकेंगे। जब तक देह के प्रति आसक्ति बनी हुई रहती है, तब तक पुण्य कर्म नष्ट होते रहते हैं। अपने जीवन का लक्ष्य क्या है, जब तक इस दिशा में सोचा व समझा नहीं जाएगा, तब तक देह से नेह की स्थिति कमजोर पड़ने वाली नहीं है। शरीर की ममता ही हर पल कर्मों का बंध करती है और छोटी सी यह जिन्दगी जब हाथों से व्यर्थ छूट जाती है, तब रोने और आंसू बहाने से कुछ हाथ नहीं आता। कभी सुअर को गौर से देखना, यदि कहीं हलुवा एवं विष्ठा पड़े हों, तो वह हलवे को छोड़कर वह विष्ठा (मल) को खाने पहले दौड़ेगा। कभी सोचना, उस जीव के ऐसे कौन से कर्म हैं जो उसे मनुष्य की विष्ठा खानी पड़ती है। कोई भी जीव मल-मूत्र-गटर-नाले और पाखाने के कुण्डे में जन्म लेना नहीं चाहता, मगर असंख्य जीव वहाँ हर क्षण जन्मते हैं और मरते रहते हैं। जिन्होंने अपने ज्ञान व विवेक का अनादर व दुरुपयोग किया और देह की गुलामी व इन्द्रियों के सुखों को ही सुख मानकर उन्हीं में डूबे रहे, वे कर्म सिद्धान्त के अनुसार दुर्गति को प्राप्त करते हैं। हम यदि धर्म-ध्यान में आगे बढ़ पाएं और देह की गुलामी से परे हटकर सम्यक्-ज्ञान में जुट जाएं, तब नारकीय स्थिति टल सकती है। संवेग की साधना से तमाम बन्धनों से मुक्त हुआ जा सकता है। ध्यान रहे- जिन-दर्शन अवतारवादी नहीं, उत्तारवादी है। अवतार का अर्थ है- ऊपर उठे, बाद में नीचे गिरना जबकि उत्तार का अर्थ है- नीचे से ऊपर उठना। जो ऊपर उठ

गया, वह फिर नीचे नहीं आता। हर जीव में परमात्मा बनने की पूर्ण क्षमता है, इसलिए आप सभी उत्तारवादी हो सकते हैं। थोड़ा जागें तो सही, भीतर में तीर की जैसी चुभन तो अनुभव हो, तभी देह के नेह को छोड़कर देवत्व में प्रवेश किया जा सकता है।

अहंकार

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी

संसार में नित्य उपस्थित होने वाले घटनाक्रम या प्रसंग वैराग्य के भाव बढ़ा सकते हैं, मगर आदमी संसार में ही इस कदर उलझा हुआ है कि बड़े-बड़े हादसे को देखने व सुनने के बाद भी संसार की असारता उसे नज़र नहीं आती। शरीर-सम्पत्ति-सत्ता के चक्कर में सारी जिन्दगी वह कोल्हू के बैल की तरह घूमता रहता है। जब आँखों से पट्टी हटती है, तब वह अपने को वहीं खड़ा पाता है जहाँ अज्ञानता में डूबता व फंसता गया था। यदि संसार से मुक्त होना है तो उसे सम्यक् ज्ञान के द्वारा खुली आँखों से देखो। बाहर से फिर वह सुहावना और भीतर से भयावना नज़र आएगा। हकीकत में यही सच्चाई है और इस सत्य को जानने-समझने-देखने का यह दुर्लभ मौका प्राप्त हुआ है। व्यक्ति बाहर के प्रपंचों को अनेक तरह से जानता है, किन्तु भीतर की सच्चाई को नहीं जानता। भीतर की सच्चाई को जाने बिना सुख का मार्ग कभी संभव नहीं हो पाता। सुखी बनने का रास्ता बाहर से नहीं वरन् भीतर से है।(01 नवम्बर, 2015 को अलवर चातुर्मास में प्रदत्त प्रवचन का अंश)

तप का तेज

डॉ. सुषमा सिंघवी

(तर्जः- चिरमी बाबोसा री लाडली.....।)

तप कर ले बारह प्रकार, तन मन रो मैल बुहार।
अन्तः और बाह्य सुधार, जिनवाणी रौ सार।।
अनशन तन-ममता मारै, ऊणोदरी सूं संयम जागै।
विगहां रौ त्याग करार, जिनवाणी रौ सार।।
जो मिले सो जीम लै, रस-राग नै जीत लै।
कायिक अनुशासन धार, जिनवाणी रौ सार।।
प्रायश्चित्त सूं कर्म कटै, विनय वैयावच्च मल हरै।
स्वाध्याय-कायोत्सर्ग-ध्यान धार, जिनवाणी रौ सार।।
अन्तर्तप सूं बन्ध कटै, मन सधै अवलम्ब घटै।
निज आत्मा नै संभार, जिनवाणी रौ सार।।

-फ्लेट नं. 2 डी, जैन कुंज, 1, गोपाल बाड़ी, जयपुर-302001 (राज.)

गीत

ज़िन्दगी को खुशनुमा बनाना है गर

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

(तर्जः- कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं......।)

ज़िन्दगी को खुशनुमा बनाना है गर, घूंट कड़वे भी पीना सीख लीजिये,
प्रेम प्यार के रिश्ते निभाना है गर, नफरतों को दिलों से हटा दीजिये।
ज़िन्दगी को खुशनुमा बनाना है गर.....।।टेर।।

चार दिन का है जीवन चले जाएंगे, न जाने फिर कब हम मिल पाएंगे,
फिर क्यों बोझिल मन से हम जीते हैं यहाँ, ज़िन्दगी के शबब को न समझ पाएंगे।
आओ मिल कर चलें, भाईचारा बढ़े, ऐसी आदत अपनी बना लीजिये।
ज़िन्दगी को खुशनुमा बनाना है गर.....।।1।।

ढेर दौलत का है, सारे असबाब हैं, फिर भी होठों पे मुस्कान दिखती नहीं,
सारे साधन जुटाए हैं सुख पाने को, फिर भी खुशियाँ द्वार पे आती नहीं।
माँ-बाप को ठुकराना अच्छा नहीं, इनकी ममता की कीमत समझ लीजिये।
ज़िन्दगी को खुशनुमा बनाना है गर.....।।2।।

माँ-बाप के दिल की तपन जानिये, बेनूर है जीवन तुम सच मानिए,
कोई हंसता नहीं, कोई मिलता नहीं, इनके मन का चमन कभी खिलता नहीं।
झूठे अरमां लिये सिर्फ जीते हैं ये, इनके सपनों को साकार कर दीजिये।
ज़िन्दगी को खुशनुमा बनाना है गर.....।।3।।

इनके दिल से दुआएँ निकलती हैं जो, ज़िन्दगी को यह रोशन बना देती हैं,
मत भूलो कभी, मत रूठो कभी, उनकी नज़रें यह किस्मत जगा देती हैं।
बड़ा उपकार है हम पे माँ-बाप का, इनकी सेवा में जीवन लगा दीजिये।
ज़िन्दगी को खुशनुमा बनाना है गर.....।।4।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

स्वाध्याय-संदेश

स्वाध्याय : क्या, क्यों और कैसे?

डॉ. के.एल. पोखरना

भारतीय परम्परा में स्वाध्याय की महिमा सर्वत्र स्वीकृत है। जैन शास्त्रों में स्वाध्याय को आभ्यन्तर तप कहा गया है। "स्वाध्याय: परमं तप:" द्वारा इसे परम तप भी कहा गया है। इसका कारण है कि इन्द्रियों और मन को भली भांति संयम में किये बिना स्वाध्याय नहीं हो सकता। सत्संग और स्वाध्याय ही जीवन को ऊंचा उठाते हैं, अत: हमें गहराई से समझना होगा कि स्वाध्याय क्या है?

स्वाध्याय क्या है– वाचस्पत्यम् (संस्कृत कोश) में स्वाध्याय शब्द की विवेचना दो प्रकार से की गई है –

1. स्व + अधि + ईण्, जिसका तात्पर्य है स्व का अध्ययन करना। दूसरे शब्दों में स्वाध्याय आत्मचिंतन है, आत्मानुभूति है, अपने भीतर झांककर अपने आपको देखना है। यह स्वयं अपना अध्ययन है। अपने विचारों, वासनाओं व अनुभूतियों को जानने व समझने का प्रयत्न स्वाध्याय है। वस्तुत: यह अपनी आत्मा का अध्ययन ही है, आत्मा के दर्पण में अपने को देखना है।
2. सु + आ + अधि + ईङ् के रूप में भी की गई है। इस दृष्टि से स्वाध्याय की परिभाषा होती है- शोभनोऽध्याय: स्वाध्याय: अर्थात् सत्साहित्य का अध्ययन करना ही स्वाध्याय है। स्वाध्याय की इन दोनों परिभाषाओं के आधार पर एक बात जो निकलकर प्रकट होती है, वह यह है कि सभी प्रकार का पठन-पाठन स्वाध्याय नहीं है, किसी पुस्तक या शास्त्र या ग्रन्थ को केवल पढ़ लेना ही स्वाध्याय नहीं है। आत्म-विशुद्धि के लिये किया गया, अपनी स्वकीय वृत्तियों, भावनाओं व वासनाओं अथवा विचारों का अध्ययन या निरीक्षण तथा ऐसे सद्ग्रन्थों का पठन-पाठन जो हमारी चैतसिक विकृतियों को समझने और उन्हें दूर करने में सहायक हो, स्वाध्याय के अन्तर्गत आता है।

स्वयं के अन्तर्मन यानी स्वयं का स्वयं द्वारा, स्वयं के लिए अध्ययन ही स्वाध्याय कहलाता है। आत्मचिन्तन, आत्म-समीक्षा भी स्वाध्याय का ही रूप है। सद्शास्त्रों का मर्यादापूर्वक अध्ययन करना, विधि सहित श्रेष्ठ पुस्तकों का अध्ययन करना ही स्वाध्याय है। कहने का आशय है कि आत्मकल्याणी पठन-पाठन रूप श्रेष्ठ अध्ययन का नाम स्वाध्याय है। दूसरे अर्थो में जिसके पठन-पाठन से आत्मा की शुद्धि होती है, वही स्वाध्याय है। **स्वेन**

स्वस्य अध्ययनं स्वाध्याय: अर्थात् स्वयं के द्वारा स्वयं का अध्ययन ही स्वाध्याय है।

संक्षेप में-

1. स्व का अध्ययन या चिन्तन स्वाध्याय है।
2. सद्शास्त्रों का मर्यादापूर्वक अध्ययन करना, पढ़ना, अच्छे ज्ञान का मर्यादापूर्वक ग्रहण करना स्वाध्याय कहलाता है। अच्छा ज्ञान इसलिये कहा है कि ज्ञान के दो भेद हैं, एक तो मिथ्याश्रुत अर्थात् मिथ्या ज्ञान और दूसरा सम्यक्त्व अर्थात् सम्यग्ज्ञान। सम्यग्ज्ञान में केवल जीवन बनाने का यथार्थ शिक्षण होता है।
3. स्व को समझने व स्वयं के अनुशासन में रहने से आनन्दानुभूति होती है।
4. ज्ञान आत्मा का स्वभाव है, जब तक आत्मा अपने स्वभाव को उजागर नहीं करेगी, तब तक अपना बोध कैसे कर सकेगी, स्वाध्याय के द्वारा आत्म-बोध प्राप्त किया जाता है।
5. स्वाध्याय वह योग है, जिसमें ज्ञानयोग, कर्मयोग एवं भक्तियोग का समन्वय है एवं जिससे परमात्मा पद की प्राप्ति होती है।

स्वाध्याय क्यों?- भगवान महावीर ने गौतम स्वामी की जिज्ञासा को शांत करते हुए स्वाध्याय के विषय में फरमाया कि स्वाध्याय से श्रुतज्ञान का लाभ प्राप्त होता है, मन की चंचलता समाप्त होती है और आत्मा आत्मभाव में स्थिर होती है। जैन साधना का लक्ष्य समभाव की उपलब्धि है, और समभाव की उपलब्धि हेतु स्वाध्याय एवं सत् साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। स्वाध्याय मनुष्य का ऐसा मित्र है जो अनुकूल एवं प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में इसका साथ निभाता है और उसका मार्गदर्शन कर उसके मानसिक तनावों को समाप्त करता है। ऐसे साहित्य के स्वाध्याय से व्यक्ति को हमेशा आत्म सन्तोष और आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति होती है, मानसिक तनावों से मुक्ति मिलती है। वह मानसिक शान्ति का अमोघ उपाय है।

जैन परम्परा में जिसे मुक्ति कहा गया है वह वस्तुत: राग-द्वेष से मुक्ति है, मानसिक तनावों से मुक्ति है और ऐसी मुक्ति के लिए पूर्वकर्म-संस्कारों का निर्जरण या क्षय आवश्यक माना गया है।

उत्तराध्ययन सूत्र में स्वाध्याय को आंतरिक तप का एक प्रकार बताते हुए उसके पांचों अंगों की विस्तार से चर्चा की गई है। बृहद्कल्पभाष्य में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि **न वि अत्थि न वि होही, सज्झायसमं तवो कम्मं** अर्थात् स्वाध्याय के समान दूसरा तप न अतीत में कोई था न वर्तमान में कोई है और न भविष्य में कोई होगा। इस प्रकार जैन परम्परा में स्वाध्याय को आध्यात्मिक साधना के क्षेत्र में विशेष महत्त्व दिया गया है। उत्तराध्ययन सूत्र में

कहा गया है कि स्वाध्याय से ज्ञान प्रकाशित होता है, जिससे समस्त दुःखों का क्षय हो जाता है। वास्तव में स्वाध्याय ज्ञान-प्राप्ति का महत्त्वपूर्ण उपाय है।

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है कि **सज्झाए वा निउत्तेणं सव्वदुक्खविमोक्खणे** अर्थात् स्वाध्याय करते रहने से समस्त दुःखों से मुक्ति मिलती है। स्वाध्याय के विषय में कहा गया है कि जैसे अंधे व्यक्ति के लिये करोड़ों दीपकों का प्रकाश भी व्यर्थ है, किन्तु नेत्र ज्योति वाले व्यक्ति के लिए एक दीपक का प्रकाश भी सार्थक होता है। इसी प्रकार जिसके अन्तर चक्षु खुल गये हों, जिसकी अन्तर यात्रा प्रारम्भ हो गई हो, ऐसे आध्यात्मिक साधक के लिये स्वल्प अध्ययन भी लाभप्रद होता है, अन्यथा आत्म-विस्मृत व्यक्ति के लिये करोड़ो पदों का ज्ञान भी निरर्थक होता है। स्वाध्याय में अंतर चक्षु का खुलना, आत्म द्रष्टा बनना, स्वयं में झांकना पहली शर्त है। शास्त्र का पढ़ना या अध्ययन करना उसका दूसरा चरण है।

उत्तराध्ययन सूत्र में यह प्रश्न उपस्थित किया गया कि स्वाध्याय से जीव को क्या लाभ है? इसके उत्तर में कहा गया है कि स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है। दूसरे शब्दों में आत्मा मिथ्या ज्ञान को दूर कर सम्यक् ज्ञान का अर्जन करता है।

स्थानांग-सूत्र में शास्त्राध्ययन के पाँच लाभ बताये गये हैं- (1) वाचना से श्रुत का संग्रह होता है। (2) शास्त्राध्ययन की प्रवृत्ति से शिष्य का हित होता है, क्योंकि वह उसकी ज्ञान-प्राप्ति का महत्त्वपूर्ण साधन है। (3) शास्त्राध्ययन की प्रवृत्ति बनी रहने से ज्ञानावरणीय कर्मों का क्षय होता है। (4) अध्ययन की प्रवृत्ति के जीवित रहने से शास्त्र विस्मृत होने की संभावना नहीं रहती। (5) जब श्रुत स्थिर रहता है तो उसकी अविछिन्न परम्परा चलती रहती है। स्थानांग सूत्र में बताया गया है कि पाँच कारणों से शास्त्र का शिक्षण लेना चाहिए, यथा- (1) ज्ञान वृद्धि, (2) दर्शन वृद्धि के लिये, (3) चरित्र शुद्धि, (4) विग्रह मिटाने के लिये, (5) पदार्थों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिये।

स्वाध्याय से श्रुत संग्रह होता है, ज्ञान के प्रतिबंधक कर्मों की निर्जरा होती है, बुद्धि निर्मल होती है, संशय की निवृत्ति होती है, तप-त्याग की वृद्धि होती है एवं अतिचारों की शुद्धि होती है। सद्गुणों के संरक्षण, संवर्धन और संशोधन के लिये स्वाध्याय आवश्यक है। स्वाध्याय की परम्परा से संदेह का निवारण होता है। ज्ञान में विशेष से विशेषतर एवं विशेषतम उपलब्धि का अनुभव होता है।

सत् साहित्य का अध्ययन व्यक्ति के जीवन की दृष्टि को ही बदल देता है। ऐसे अनेक लोग हैं जिनकी सत् साहित्य के अध्ययन से जीवन की दिशा ही बदल गई। स्वाध्याय एक ऐसा माध्यम है जो एकांत के क्षणों में हमें अकेलापन महसूस नहीं होने देता और एक सच्चे मित्र की भांति सदैव साथ रहता है और मार्गदर्शन करता है।

स्वाध्याय से कर्म क्षीण होते हैं, ज्ञान देने की क्षमता जागृत होती है। स्वाध्याय से सूत्र, अर्थ, सूत्रार्थ से सम्बन्धित मिथ्या धारणाओं का अंत होता है, स्मरण शक्ति तीव्र होती है।

स्वाध्याय से हमारा ज्ञान और दर्शन निर्मल होता है और दृढ़ भी बनता है। जब हमारा ज्ञान एवं दर्शन शुद्ध होगा, निर्मल होगा तो चारित्र में भी आगे बढ़ना होता रहेगा और अन्ततोगत्वा हम कर्मों को काट कर मुक्ति के अधिकारी बन जायेंगे।

दशवैकालिक सूत्र के नवम अध्ययन के चतुर्थ उद्देशक में स्वाध्याय से होने वाले चार प्रकार के लाभों पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है- (1) शास्त्र पढ़ने से श्रुत ज्ञान का अपूर्व लाभ होगा, इसलिए मुझे शास्त्र पढ़ना चाहिये। (2) चंचल चित्त एकाग्र होगा इसलिए पढ़ना चाहिए। (3) सूत्र का अध्ययन करते समय अपने मन को स्थिर कर सकूँगा, इसलिए स्वाध्याय करना चाहिये। (4) स्वयं ज्ञानभाव में स्थिर होकर दूसरे के संदिग्ध मन को धर्म में स्थिर कर सकूँगा इसलिए भी स्वाध्याय करना चाहिए।

जीवन-निर्माण एवं आत्मोद्धार के लिए तथा समाज-निर्माण और राष्ट्र निर्माण के लिये स्वाध्याय परमावश्यक है। स्वाध्याय करने से एक बड़ा फल यह होगा कि उससे बुद्धि निर्मल हो जायेगी। घर-घर में जो लड़ाई-झगड़े, कलह-क्लेश और वैर-विरोध चल रहे हैं, उनकी दवा स्वाध्याय से ही मिलने वाली है। बुद्धि निर्मल होने से पाप नष्ट होंगे, पुण्य का बंध होगा, दया-कोमलता का उद्गम होगा एवं निर्दोष दान देने की भावना जगेगी।

स्वाध्याय केवल दूसरों के कल्याण या दूसरों के निर्माण या दूसरों को सुख प्रदान करने हेतु नहीं है, अपितु पहले वह स्व-अनुशासन, स्व-कल्याण और स्व-निर्माण की धारा लाकर फिर पर-हित में, समाज हित में, विश्व हित में साधन बनने वाली एक आंतरिक प्रबल शक्ति है। स्वाध्याय 'स्व' में निहित अमोघ शक्ति है।

मनुस्मृति में स्वाध्याय की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है-"**यः स्वाध्यायमधीतेऽब्दं विधिना नियतः शुचि, तस्य नित्यं क्षरत्येव पयोदधि घृतं मधु**"। अर्थात् जो मनुष्य शुद्ध होकर सर्वदा विधि के साथ एक वर्ष तक स्वाध्याय करे, उसके लिये वह स्वाध्याय सर्वदा दूध, दही, घी और मधु बरसाता है। तात्पर्य यह है कि स्वाध्याय से मनुष्य सुखी और सम्पत्तिशाली होता है।

पातंजल योग सूत्र (2-4) में कहा गया है "**स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोगः**" अर्थात् स्वाध्याय से इष्ट देवता (आत्मा) का बोध होकर साधक को अभीष्ट की सिद्धि प्राप्त होती है। अभीष्ट की सिद्धि से तात्पर्य है कि अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन और चारित्र की सिद्धि।

संक्षेप में स्वाध्याय क्यों आवश्यक है, स्वाध्याय की महत्ता क्या है, उसको निम्न रूप से समझें व जानें।

1. स्वाध्याय से कर्म निर्जरा होती है, आत्म-विकास होता है।
2. सब दु:खों से मुक्त होने का साधन स्वाध्याय है।
3. शास्त्र, धर्मग्रन्थ, सद्साहित्य पढ़ने से ज्ञानियों, महात्माओं, विद्वानों के विचारों को जानने समझने का अवसर प्राप्त होता है, यह एक प्रकार से उनकी संगति करने के समान ही है।
4. शास्त्र, धर्म ग्रन्थ, महापुरुषों के जीवन चरित्र और आत्मज्ञान संबंधी साहित्य पढ़ने से निश्चय ही विचारों में तदनुकूल परिवर्तन होकर जीवन सुधरता है और मनुष्य आत्मोन्नति के मार्ग पर बढ़ने लगता है।
5. स्वाध्याय द्वारा अध्यात्म भाव जागृत होते हैं। स्वाध्याय द्वारा आत्मा को परमात्मा बनाने का संदेश प्राप्त होता है।
6. स्वाध्याय स्वयं के कल्याण के लिये, स्वयं को जानने, समझने के लिये है।
7. सिद्धि का सफर तय करने के लिये स्वाध्याय स्पंदन है। इसमें बैठने वाला व्यक्ति कर्म शत्रुओं को आसानी से जीत सकता है।
8. स्वाध्याय एक चिन्मय चिराग है, जो भव कानन में भटकने वाले व्यक्ति की राह को रोशन करता है।
9. स्वाध्याय वह चाबी है जो सिद्धत्व के बंद दरवाजे को खोलती है।
10. स्वाध्याय एक अनुपम सारथी है, जो सूर्यरथ के सारथी 'अरुण' की भांति मिथ्यात्व रूपी अज्ञतिमिर का हरण करता है।
11. स्वाध्याय करने से ज्ञानावरणीय कर्म क्षीण होता है। इसके अतिरिक्त सत्संस्कारों की प्राप्ति, ज्ञान व विनय की आराधना, मोक्ष की उपलब्धि, कुशल कर्मों का अर्जन, कांक्षा मोहनीय कर्म का विच्छेद ये सारे लाभ प्राप्त होते हैं।

स्वाध्याय के लक्ष्य- पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. ने स्वाध्याय के अन्तरंग और बहिरंग दो प्रकार के लक्ष्य बताये हैं।

1. अन्तरंग लक्ष्य- स्वाध्याय का अन्तरंग लक्ष्य है जीवन को दूषित करने वाले मिथ्या तत्त्वों से, आत्मा को कलुषित करने वाले सभी प्रकार के कार्यों एवं विचारों से अपने आपको दूर रखना तथा अन्तर्मन को शुद्ध चिन्तन, शुभ एवं परम कल्याणकारी कार्यों में निरत रखना। इस आन्तरिक लक्ष्य में प्रति पल सजग रहने की आवश्यकता है।

2. बहिरंग लक्ष्य- स्वाध्याय का बहिरंग लक्ष्य है- समाज-निर्माण, समाज-सेवा और शासन सेवा का कार्य करना।

मोटे रूप में स्वाध्याय का तीसरा लक्ष्य बताया गया है कि समाज के हजारों बन्धु

पर्वाधिराज पर्युषण के दिनों में धर्माराधन से वंचित रहते हैं, उनके वहां पर्वाराधन के दिनों में स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजकर उन्हें धर्माराधन करवाना। स्वाध्याय संघ का गठन कर पर्युषण पर्व की अवधि में स्वाध्यायी भेजने का सर्वप्रथम शुभारंभ पूज्य प्रवर्तक पन्नालाल जी म.सा. ने गुलाबपुरा से किया था, इस कार्यक्रम को प्रस्फुटित व पल्लवित पूज्य आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. ने किया। स्वाध्याय संघ द्वारा प्रतिवर्ष अनेक स्थानों पर पर्वाराधन के दिनों में धर्माराधन करवाने के लिये प्रशिक्षित व शिक्षित स्वाध्यायी भेजे जाते हैं। यह स्वाध्याय का तीसरा लक्ष्य है।

स्वाध्याय कैसे?– स्वाध्याय करने के लिये हमें कुछ नियमों का पालना करना चाहिये।

स्वाध्याय के नियम– स्वाध्याय करने के कुछ नियम हैं। अगर इन नियमों को अपनाकर स्वाध्याय किया जाये तो वह निश्चित ही परम सिद्धि की प्राप्ति में सहायक है। स्वाध्याय करने के लिये निम्नलिखित नियमों को अपनाना चाहिये –

1. **निरन्तरता–** स्वाध्याय प्रतिदिन नियमानुसार किया जाना चाहिये। स्वाध्याय में किसी प्रकार का विक्षेप नहीं होना चाहिये। निरन्तरता से हमारी स्मरण शक्ति प्रखर बनती है।
2. **एकाग्रता–** हमारा मन संसार के चक्रव्यूह में इधर उधर भटकता रहता है, जब तक हमारा मन चंचल बना रहेगा तब तक स्वाध्याय के परम आनन्द की अनुभूति नहीं हो सकती। अत: आवश्यक है कि स्वाध्याय एकाग्रता पूर्वक किया जाए।
3. **सद्साहित्य का चयन–** वर्तमान में बाजार में ऐसी पुस्तकें बहुतायत से उपलब्ध हो रही हैं जो मानसिक विकारों को जन्म देने वाली हैं, अत: हमें स्वविवेक से सद्साहित्य का चुनाव करना चाहिये, जिससे स्वाध्याय उचित ढंग से किया जा सके।
4. **स्वाध्याय का स्थान–** स्वाध्याय के लिये स्थान कोलाहल रहित, स्वच्छ एवं एकान्त होना चाहिये।
5. **व्रतग्रहण पूर्वक शास्त्र का पठन-पाठन–** यदि प्रारम्भ में किसी शास्त्र का पठन-पाठन कर रहे हैं तो कुछ व्रत ग्रहण करके पठन-पाठन करना चाहिये। यदि पहले-पहल आचारांग, सूत्रकृतांग अथवा अन्य किसी आगम का पठन करना हो तो किसी मुनिराज अथवा शास्त्रों के, आगमों के विशेषज्ञ के चरणों में बैठकर व्रत ग्रहण पूर्वक पढ़ना प्रारम्भ करना चाहिये। यदि शास्त्र से भिन्न किसी धार्मिक पुस्तक का अध्ययन प्रारम्भ करते हैं तो इतना आदर होना चाहिये कि अरिहन्त भगवान और गुरु देव को नमस्कार कर, विशुद्ध स्थान में बैठकर पढ़ना प्रारम्भ करें। यदि शरीर में बैठे रहने की शक्ति हो तो स्थिर आसन में बैठकर ही धार्मिक पुस्तकों को पढ़ना चाहिये। जिस प्रकार उपन्यासों, कथा-कहानियों की पुस्तकों को सोते, उठते-बैठते, विविध-आसनों से लेटे अथवा

बैठे रहकर पढ़ते हैं, उस प्रकार कभी नहीं पढ़ना चाहिए। कुछ व्यक्ति मर्यादा की इन बातों से घबराकर अथवा वीतराग-वाणी का महत्त्व न समझ पाने के कारण शास्त्रों का पठन ही नहीं करते, जो उचित नहीं हैं। जैसाकि पूर्व में बताया गया है किसी पुस्तक या शास्त्र या पोथी को मात्र पढ़ लेना ही स्वाध्याय नहीं है, किन्तु निम्न पांच अंगों या पांच प्रकारों से परिपूर्ण होने पर ही सच्चा स्वाध्याय होता है।

स्वाध्याय के पांच प्रकार– भगवान महावीर ने स्वाध्याय के पाँच प्रकार बतलाये हैं:-1. वाचना, 2. पृच्छना (प्रतिपृच्छा), 3. परिवर्तना (परावर्तना), 4. अनुप्रेक्षा, 5. धर्मकथा।

1. **वाचना–** सर्वप्रथम वाचना से ही स्वाध्याय प्रारम्भ होता है। गुरुदेव से स्वयं शास्त्र का पाठ लेना, सुनना अथवा पढ़ना वाचना है। अर्थात् गुरु के पास या स्वयं पढ़ना, सद्गुरु की नेश्राय में अध्ययन करना।
2. **पृच्छना या प्रतिपृच्छा–** वाचना के पश्चात् शंकास्पद स्थल या भूले हुए पाठ को फिर पूछना प्रति पृच्छा या पृच्छना रूप स्वाध्याय है। अपनी शंका गुरु या अनुभवी से पूछना। सूत्र और उसके अर्थ पर चिंतन-मनन। अज्ञात विषय की जानकारी या ज्ञात विषय की विशेष जानकारी के लिये प्रश्न पूछना।
3. **परिवर्तना–** पढ़े हुए पाठ का पुनरावर्तन करना परिवर्तना स्वाध्याय है। परिचित विषय को स्थिर रखने के लिये बार-बार दोहराना। अर्थात् पढ़े हुये विषय को पुनः सोचना, फिर सोचना, फेरना, दोहराना।
4. **अनुप्रेक्षा–** इसमें श्रुत या पठित तत्त्व का चिन्तन करना - गहराई से विचार करना अनुप्रेक्षा है। जिस सूत्र की वाचना ग्रहण की है, उस सूत्र पर तात्त्विक दृष्टि से चिन्तन करना अर्थात् पढ़े हुए विषय पर मनन करना।
5. **धर्म कथा–** श्रुत या पठित तत्त्व के चिन्तन के पश्चात् किसी दूसरे को उपदेश देना या समझाना धर्मकथा रूप स्वाध्याय है। स्थिरीकृत और चिंतित विषय का उपदेश करना अर्थात् अपना सीखा हुआ ज्ञान दूसरों को सुनाना-समझाना, व्याख्यान, चर्चा, लेखन, प्रकाशन आदि द्वारा ज्ञान का प्रचार करना धर्मकथा है।

संक्षेप में यह भी ध्यान में रखना है कि स्वाध्याय के क्षेत्रों में इन पांचों अंगों या अवस्थाओं का एक क्रम है, इनमें प्रथम स्थान वाचना है। अध्ययन किये विषय के स्पष्ट बोध के लिये प्रश्नोत्तर के माध्यम से शंका निवारण करना इसका दूसरा क्रम है। क्योंकि जब तक अध्ययन नहीं होगा तब तक शंका आदि नहीं होगी। अध्ययन किये गये विषय के स्थिरीकरण के लिए उसका पारायण आवश्यक है। इससे एक ओर स्मृति सुदृढ़ होती है तो दूसरी ओर अर्थबोध में क्रमशः स्पष्टता का विकास होता है। इसके पश्चात् अनुप्रेक्षा या

चिंतन का क्रम आता है। चिंतन के माध्यम से व्यक्ति पठित विषय को न केवल स्थिर करता है, अपितु वह अर्थबोध की गहराई में जाकर स्वयं की अनुभूति के स्तर पर उसे समझने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार चिंतन एवं मनन के द्वारा जब विषय स्पष्ट हो जाता है तब व्यक्ति को धर्मोपदेश या अध्ययन का अधिकार मिलता है। इस प्रकार स्वाध्याय को सही रूप में समझकर, सही प्रकार से स्वाध्याय करने से आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति होती है तथा आत्मोन्नति की ओर बढ़ने की जागृति पैदा होती है।

सन्दर्भ व साभार-

1. नमोपुरिसवरगंधहत्थीणं- ग्रन्थ (अध्यात्म योगी युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. जीवन-चरित, दर्शन, व्यक्तित्व और कृतित्व)।
2. श्रमणोपासक : स्वर्ण जयन्ती स्मारिका का विशेषांक, नवम्बर 2012

-बी-174, मालवीय नगर, जयपुर-302017(राज.)

गुरु गुण गाना रे

महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा.

(तर्ज:- दूर कोई गाए.......।)

मोहिनी के ललना, मोतीजी नंदना।
चरणों में वंदना रे, गुरु गुण गाना रे।।टेर।।
चंदा सम चमके, सूरज सम दमके।
देव भी शर्माता रे, गुरु गुण गाना रे।।1।।
ज्ञान के तुम सागर, दर्शन के उजागर।
आतमा चमकाना रे, गुरु गुण गाना रे।।2।।
आगम के तुम ज्ञाता, भक्तों के तुम त्राता।
ज्ञान दीप जलाना रे, गुरु गुण गाना रे।।3।।
हर पल तुमको ध्याऊँ, दिल में तुम्हें बसाऊँ।
मार्ग दिखाना रे, गुरु गुण गाना रे।।4।।
आत्म रमण में रमते, निजानंद में रहते।
शांत सुधा रस पाना रे, गुरु गुण गाना रे।।5।।
सरलता है तुममें, अप्रमत्तता तुममें।
जग में "सुयश" पाना रे, गुरु गुण गाना रे।।6।।

-संकलन-चन्द्रप्रकाश जैन, करौली (राज.)

रेडियो वार्ता

प्राकृत के शिलालेख एवं उनके संदेश*

डॉ. दिलीप धींग, एडवोकेट

प्राकृत भारत की प्राचीनतम भाषा है, जिसका प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बन्ध भारत की सभी भाषाओं के निर्माण से जुड़ा है। प्राकृत भाषा में सदियों तक विपुल और विविध साहित्य रचा जाता रहा। प्राकृत की एक विशेषता यह है कि पुस्तकीय कृतियों के अलावा इस भाषा का प्राचीन साहित्य शिलालेखों के रूप में भी उपलब्ध है। जितना भी शिलालेखीय साहित्य आज उपलब्ध हैं, उसमें प्राकृत के शिलालेख सर्वाधिक हैं। सबसे प्राचीन शिलालेख भी प्राकृत भाषा के प्राप्त होते हैं। राजभाषा और जनभाषा होने की वजह से राजा, प्रजा और समाज, सबके द्वारा लिखवाये गये प्राकृत शिलालेख प्रचुर संख्या में मिलते हैं। लिखित रूप में प्राकृत भाषा का सबसे पुराना रूप शिलालेखों की भाषा में सुरक्षित है।

प्राकृत के विविध शिलालेखों में भारतीय गद्य-पद्य साहित्य और भाषाओं के विकास का पता चलता है। साहित्य एवं भाषा के प्राचीनतम रूप के अध्ययन की दृष्टि से शिलालेखीय साहित्य प्रामाणिक है, क्योंकि शिलापट्टों पर उत्कीर्ण होने के कारण इस साहित्य में किसी प्रकार के परिवर्तन की संभावना नहीं होती है। इसके अलावा प्राचीन भारत की संस्कृति, संस्कार, समाज, नीति, राजनीति, इतिहास, परम्परा, पुरातत्त्व, जीवन-मूल्य आदि के बारे में इन शिलालेखों से बहुत सारी महत्त्वपूर्ण व दुर्लभ जानकारियाँ मिलती हैं।

शिलालेखीय साहित्य में सम्राट् अशोक के शिलालेख तथा खारवेल के हाथीगुंफा शिलालेख प्राचीनतम हैं। सर्वप्रथम ईस्वी पूर्व 300 के लगभग सम्राट् अशोक ने शिलालेखों में प्राकृत का प्रयोग किया। उनके शिलालेख पालि-प्राकृत भाषा में तथा ब्राह्मी व खरोष्ठी लिपियों में विद्यमान हैं। अशोक के शिलालेख गुजरात के गिरनार, महाराष्ट्र के सोपारा, उत्तरप्रदेश के कालसी, उड़ीसा के धौलि और जौगढ़, उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रदेश के मानसेहरा व शाहबाजगढ़ी, दक्षिण भारत में करनूल के येरुगुडी आदि स्थानों पर उत्कीर्ण हैं। अशोक के शिलालेखों का सीमाक्षेत्र अफगानिस्तान से उड़ीसा तक और हिमालय की तराई से लेकर सुदूर दक्षिण तक व्याप्त हैं। इससे मौर्य साम्राज्य के विस्तार की जानकारी मिलती है।

उसके बाद खारवेल का हाथीगुंफा शिलालेख प्राकृत में लिखा गया। उसके बाद

*आकाशवाणी, चेन्नई से 21 फरवरी 2016 को प्रसारित

लगभग 400 वर्षों तक यानी ईसा की लगभग चौथी शताब्दी तक प्राकृत में शिलालेख लिखे जाते रहे, जिनकी संख्या लगभग दो हजार है। प्राकृत के अन्य शिलालेखों में पल्लवराजा शिवस्कंदवर्मन् और पल्लवयुवराज विजयबुद्धवर्मन् के शिलालेख, कक्कुक के घटयाल प्रस्तरलेख, नासिक में उत्कीर्ण वासिष्ठीपुत्र पुलुमावि का शिलालेख, इलाहाबाद के पास प्राप्त हुए पभोसा के शिलालेख इत्यादि प्रमुख हैं।

कुछ शिलालेखों की भाषा प्राकृत, तो कुछ की भाषा संस्कृत मिश्रित प्राकृत भी हैं। ऐसे शिलालेखों में कनिष्क के शिलालेख, हुविष्क का मथुरा लेख, लखनऊ संग्रहालय में जैन प्रतिमा लेख तथा वासुदेव का मथुरा प्रतिमा लेख प्रमुख हैं। शिलालेखों में उत्कीर्ण प्राकृत भाषा पर सम्बन्धित क्षेत्र और काल का प्रभाव है। उसकी एक अलग विशेषता है, जिसे मनीषियों ने 'शिलालेखी प्राकृत' नाम भी दिया है।

अशोक के अभिलेखों में कुछ लेख शिलालेख, कुछ स्तम्भलेख और कुछ गुफालेख हैं। उन्होंने अपने शिलालेखों को 'धर्मलिपि' कहा है। उनका ऐसा कहना उचित ही है, क्योंकि उनके शिलालेख मानव को धर्मपथ पर यानी सत्य, समता, अहिंसा और सदाचार की राह पर अग्रसर करते हैं। उन्होंने अपने शिलालेखों के जरिये प्रजा में अहिंसा, शाकाहार, सदाचार जैसे जीवन-मूल्यों के प्रति प्रेम उत्पन्न करने का प्रयास किया। एक स्तंभलेख में अशोक ने लिखवाया - ''अपासिनवे बहुकयाने दया दाने सचे य सोचये'' अर्थात् पाप से दूर रहना, बहुत अच्छे कार्य करना, दया, दान, सत्य और सदाचार का पालन करना धर्म है। धर्म का यह स्वरूप सबके लिए उपादेय है।

अशोक के पहले शिलालेख में अहिंसा और जीवरक्षा का सन्देश दिया गया है। उसमें पशु-पक्षियों को मारकर हवन करने का निषेध किया गया है। साथ ही भोजन के लिए प्राणियों को मारने की मनाही की गई है। दूसरे शिलालेख और सातवें स्तंभलेख में परोपकार का सन्देश दिया गया है। शिलालेख के अनुसार अशोक ने बीमार मनुष्यों के लिए तथा बीमार पशुओं के लिए चिकित्सा और औषधियों का प्रबंधन करवाया। उन्होंने औषधीय वनस्पतियों का संरक्षण और संवर्द्धन भी करवाया। प्रजा हितैषी राजा के रूप में उन्होंने वृक्षारोपण करवाया, कुएँ खुदवाये और सरायें बनवाईं। इन शिलालेखों में पर्यावरण संरक्षण और मानवसेवा के साथ ही जीवदया का सन्देश भी दिया गया है।

एक शिलालेख में कहा गया है - ''प्राणानां साधु अनारंभी, अपव्ययता अपभाण्डताऽ साधु'' अर्थात् प्राणियों के प्रति अहिंसा अच्छी है। थोड़ा संग्रह और थोड़ा खर्च अच्छा है। इस शिलालेख की एक पंक्ति में दान और सहयोग की प्रेरणा दी गई है। एक शिलालेख में विभिन्न मतावलम्बियों को पारस्परिक प्रेम का सन्देश दिया गया है।

अशोक अपने तीसरे शिलालेख में माता-पिता की सेवा को श्रेष्ठ बताते हैं। पाँचवें स्तंभलेख में प्रजाहित के लिए विशेष अधिकारियों की नियुक्ति की जानकारी तथा प्रजा-हित का सन्देश दिया गया है। कलिंग के शिलालेख में अशोक कहते हैं - ''मेरी प्रजा मेरे बच्चों के समान है और मैं चाहता हूँ कि सबको इस लोक और परलोक में सुख और शान्ति मिले।'' ये शिलालेख कहते हैं कि राजा द्वारा प्रजा को विभिन्न सुविधाएँ उपलब्ध करवाने के साथ ही उसके नैतिक-विकास के लिए भी प्रयत्न करना चाहिये।

अशोक ने अपने राज्याभिषेक के बारहवें वर्ष में चौथा शिलालेख लिखवाया था। उसमें बढ़ते अच्छे आचरण की प्रशंसा करते हुए कहा गया है कि जीवधारियों के प्रति अहिंसा बढ़ी है, लोगों में प्रेम बढ़ा है, विद्वानों और सन्तों के प्रति उचित व्यवहार बढ़ा है तथा माता-पिता की सेवा बढ़ी है। अशोक उम्मीद करते हैं कि आने वाली पीढ़ियाँ भी अहिंसा और सदाचार का व्यवहार बढ़ाएँगी। पाँचवें शिलालेख में अशोक अपील करते हैं कि उनके द्वारा शुरू किये गये अहिंसा व भलाई के कार्यों को विराम न दिया जाए।

सम्राट् खारवेल का एक प्राकृत शिलालेख उड़ीसा के भुवनेश्वर तीर्थ के पास उदयगिरि पर्वत की एक गुफा में खुदा है, जो हाथीगुंफा के नाम से प्रसिद्ध है। यह ईसा पूर्व 150 के लगभग का है। यह ऐसा शिलालेख है, जिसमें राजवंश और वर्ष का स्पष्ट उल्लेख हुआ है। इसमें खारवेल के शासन के तेरह वर्षों का उल्लेख है। इस शिलालेख के शुभारंभ में अरहंतों और सिद्धों को इस प्रकार नमस्कार किया गया है - ''नमो अरहंतानं, नमो सवसिधानं।'' यह नमस्कार प्राकृत गद्य का सबसे छोटा और महत्त्वपूर्ण नमूना माना जाता है। मंगलाचरण की इस परम्परा के द्वारा आस्था का सन्देश भी दिया गया है। 'भारतवर्ष' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख इसी शिलालेख की दसवीं पंक्ति में मिलता है। हमारे देश का नाम भारत है, यह इसका एकमात्र प्राचीन शिलालेखीय प्रमाण है।

शिलालेख के अनुसार खारवेल ने कुमार अवस्था में शिक्षा-दीक्षा अर्जित की। इससे पता चलता है कि उस समय ज्ञानार्जन की उचित व्यवस्थाएँ विद्यमान थीं। इस शिलालेख में कर-माफी और जनहित के कार्यों का उल्लेख भी है। खारवेल ने प्राकृत, प्राच्यविद्या और जैनविद्या विषयक साहित्य के उद्धार और संरक्षण के लिए जैन मुनियों और विद्वानों का एक सम्मेलन भी बुलवाया था। दक्षिण आंध्रवंशी राजा शातकर्णी खारवेल के समकालीन थे। दक्षिण के पाण्ड्य राजा के यहाँ से खारवेल के पास बहुमूल्य उपहार आते थे। उत्तर से लेकर दक्षिण तक खारवेल के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे। भाषा, साहित्य, इतिहास, राजनीति, वाणिज्य आदि दृष्टियों से यह शिलालेख महत्त्वपूर्ण है।

जोधपुर से 20 मील उत्तर की ओर घटयाल नाम के गाँव में एक प्राकृत शिलालेख

उत्कीर्ण है। यह शिलालेख नौवीं सदी का है। इस पद्यमय शिलालेख में तेबीस पद हैं। इसमें कक्कुक नरेश की कुमारावस्था के गुणों और राज्यकाल की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। उस वर्णन से अनेक प्रेरणाएँ मिलती हैं, यथा - वाणी की मधुरता, नम्रता, निष्पक्षता, स्थायी मित्रता, नीति-निपुणता, न्यायप्रियता, उदारता, लोकहित के कार्यों को प्रमुखता देना इत्यादि। चौदहवें श्लोक में कहा गया है कि वह राजा बच्चों के लिए गुरु, युवकों के लिए मित्र तथा बुजुर्गों के लिए पुत्र के समान था। उसने अपने अच्छे चरित्र द्वारा समस्त प्रजा का भली प्रकार पालन-पोषण किया। इस शिलालेख में कक्कुक द्वारा बाजार, कीर्ति-स्तंभ और जैन मन्दिर बनवाने का भी उल्लेख है। इससे प्रेरणा मिलती है कि राजा को प्रजा की आर्थिक उन्नति के साथ ही नैतिक और सांस्कृतिक पक्ष पर भी ध्यान देना चाहिये। नासिक में उत्कीर्ण वासिष्ठीपुत्र पुलुमावि के शिलालेख में सत्य, दान, क्षमां, अहिंसा, तपस्या, इन्द्रिय-संयम आदि सद्गुण उत्कीर्ण हुए हैं। अन्य शिलालेखों में भी अहिंसा, सहिष्णुता, वीरता आदि गुण अंकित हुए हैं। इन शिलालेखों में प्राचीन भारतीय समाज की विशेषताएँ उजागर होती हैं।

प्राकृत शिलालेखों की महत्ता इस बात से भी बढ़ जाती है कि यह साहित्य प्रायः किसी व्यक्ति विशेष, राजा, योद्धा या महात्मा के यशोगान से सम्बन्धित नहीं है, अपितु इन शिलालेखों के माध्यम से मानवीय और सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की गई है। प्राकृत भाषा में उत्कीर्ण ये शिलालेख सामाजिक प्रगति, धार्मिक सहिष्णुता, अहिंसा, संयम एवं शान्ति का संदेश देते हैं।

- निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र

सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079

जिनवाणी पर अभिमत

डॉ. दिलीप धींग

जिनवाणी का फरवरी-2016 का अंक अन्य अंकों की भाँति बहुआयामी है। आपने चर्चित विषय 'निर्व्यसनी सामायिक संघ' पर संपादकीय लिखा है। यह शुभ है कि पूज्य आचार्यप्रवर के आह्वान पर रत्नसंघ के वर्तमान अध्यक्ष माननीय श्री पी.एस. सुराणाजी तथा अन्य शीर्ष पदों पर विराजमान महानुभावों ने इस विषय पर ध्यान दिया है। इस बात की चर्चा आपने संपादकीय में भी की है। इस अंक में संघाध्यक्ष महोदय ने आचार्य श्री हस्ती की दृष्टि में ध्यान की ओर ससन्दर्भ ध्यान खींचा है। इससे सांस्थानिक या संघीय रूप में ध्यान-साधना को और बढ़ावा मिलेगा। यह जरूरी विषय है। स्थानकवासी परम्परा में ध्यान की विभिन्न चर्चाओं के बावजूद शायद यह साधना लोकोन्मुख नहीं बन पाई है। जबकि सामायिक, स्वाध्याय आदि मूलभूत साधनाओं के साथ ध्यान अन्तःसम्बन्धित है।

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमश:98)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(णाणत्ता)

जिज्ञासा- असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जब मरकर वैक्रिय के 12 घरों में जघन्य गमे से आता है, तब ज्ञान-अज्ञान का णाणत्ता क्यों नहीं पड़ता है?

समाधान- जघन्य गमे अर्थात् अन्तर्मुहुर्त की स्थिति वाला असंज्ञी तिर्यंच जब पर्याप्त अवस्था में काल करता है, तब उसमें मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान ये दो अज्ञान ही मिलते हैं। जैसा कि दृष्टि के णाणत्ते के अन्तर्गत स्पष्ट किया गया था, उसी प्रकार यहाँ भी यह ध्यान रखना चाहिए कि जिस असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में अपर्याप्त अवस्था में मति-श्रुत ज्ञान मिलता है, ऐसे सास्वादन समकित वाले जीव पर्याप्त अवस्था में जघन्य गमे से वैक्रिय के 12 घरों में उत्पन्न ही नहीं होते हैं।

अर्थात् वैक्रिय के 12 घरों में जघन्य गमे से आकर उत्पन्न होने वाले असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव में तिर्यंच के भव में मात्र दो अज्ञान ही मिलते हैं, अतः जिस प्रकार से दृष्टि का णाणत्ता नहीं पड़ता, उसी प्रकार से ज्ञान-अज्ञान का भी णाणत्ता नहीं पड़ता है।

जिज्ञासा- असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के जघन्य गमे से वैक्रिय के 12 घरों में आने पर योग का णाणत्ता पड़ता है अथवा नहीं?

समाधान- असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से भी वैक्रिय के घरों में उत्पन्न होते हैं, तब भी वे तिर्यंच के भव में पर्याप्त ही होते हैं। पर्याप्त होने के कारण उनमें वचन योग(व्यवहार भाषा)मिलता ही है। काययोग तो पर्याप्त तथा अपर्याप्त, दोनों ही प्रकार के जीवों में मिल ही जाता है। वचन व काय ये दोनों योग मिलने से तथा असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की औघिक लब्धि में भी वचन व काय ये दो ही योग होने से इनमें योग का णाणत्ता नहीं पड़ता है।

जिज्ञासा- असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जब जघन्य गमे से वैक्रिय के 12 घरों में आता है, तब समुद्घात का णाणत्ता पड़ता है अथवा नहीं?

समाधान- असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में पर्याप्त अवस्था में तीन समुद्घात होते हैं- वेदनीय, कषाय और मारणान्तिक। जो असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से वैक्रिय के 12 घरों में आकर उत्पन्न होता है, उस जीव में भी असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भव में वेदनीय, कषाय और मारणान्तिक ये तीनों समुद्घात मिल सकते हैं। औघिक ऋद्धि व जघन्य गमे की ऋद्धि, इन दोनों में तीनों समुद्घात मिलने की समानता होने के कारण समुद्घात का णाणत्ता नहीं पड़ता है।

जिज्ञासा- असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के जघन्य गमे से वैक्रिय के 12 घरों में आने पर आयु का णाणत्ता क्यों पड़ता है?

समाधान- जो असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से वैक्रिय के 12 घरों में आता है तो उसकी असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भव में जघन्य अर्थात् अन्तर्मुहुर्त की ही आयु होती है। जबकि असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की औघिक लब्धि में (सामान्य रूप से) आयु अन्तर्मुहूर्त से लेकर 1 करोड़ पूर्व वर्ष तक की होती है। मात्र जघन्य आयु ही मिलने के कारण तथा शेष मध्यम व उत्कृष्ट आयु नहीं मिलने के कारण जघन्य गमे से आने वाले असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में आयु का णाणत्ता माना जाता है।

जिज्ञासा- असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के जघन्य गमे से वैक्रिय के 12 घरों में आने पर अध्यवसाय का णाणत्ता क्यों पड़ता है?

समाधान- असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जब जघन्य गमे से पहली नारकी के घर में आता है, तब अगले भव की बंधी हुई नरकायु के प्रभाव से असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भव में उसमें अन्तर्मुहूर्त प्रमाण आयुकाल में अशुभ अध्यवसाय ही रहता है। शुभ अध्यवसाय नहीं आ पाता। जबकि औघिक लब्धि में शुभ व अशुभ दोनों अध्यवसाय माने गए हैं, अतः अध्यवसाय का णाणत्ता पड़ता है।

जब असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गमे से वैक्रिय के शेष 11 घरों में (10 भवनपति, 1 वाणव्यन्तर) आता है, तब अगले भव की बंधी देवायु के प्रभाव से उसमें शुभ अध्यवसाय ही अन्तर्मुहूर्त तक लगातार बने रहते हैं। अशुभ अध्यवसाय नहीं होते, इस कारण से वैक्रिय के 11 घरों की अपेक्षा अशुभ अध्यवसाय का तथा नारकी की अपेक्षा शुभ अध्यवसाय का णाणत्ता पड़ता है।

जिज्ञासा- अनुबन्ध का णाणत्ता, जघन्य गमे से वैक्रिय के 12 घरों में आने वाले असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में किस अपेक्षा से माना जाता है?

समाधान- आयु और अनुबन्ध का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि आयु जघन्य बंधती है तो अनुबन्ध भी जघन्य बंधता है। यदि आयु मध्यम अथवा उत्कृष्ट बन्धती है तो उसी के अनुरूप अनुबन्ध भी मध्यम अथवा उत्कृष्ट बन्धता है। अर्थात् आयु के अनुपात में ही अनुबन्ध होता है। अतः जिस प्रकार से जघन्य गमे से आने वाले असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में आयु का णाणत्ता बतलाया है, उसी प्रकार अनुबन्ध का भी णाणत्ता समझ लेना चाहिए।

जिज्ञासा- अनुबन्ध किसे कहते हैं?

समाधान- जब कोई जीव आगामी भव का आयुष्य बंध करता है, उस समय में वह जीव 1. गति, 2. जाति, 3. स्थिति, 4. अवगाहना, 5. अनुभाग और 6. प्रदेश इन छहों का भी बंध करता है। आयुष्य बंध के साथ इन 6 बोलों का भी निरन्तर बंध होना 'अनुबन्ध' कहलाता है। जिस प्रकार आगामी भव की बंधी हुई आयु को जीव को भोगना ही पड़ता है, उसी प्रकार आयुबन्ध के साथ बंधी इन 6 चीजों को भी जीव को विपाकोदय से भोगना पड़ता है। आयु बंध के आगे-पीछे भी इन 6 बोलों का बंध होता रहता है, किन्तु उन्हें विपाकोदय को भोगना जरूरी नहीं होता है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

हार्दिक आभार

सुश्राविका श्रीमती किरणदेवीजी हुण्डीवाल धर्मसहायिका श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल के असमय स्वर्ग-गमन पर चेन्नई में 29 फरवरी 2016 को रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराना, श्री जवाहरलाल जी कर्नावट, श्री गौतमचन्दजी लोढ़ा, श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा आदि श्रावकों ने श्राविकारत्न के गुण-स्मरण-गुणकीर्तन किए। जोधपुर एवं चेन्नई में संघ सदस्यों द्वारा व्यक्त की गई श्रद्धाभिव्यक्ति के लिए हुण्डीवाल परिवार आभार व्यक्त करता है तथा श्राविकारत्न की स्मृति में एक करोड़ रुपये की राशि शुभकार्यों में लगाने की घोषणा करता है।

-सोहनलाल, गौतमचन्द, दिनेशकुमार हुण्डीवाल, चेन्नई

आत्म-मंथन

अहं का दान

डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'

सेठ अमीरचन्द मात्र नाम से ही अमीर नहीं था बल्कि वह वैभव में भी अमीर ही था। उसकी उन चन्द लोगों में गिनती होती थी जो धन सम्पन्न थे और जिनके बारे में प्रसिद्ध था कि वे अपने घर आये किसी भी याचक को खाली हाथ नहीं जाने देते हैं। मानो दान में उनका विश्वास अटूट हो। कहते हैं अमीरी मात्र धन-दौलत से नहीं होती, वह धर्म, धैर्य और दान से भी होती है। धन का दान सर्वोत्तम माना गया है। नीतिकारों ने कहा है कि धन की तीन गतियाँ होती हैं- दान, भोग और नाश। जो व्यक्ति न दान देता है, न भोग करता है उसकी धन-सम्पदा का नाश सुनिश्चित होता है। सो, अमीरचन्द भी इसे बखूबी समझता था, इसलिए धन का नाश होने से डरता था। उसे यदि कोई व्यसन था तो यही कि धन आये और खूब आये। धन प्राप्ति के लिए वह प्रतिदिन धर्म-साधना करता था। वह दान में पीछे रहने वालों में से भी नहीं था।

बस, उसमें कोई अच्छाई थी तो यही कि वह धार्मिक आचरण करने वाला और दानी था; किन्तु यदि कोई बुराई थी तो यही कि उसे प्रदर्शन में विश्वास अधिक था। वह किसी याचक को तब तक दान नहीं देता था जब तक कि उसे यह अहसास न हो जाये कि चार लोग उसे देख रहे हैं। यदि कोई देखने वाला नहीं हो तो याचक को बातों में उलझाकर रखता, फिर भी कोई (दर्शक) न आता दिखे तो किसी को सप्रयास बुलवा देता। अपनी बात रखने के लिए कहता कि दान छिपकर और छिपाकर नहीं देना चाहिए। याचकों का क्या भरोसा? वह जब भी कुछ देता सबको बढ़ा-चढ़ाकर बताता। प्रशंसकों को प्रेरित करता कि वे उसकी प्रशंसा करें। उन प्रशंसकों की वह खूब खातिरदारी करता और चाहता कि वे उसकी दानशीलता का गुणगान अन्यत्र भी करें। जितना दान नहीं, उससे अधिक प्रशंसा प्राप्ति की भूख उसकी सदा जाग्रत रहती। यदि कोई प्रशंसा नहीं करता तो स्वयं ही कहता- "आज कल जमाना कितना बदल गया है कि कोई किसी की अच्छाई देखकर भी अपने मुख से प्रशंसा तक नहीं करना चाहता। अरे, औरों की तो जाने दो, अब मुझे ही देख लो! मैंने कितना दान दिया; पर किसी ने कभी मेरे, दान की प्रशंसा तक नहीं की, सम्मान की तो बात ही अलग है।"

सुनने वाले सुनते और कहते -"ऐसा नहीं है; अच्छे काम की तो सभी प्रशंसा करते हैं, फिर दान के काम को कौन बुरा कहेगा?"

खैर! एक दिन उसे पता चला कि अपने नगर में कोई साधु आये हैं, सो वह भी दर्शन हेतु चल दिया। कुछ लोगों की विशेषता होती है कि वे स्वयं को सर्वज्ञ मानकर चलते हैं। डॉक्टर के यहाँ दवा लेने जायेंगे और डॉक्टर को ही दस-बीस दवाइयाँ बता आयेंगे। यह महाशय भी गये तो थे साधु के दर्शन करने और लगे अपनी साधुता बताने। ''मेरा जीवन भी साधु से कम नहीं है। अब क्या करें जिम्मेदारियाँ हैं, वरना हम भी आप जैसे होते'' आदि, आदि।

साधु सब सुनते रहे। उनके मुख की रहस्यात्मक मुस्कान को उसने पढ़ने की जरूरत ही नहीं समझी और रुपयों से भरी एक थैली निकालकर साधु के चरणों में रख दी और बोले- ''महाराज! यह आपके लिए मेरी तुच्छ भेंट है। पूरे एक लाख हैं, कहें तो राशि बढ़ा भी सकता हूँ।''

साधु तो साधु थे, बोले- ''मेरा इससे क्या काम? मैं तो बहता पानी, रमता जोगी की प्रकृतिवाला हूँ। मैं रुपये लेकर क्या करूँगा?''

यह सुन सेठ अमीरचन्द बोला- ''महाराज! यह तो मेरा दान है।''

साधु ने कहा कि- ''मैं दान क्यों लूँ? जब जरूरत होती है तो अन्न तुम्हारे जैसे श्रावकों से ही पाता हूँ और वह भी बिना किसी याचना के, बिना किसी करुणा के और यदि मुझे कुछ जरूरत है तो मुझे तुम्हारे इस धन की नहीं तुम्हारे 'मैं' की जरूरत है।''

इधर अमीरचन्द का अहं जाग गया था। यह अहं वह नहीं था जो 'सोऽहं' का भाव जगाता है, बल्कि यह तो वह अहं था जो आँखों, नथुनों और शरीर के रोम-रोम से प्रकट हो रहा था। अरे यह कैसा साधु है जो मेरी दी हुई दानराशि को तो स्वीकार करता नहीं और कहता है कि मुझे तुम्हारे 'मैं' की जरूरत है?''

अमीरचन्द यह सब कह तो मन में रहा था, किन्तु वे साधु मन की बात समझ ही गये और बोले- ''सेठजी! लगता है तुम्हें मेरी बात का बुरा लगा है?''

बुरा लगने की तो बात ही है महाराज! एक तो आप मेरा दान लेते नहीं और ऊपर से कहते हो कि मुझे तुम्हारे दान की नहीं, तुम्हारे मैं की जरूरत है? फिर मैं दान भी तो कम नहीं दे रहा हूँ, पूरे एक लाख हैं। यह कहते हुए अमीरचन्द अब भी क्रोध में काँप ही रहा था। वह भी नहीं समझ पा रहा था कि उसे हो क्या गया है?

साधु को अब लगा कि चोट गहरी लगी है सेठ को, इसे बोध देने की आवश्यकता है। साधु ने कहा- ''सेठजी! मैंने ही तो कहा था- मुझे तुम्हारे दान (धन) की जरूरत नहीं है; क्योंकि वह तो मैं पहले ही त्याग चुका हूँ। जैन साधु तो तिलतुषमात्र परिग्रह भी अपने पास नहीं रखते। मैंने जो तुम्हारा 'मैं' मांगा था वह भी इसलिए कि यदि दान भावना के पीछे और

साथ में अहंकार रहा तो दान का फल तुम्हें कैसे प्राप्त होगा? जिस दान के साथ दाता अपने अभिमान को नहीं त्यागता, वह दान दान नहीं नादानी है। दान के लिए कहा है- "अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम्" अर्थात् स्व-पर कल्याण के लिए अपने स्वामित्व का त्याग करना दान है। यदि तुममें अहंकार रहा तो, जिसे तुमने दिया उसका भले ही कल्याण हो जाये, किन्तु तुम्हारा कल्याण कैसे होगा?"

"दान-दाता के लिए तो आचार्य अमृतचन्द्र स्वामी ने सात गुण बताये हैं-

ऐहिकफलानपेक्षा क्षान्तिर्निष्कपटानसूयत्वम्।
अविषादित्वमुदित्वे निरहङ्कारत्वमिति हि दातृगुणाः।।

-पुरुषार्थसिद्ध्युपाय

अर्थात्- 1. इस लोक में फल की इच्छा न करें, 2. क्षमाभाव धारण करें, 3. निष्कपट रहें, 4. दूसरे दातारों के प्रति ईर्ष्या भाव न रखें, 5. विषाद न करें कि मेरे यहाँ जो अच्छी वस्तु थी, वह मैंने दे दी, मुझे नहीं देनी थी, 6. दान देकर हर्षित हों, 7. अहंकार नहीं करें। सेठजी! जो दाता इन सात गुणों के साथ दान देता है, उसी का दान स्व-पर कल्याणकारी होता है।"

साधु के इन वचनों को सुनकर सेठ अमीरचन्द की आँखें खुल गयी थीं। धन की थैली चरणों में ही पड़ी थी, किन्तु अब अहंकार का प्रतीक उन्नत सिर भी साधु के चरणों में पड़ा हुआ था। अब वह जान गया था कि दान की कीमत दान की भावना से होती है, दान के अहं से नहीं। अहं तो जितना जल्दी विसर्जित हो जाये, उतना ही ठीक है।

-पार्श्व-ज्योति, एल-65, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर-450331 (मध्यप्रदेश)

सूचना

जिनशासन गौरव संघनायक आचार्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्यपद रजत साधना वर्ष के उपलक्ष्य में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा जिनवाणी का 'आचार्यपद विशेषांक' प्रकाशित किया जा रहा है। प्रकाशित होने वाले जिनवाणी विशेषांक हेतु रुपये 5,100/-, 11,000/- अथवा 21,000/- का अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करावें। विशेषांक में अधिक से अधिक पठनीय सामग्री उपलब्ध हो, इसलिये जिनवाणी में विज्ञापनों का प्रकाशन न करके आप जैसे उदारमना सुज्ञ सुश्रावकों से अर्थसहयोग प्रदान करने के लिए निवेदन किया जा रहा है। अर्थसहयोग प्रदान करने वाले सुज्ञ सुश्रावकों का नाम जिनवाणी विशेषांक में प्रकाशित किया जायेगा।

-विनयचन्द डागा, मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

काव्य

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (20)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।**-सम्पादक**

(तर्जः- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

(उनतीसवाँ अध्ययन : सम्यक्त्व पराक्रम-3)

मनोगुप्तता से हे भंते! जीव यहाँ क्या पाता,
अकुशल मन को जो रोके, क्या आराधक हो जाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।583।।
मनोगुप्तता से प्राणी, एकाग्रभाव में रहता,
अशुभ विकल्पों से हटकर, मन की रक्षा करता,
संयम आराधक बनने को, मनो गुप्ति को पालो।।584।।
वचन गुप्ति से भगवन्! जीव यहाँ क्या पाता,
अशुभ वचन से निवृत्त होकर, ध्यान युक्त हो जाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।585।।
वचन गुप्ति का सच्चा साधक, निर्विकारता पाये,
अध्यात्मयोग से सज्जित होकर, ध्यान युक्त हो जाए,
क्लेशादि से बचना हो तो, वचन गुप्ति को पालो।।586।।
काय गुप्तता से हे भगवन्, जीव यहाँ क्या पाता,
अशुभ चेष्टाओं को तजकर, पाप बन्द कर पाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।587।।
काय गुप्तता धारण करके, संवर युक्त हो जाता,
संवर से फिर काय गुप्तता, आश्रव बन्द कराता,

अशुभ छोड़कर शुभ को करने, काय गुप्ति को पालो।।588।।
मन समाधारण से भंते! जीव यहाँ क्या पाता,
उचित नियोजन करके मन का, क्या क्षय है कर पाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।589।।
मनसाधारण से प्राणी, एकाग्रभाव में रमता,
ज्ञान के पर्यायों को पाकर, समकित शुद्धि करता,
श्रुतोपासना में मन धर कर, मिथ्याक्षय कर डालो।।590।।
वचन समाधारण से भंते! जीव यहाँ क्या पाता,
वाणी से स्वाध्याय में रहकर, सुलभ बोधि को पाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।591।।
वचन समाधारण करने से, सुनलो क्या है मिलता,
वाणी विषयभूत दर्शन की, जीव विशुद्धि करता,
सुलभबोधिता पाने के हित, स्व में रमण करालो।।592।।
काय समाधारण से भंते! जीव यहाँ क्या पाता,
शुभ योगों में काया करके, किस गुण को है पाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।593।।
संयम में काया रखकर, चारित्र शुद्धि है पाता,
यथाख्यात चारित्र प्राप्त कर, वीतराग पद पाता,
अंत करे बाकी कर्मों का, सिद्ध गति को पालो।।594।।
ज्ञान सहितता से भंते, जीव यहाँ क्या पाता,
श्रुत से सम्पन्न होकर वह, प्रामाणिक बन जाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।595।।
ज्ञानवान सुसाधक बनता, सर्वभाव विज्ञाता,
चतुर्गति संसार चक्र में, नष्ट नहीं हो पाता,
स्व-पर मत का ज्ञाता बनकर, प्रामाणिक बन चालो।।596।।
दर्शन युक्तता से प्राणी, कहो यहाँ क्या पाता,
सम्यक् दर्शन की प्राप्ति से, किस गुण को अपनाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।597।।
भव का मूल मिथ्यात्व कहा है, इससे ही भव धारण,

दर्शन सम्पन्नता का फल है, भव मिथ्यात्व निवारण,
उत्तम दर्शन ज्ञान से भावित, होकर सुख से चालो।।598।।
चारित्र सम्पन्नता से भंते! जीव यहाँ क्या पाता,
पूर्ण चारित्र को पाकर के, मोक्ष धाम चढ़ जाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।599।।
चार घातियाँ कर्म खपाता, चारित्र सम्पन्न साधक,
अचल अकम्प शैल की भांति, बन जाता आराधक,
सिद्ध बुद्ध और मुक्त हो सारे, दुःख का अंत करालो।।600।।
पंच इन्द्रियों के निग्रह से, जीव यहाँ क्या पाता,
जुड़े न मन उनके संग में, जीवन तब सरसाता,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।601।।
पंच इन्द्रियों के निग्रह से, रागद्वेष है टलता,
नये कर्म का बंध नहीं हो, संचित को क्षय करता,
समभावों से मन को भरकर, कर्म बंध को टालो।।602।।
कषाय विजय करने से भंते, जीव यहाँ क्या पाते,
क्रोध-मान-माया व लोभ, ये चार कषाय कहाते,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।603।।
क्रोध विजय से क्षमाभाव और, मान विजय से मृदुता,
लोभ विजय से हो संतुष्टि, माया जय से ऋजुता,
वेदनीय कोई कर्म न बांधे, संचित कर्म खपालो।।604।।
राग-द्वेष मिथ्यात्व विजेता, भंते क्या फल पाएँ,
अन्तिम पृच्छा शेष रही है, समाधान फरमाएँ,
बोध प्राप्त करने को उत्सुक, अपना शीश नमालो।।605।।
पृच्छा सुंदर है आयुष्मन्, समाधान अब सुनना,
प्रथम मोह फिर ज्ञान दर्श संग, अंतराय क्षय करना,
लोक-अलोक प्रकाशक केवल, दर्शन ज्ञान को पालो।।606।।
यथाविध इन सब बोलों का, आराधन जो करता,
अंतिम अन्तर्मूहर्त के रहते, शुक्लध्यान चित्त धरता,
योग निरोध अरु कर्म खपाके, शुद्ध चेतना पालो।।607।।

शुद्ध चेतन को पुद्‌गल का फिर, संग रास नहीं आता,
एक समय में अफुसमाण, लोक शिखर पे जाता,
सिद्ध-बुद्ध हो करके प्राणी, शाश्वत आनन्द पालो।।608।।
धीर-वीर महावीर की प्राणी, मनभावन अति सुन्दर,
करो-करो पुरुषार्थ भवी जन, बनना वीर अनुत्तर,
सेवं-भंते, सेवं-भंते, कहकर कदम बढ़लो।।609।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बखतसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

आदिनाथाष्टकम्

डॉ. श्वेता जैन

अष्टकर्मविघातारं धर्मतत्त्वोपदेशकम्।
वन्देऽहं परया भक्त्या, सादरं प्रथमं जिनम्।।1।।
धर्मतीर्थस्य कर्तारं देवदानवपूजितम्।
वन्देऽहं परया भक्त्या, सादरं प्रथमं जिनम्।।2।।
नाशकं घातिकर्मणां (कृत्यानां) शुद्धचित्तयुतं सदा।
वन्देऽहं परया भक्त्या सादरं प्रथमं जिनम्।।3।।
केवलज्ञानसंयुतं ज्ञानविज्ञानभास्करम्।
वन्देऽहं परया भक्त्या, सादरं प्रथमं जिनम्।।4।।
तीर्थंकर शिरोमणिं अध्यात्मलक्ष्मशोभितम्।
वन्देऽहं परया भक्त्या, सादरं प्रथमं जिनम्।।5।।
चतुर्विधस्य संघस्य, नायकं समतोज्ज्वलम्।
वन्देऽहं परया भक्त्या, सादरं प्रथमं जिनम्।।6।।
नाभिराजप्रियं पुत्रं मातामरुदेवीसुतम्।
वन्देऽहं परया भक्त्या सादरं प्रथमं जिनम्।।7।।
असि-मसि-कृषीणाञ्च, शिक्षकं नूतनं परम्।
वन्देऽहं परया भक्त्या, सादरं प्रथमं जिनम्।।8।।

-समता कुंज, 12/7, जालमविलास स्कीम, पावटा 'बी' रोड़, जोधपुर-342006 (राज.)

78 वें जन्म-दिवस पर

आचार्यप्रवर श्री हीरा : सद्गुणों की खान

डॉ. मंजुला बम्ब

वर्तमान समय में तीर्थंकर नहीं गणधर नहीं, केवली नहीं पूर्वधर नहीं इसलिए चतुर्विध संघ का भार आचार्य पर रहता है। आचार्य को परमपिता कहा गया है। जन्म देने वाला पिता होता है, लेकिन आचार्य कल्याण का मार्ग दिखाते हैं इसलिए उन्हें परमपिता कहा गया है। आचार्य के छत्तीस गुण कहे गये हैं। "गुणाः पूजास्थानं, न च लिंग न च वयः" गुण ही पूजनीय होते हैं, लिंग एवं वय नहीं। हम गुण पूजक हैं, व्यक्ति पूजक नहीं।

गुणों की महत्ता होती है, नाम की नहीं। नाम मात्र से तो आचार्य, उपाध्याय कई होते हैं लेकिन वे भाव से पूज्य नहीं होते। आचार्य गुणसम्पन्न होते हैं। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. अनेक गुणों के धारक हैं। गुरु हस्ती की चरण सन्निधि में मन-वचन-कर्म से समर्पित रहकर आपने श्रमणत्व का बोध पाया। आपकी योग्यता, क्षमता, पात्रता जान समझकर गुरु हस्ती ने अपना उत्तरदायित्व आपके सबल कंधों पर सौंपा, फिर भी आपकी दिनचर्या इसी तरह निर्बाध रूप से गतिमान है।

ब्रह्ममुहूर्त में शय्या त्याग कर आप स्वाध्याय-ध्यान में निमग्न हो जाते हैं। रात्रिक प्रतिक्रमण के अनन्तर पलेवणा एवं शारीरिक आवश्यक कर्म से निवृत्त होकर आप प्राणायाम करते हैं। स्वाध्याय के समय स्वाध्याय, आत्म-चिन्तन के समय स्व-स्वभाव में रमणता, ध्यान के समय ध्यान, मौन के समय मौन, सारा काम सुव्यवस्थित चलता है। प्रतिक्रमण के पश्चात् रात्रि में महावीराष्टक, कल्याण मंदिर का समवेत स्वर में पारायण हर श्रोता को आनन्दित करता है। आचार्य श्री की दिनचर्या खुली पुस्तक की तरह स्पष्ट है। हर भक्त जानता है कि मध्याह्न में 12 से 2 बजे तक आपश्री ध्यान-मौन की साधना में निमग्न रहते हैं। प्रत्येक सोमवार आपके मौनव्रत रहता है। कृष्ण पक्ष की दसमी को पूर्ण मौन एवं उपवास की साधना के साथ पूरा दिन आराध्य देव के चिन्तन में व्यतीत होता है।

'सब मेरे हैं' इस अवधारणा से आचार्यश्री सबसे एक स्थान पर जहाँ बैठते है वहीं से बातचीत करते हैं और संघ-व्यवस्था सम्बन्धी आवश्यक मार्गदर्शन भी करते हैं। आचार्य भगवन्त का पाट प्रायः ऐसी जगह लगा रहता है जहाँ से चारों ओर सहज देखा जा सकता है। आपका पाट दीवार से हटकर दूर लगा होता है, पाट पर बैठकर दीवार का आलम्बन आपने कभी लिया हो, ऐसा किसी से सुनने में और देखने में नहीं आया। अपरिहार्य, अस्वास्थ्य

की स्थिति के अतिरिक्त कभी भी आपने दिन में आडा आसन नहीं किया, जो भगवन्त की अप्रमत्तता का परिचायक है। आचार्य श्री के दर्शन-वंदन हेतु हर समय श्रद्धालु आते रहते हैं। आपश्री से जब भी कोई मंगल पाठ श्रवण करने की भावना व्यक्त करता है आपश्री मांगलिक सुनाते हैं।

अनेक बार जब-जब आचार्यश्री से वार्तालाप का प्रसंग आया, विचार चर्चा हुई, हर प्रसंग पर उनके चिन्तन में उनकी योजनाओं में दीर्घदृष्टि की गहरी झलक मिलती है। गुरुहस्ती की प्रेरणा से मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक प्रदेशों में स्वाध्याय संघ गठित हुए तब आचार्य भगवन्त ने अपने शिष्य 'हीरा' से पूछा कि क्या श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के अन्तर्गत मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक स्वाध्याय संघ रखे जाएं या इन प्रदेशों में स्वाध्याय संघ की स्वतन्त्र इकाइयाँ रखी जायें? पं. रत्न श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने अपना अभिमत रखते हुए कहा कि श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ का वर्तमान में जो स्वरूप है उसे केन्द्रीय कार्यालय के रूप में रखा जाना चाहिए और अलग-अलग प्रदेशों के स्वाध्याय संघ को स्वतंत्र रूप से काम करने देना उचित लगता है। स्वतन्त्र स्वाध्याय संघ होंगे तो प्रादेशिक स्तर के अधिकारी गाँव-गाँव और नगर-नगर में प्रभावी प्रेरणा कर सकेंगे और नए स्वाध्यायी बनाने में भी सुविधा रहेगी। आचार्य भगवन्त ने श्री हीरामुनिजी महाराज का परामर्श मान्य किया। आज मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक के प्रादेशिक स्वाध्याय संघ कार्यालय काम कर रहे हैं और वे जोधपुर स्वाध्याय संघ कार्यालय से उचित मार्गदर्शन लेकर स्वाध्याय प्रवृत्ति के प्रचार-प्रसार में सक्रिय हैं।

युवावस्था में संयम पथ के राही बनने वाले गुरुहीरा का जीवनवृत्त स्वयं ही युवकों के लिए प्रेरणादायी है, ऐसे आचार्यप्रवर का सान्निध्य जब प्राप्त होता है तब उनकी स्नेहमयी आँखें संदेश देती हैं, वह कहे जाने वाले हजारों शब्दों एवं कई उपदेशों से अधिक प्रेरणादायी होती हैं। संयम की अनूठी मस्ती है गुरु हीरा में। संयम का पालन करने व करवाने में कठोर, पर दिल से दयालु हैं। शिथिलाचार आपश्री को कतई पसन्द नहीं है। सम्प्रदाय विशेष से सम्बन्धित होने पर भी साम्प्रदायिकता से बिलकुल परे हैं।

गुणग्राहकता का भाव, जीवन-व्यवहार में होने से गुरु के दिल में स्थान पाने वाले आडम्बर, प्रदर्शन और देखा देखी से आपश्री दूर रहते हैं। आपश्री की दिनचर्या पूर्ण व्यवस्थित, युक्ति संगत और आत्मरमणता में सदा एकसी रहती है, जिस पर हम सबको गर्व है। आचार्यप्रवर सुनते सबकी हैं, किसी को निराशा न हो इसलिए केवल एक पंक्ति का जवाब देते है- ''देखो क्या फरसना बनती है।''

आचार्यप्रवर में सागर सी गहराई और पर्वत की ऊँचाई है, आचार की दृढ़ता और

विचारों की उदारता है। ज्ञान का अथाह सागर आपके व्यक्तित्व में हिलोरें मारता है और असंख्य ज्ञान उर्मियाँ उछलकर सहृदय श्रोताओं को आप्लावित करती हैं। आप वाणी के जादूगर हैं। धर्म और दर्शन की शब्दावली को आपश्री सरल भाषा में अपनी गहरी विवेचनात्मक प्रतिभा से प्रस्तुत कर अनपढ़ से लेकर विज्ञजनों को अभिभूत कर देते हैं।

आचार्यप्रवर बच्चों के संस्कार के प्रबल पक्षधर हैं। आज जब भौतिकता की अंधी दौड़ में बच्चे व युवा पीढ़ी बेतहाशा भागती जा रही है, देश एवं समाज में नित नये रूप में बुराइयाँ जन्म ले रही हैं। स्मैक, हेरोइन, चरस, गांजा, टी.वी., मोबाइल आदि का नये रूप में प्रयोग युवा पीढ़ी की सोचने समझने की शक्ति को लील (नष्ट कर) रहा है। ऐसे में आपश्री के उपदेशों से, आपके तेजस्वी उद्‌बोधन से विभिन्न क्षेत्रों में संस्कार केन्द्र स्थापित किए गए हैं, जो स्थान-स्थान पर पूर्ण रूप से गतिमान हैं।

आचार्यश्री बहुआयामी प्रतिभा के धनी, आगमनिष्ठ चिन्तक एवं साहित्यकार भी हैं। आपने चिन्तन की संवेदना के धरातल पर स्तुति एवं उपदेशपरक काव्य रचनाएँ की हैं। स्तुति में भक्त अपने आराध्य के प्रति निश्छल भाव से अपने को समर्पित करता है-

''दीपक की टिम-टिम ज्योति क्या, सूरज को दिखलाना है।
इनका जीवन निरख-निरख कर अपना तेज बढ़ाना है।।
गुरुकृपा से महिमा गाई, 'हीरा' ने भगवान की।
इन चरणों में नमन करो, यहाँ बहती गंगा ज्ञान की।।''

आराध्य के प्रति सर्वस्व समर्पण का पवित्र भाव ही तो भक्ति है। किसी संत से एक प्रश्न किया गया- भक्ति की पूर्णता क्या है? उन्होंने कहा जरूरत का न रह जाना ही भक्ति की पूर्णता है। दूसरे शब्दों में प्रभु में तुम तन्मय रहो और प्रभु तुझमें समाविष्ट हो जाएं, यही भक्ति की चरम सीमा है। भक्ति का उद्देश्य है सद्‌गुणों का ग्रहण। हनुमान भक्त थे, क्योंकि उन्होंने राम के चरणों में अपना समर्पण कर दिया था। वे राममय थे और मीरा की तन्मयता कृष्ण में थी। गुरु की भक्ति संसार सीमित करने वाली है। गुरु की भक्ति भवभ्रमण को समाप्त करने वाली है।

भक्ति गुरु की होनी चाहिए। गुरु की भक्ति में क्या है? गुरु को मानने के साथ गुरु की मानना सीख जाएं तो भक्ति हो जायेगी। गुरु मुझ पर सतत रूप से अनुशासन करते रहें, यह भक्ति का रूप है। श्रद्धा भक्ति के अनेक रूप हैं। वि.स. 2072 (सन् 2015) के हिण्डौन चातुर्मास में बिन्दु रूप में वन्दना का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, मगर श्रद्धा-भक्तिवश उसने सिन्धु रूप ले लिया। 1161 भाई-बहनों ने 1008 बार वन्दना कर भक्ति प्रदर्शित की। श्री राजेशजी जैन ने 5656 एवं सुश्री काजलजी जैन ने सर्वाधिक 6111 वन्दना करने का विरुद

पाया। संघ में प्रथम बार ही यह रूप देखने को मिला है। ''गुरु की भक्ति से शक्ति मिलती है'' इस सूत्र के माध्यम से आचार्य पद रजत साधना वर्ष में अनेकानेक श्रावक-श्राविकाओं, बालक-बालिकाओं ने गुरु के पावन श्री चरणों में 1008 वन्दना कर अपने आपको समर्पित किया। अपनी भक्ति भावना प्रदर्शित की।

आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने अपने से अलग मात्र एक चातुर्मास आपश्री का वि.सं. 2044 में नागौर का करवाया था। भगवान महावीर के निर्वाण के बाद उनके भक्त शिष्य गौतम गणधर ने उनके वियोग में बड़े ही मार्मिक हृदय से अपनी व्यथा व्यक्त करते हुए कहा था कि-''भगवन्! आपने मुझको अपने से क्यों दूर किया? मैं आपसे कुछ नहीं मांगता।'' इसी तरह आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के अन्तेवासी शिष्य गुरु-भक्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की अलग चातुर्मास मिलने पर भावाभिव्यक्ति-

ओर दण्ड कोई दे दो म्हानें, बेलो अथवा तेलो हो।
दीनदयाल कृपाल मने, आगो मती मेलो हो।।
हूँ अविनीत अवगुण को घर पिण मायत राखो भेलो हो।
गुरु चरणां बिन ओ चौमासो, किम निकले ला हो।।

आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक क्षेत्र स्पर्शन के उपरान्त पुनः राजस्थान में प्रवेश किया, तबसे ही पल्लीवाल क्षेत्र में हिण्डौन वासियों की आशाएँ थी कि आचार्य भगवन्त के वर्षावास का शीघ्र ही लाभ प्राप्त होगा। दीर्घ समय से चल रही विनति पर शासन गौरव आचार्य भगवन्त ने महती कृपा कर 2015 का दीक्षा रजत वर्ष का प्रमुख चातुर्मास हिण्डौनसिटी को प्रदान किया। कोटा के यशस्वी एवं ऐतिहासिक चातुर्मास के पश्चात् आपने हिण्डौन सिटी की ओर चरण कमल बढ़ाये। गुरुदेव ने पल्लीवाल क्षेत्र में प्रवेश करते ही चातुर्मास से पहले लगभग 100 पल्लीवाल क्षेत्रों को पावन किया। आपकी पुण्यशालिता एवं अतिशय तेजस्विता इतनी प्रबल है कि जहाँ भी आप पधारे, आपकी सत्प्रेरणा से सैकड़ों आजीवन शीलव्रती बने हैं। सैंकड़ों ही निर्व्यसनी बने हैं। अनेकों ने रात्रिभोजन त्याग के नियम लिये हैं तथा अनेकों ने ही सामायिक, प्रतिक्रमण, आगमादि कंठस्थ करने के साथ स्थानक में सामायिक करने का नियम ग्रहण किया है, जिससे पल्लीवाल क्षेत्र के अनेकानेक ग्राम-नगरों में धर्म साधना बढ़ रही है। आप वीतराग संघ के प्रथम आचार्य हैं, जिन्होंने निरन्तर लगभग 100 क्षेत्रों को पावन कर वीतरागता रूपी जिनवाणी बरसाई है। आप पल्लीवालों के परमेश्वर के नाम से जाने जाते हैं। ब्रह्मचर्य व्रत सब तपों में सबसे बड़ा तप है। आचार्यप्रवर ने ब्रह्मचर्य, शील एवं सदाचार को जीवन-विकास के लिए आवश्यक बताते हुए अनेक ग्राम-नगरों में प्रेरणा की, जिसका प्रभाव पड़ा

कि पल्लीवाल क्षेत्र में 1008 शीलव्रती बने। आपश्री के पदारोहण के बाद आपने जिस भी क्षेत्र को पावन किया वहाँ पर ब्रह्मचर्य व्रती अवश्य ही बने। इस तरह आपके पदारोहण रजत वर्ष में अभी तक लगभग 4000 व्यक्ति आपसे प्रेरणा प्राप्त कर शीलव्रती बन चुके हैं।

पूज्य आचार्यप्रवर की संयमनिष्ठा, आचारपालन में दृढ़ता, जागरूकता, समता, अनुशासन-कुशलता, विनयशीलता, अप्रमत्तता, विद्वत्ता, सरलता, सहजता, निरभिमानता, प्रवचन कौशल, आत्मीयता आदि अनेक गुणों की भावपूर्ण अभिव्यक्ति हुई है। श्रावक-श्राविका समुदाय ही नहीं, अपितु अनेक जैन जैनेतर लोग आपश्री के उपकारों से उपकृत हुए हैं। स्वाध्याय, सामायिक, रात्रिभोजन-त्याग, प्रतिक्रमण-स्मरण, व्यसनमुक्ति, धर्मस्थानक में सामूहिक भोज में सीमित व्यंजन आदि आपके ऐसे अभियान हैं, जो आत्मकल्याण एवं सामाजिक हित दोनों दृष्टियों से विश्व के लिए उपयोगी हैं। आपश्री ने अपना सम्पूर्ण जीवन स्व-पर कल्याण में ही समर्पित किया, इसी के कारण आपश्री के सम्पर्क में आने वाला कोई भी व्यक्ति कभी खाली नहीं लौटता है। ऐसे आचार्य श्री के पावन पद-पंकजों में उत्तमांग शीश झुकाते हुए दीक्षा स्वर्ण जयन्ती पर मैं श्रद्धा से वन्दन-अभिनन्दन करती हूँ। *-326, उदय पथ, तिलक नगर, जयपुर-302004 (राज.)*

नमन हो हस्ती गुरुवर

डॉ. मीनाक्षी डागा

नमन हो, नमन हो, हस्ती गुरु बारम्बार,
महकते गुलशन हो, हस्ती पूज्यवर।।

आप ही के चमन की, नन्हीं कली हूँ गुरुवर,
कृपा बरसा दो, अपना वरद हस्त रखकर।।1।।
मिली-जुली है छवि आपकी, शांत सौम्य और तेज प्रखर,
मन आह्लादित होता, आपके दिव्य दर्शन पाकर।।2।।
मैं तो निहाल हुई, आपकी श्रद्धा की ओढ़ चुनर,
मन को आनन्दित करे, आपकी भक्ति की फुहार।।3।।
मैं अबोध अज्ञानी हूँ, तेरे चरणों की चाकर,
अब फिर से पथ भूल रही, राह दिखा दो फिर आकर।।4।।
दिव्य दर्शन दो फिर से, इस भौतिक चकाचौंध से बचाकर,
पूरे जग में आप ही हैं, मेरे जीवन के आधार।।5।।

-पाली-306401 (राज.)

Enlish-Section

EDUCATIONAL VALUES IN JAINA CANONS

Sh. Dulichand Jain 'Sahitya-Ratna'

(This lecture was delivered at a seminar on "Value Education" conducted by Vidya Bharati All India Educational Organisation, Tamilnadu in Chennai)

Lord Mahavira was the 24th Tīrthaṅkara of Jain religion. He was born more than 2600 years back in the year B.C. 599. Among all the great personalities of the world, he is remembered with great respect. He realised his true self and attained omniscience by practicing rigorous austerities and penances. He was an embodiment of non-violence and compassion. His preachings are relevant even today and have special significance for the spiritual advancement of mankind.

The preachings of Lord Mahāvīra are preserved in Jaina Āgamas. The Āgamic literature of Jains mainly consist of the thirty-two texts and is available in Prakrit language, which was the language of common people prevalent at that time. The Āgamas covered the knowledge of a vast array of subjects including philosophy, ethics, religion, logic, mataphysics, cosmology and astrology, which are highly relevant for the modern society also.

Lord Mahavira said, "Right Faith; Right knowledge and Right conduct together constitute the path of liberation, this is the path to be followed.[1]

He also explained that by knowledge one understands the nature of substances, by faith one believes in them, by conduct one puts an end to the flow of karmas and by austerity one attains purity.[2]

He laid great stress on right faith, which is the basis of getting spiritual knowledge. He said that the value of right fatih is much greater than possessing all the treasures of the three worlds. He also said that most important thing in our life is knowledge but knowledge should be of right type. He defined right knowledge as that which helps to understand the truth, controls the mind and purifies the soul.

In Educational values he laid great stress on character-building qualites. He said that even a little knowledge would yield great fruit if it was accompained by virtuous conduct. Without character, human birth is futile. He gave a very comprehensive definition of noble conduct. He said that it comprises of self-control, compassion, truth, non-stealing, contentment, right faith, knowledge, austerity etc. Noble conduct leads man to liberation, which is the ultimate goal of human life.

Lord Mahavira gave great importance to Ācāryas in imparting of knowledge. The Ācārya should lead a life of austerity and penance. He said-"Just as a lamp lights hundreds of other lamps yet remains lighted, so are the Ācāryas who enlighten others and remain enlightened themselves"[3]

A student should devote his life in acquiring the right type of knowledge. He said that a student should remain away from the following five obstacles, which are hindrances in the path of acquiring knowledge:- 1. Pride, 2. Anger, 3. Carelessness, 4. illness, and 5. Idlness.[4]

He laid down eight conditions that define a person as worthy of acquiring knowledge:-

1. Not to indulge in ridiculous gossip.
2. Not to lose control of mind and the senses.
3. Not to disclose secrets of others.
4. Not to be in-disciplined.
5. Not to be blameworthy.
6. Not to be covetous.
7. Not to be short-tempered.
8. Not to forsake truth.[5]

He laid emphasis on humility. He said-"He who is modest gains knowledge and he who is arrogant fails to gain it. Only he who knows these two axioms can be educated and enlightened."[6]

He further said, "Learning tempered with humility is beneficial in

this world and next. Just as a plant cannot grow without water, learning will not be fruitful without humility.[7]

He also laid stress on vigilance. He said that a student should remain away from:- 1. Intoxication, 2. Merriment, 3. Passions, 4. Inertia and 5. Gossip.[8]

He said that an indolent person can never be happy and a lethargic person can never acquire knowledge. He further said, "O man! Always be vigilant. He who is vigilant gains more and more knowledge. He who is invigilant is not blessed. Blessed is he who is always vigilant.[9]

He advised the student to use the present moment most purposefully. He said-"Follow the path of righteousness and waste not a single moment. Life is full of obstacles and so one should not postpone anything for tomorrow."[10]

A student should always keep the company of the virtuous and avoid the company of the wicked. He said-"Just as water of an earthen jar becomes aromatic in contact with fragrant lotus, but tepid and tasteless in contact with fire, so also the company of the pious enhances one's wisdom and the company of the wicked distorts one's understanding."[11]

Lord Mahavira taught spiritual values as explained above, which are an essential part of quality education. Today these values are neglected with the result that we find violence, disorder and chaos in the modern society. Hence, there is a great need for the people to be of noble character, to realise these important values which should be taught to the younger generation.

References:-

1. Uttarādhyayana Sūtra, 28.2
2. Uttarādhyayana Sūtra, 28.35
3. Uttarādhyayana Niryukti, 8
4. Uttarādhyayana Sūtra, 11.3
5. Uttarādhyayana Sūtra, 11.4-5
6. Dasavaikalika Sūtra, 9.2.22
7. Brhatkalpa-bhaṣya, 5203
8. Uttarādhyayana Niryukti, 180
9. Ṛṣibhaṣita, 35.22
10. Bṛhatkalpa-Bhaṣya, 4675
11. Mūlacara, 954

-70, T.T.K. Road, Alwarpet, Chennai-600018(T.N.)

युवा-स्तम्भ

धार्मिक क्रियाओं की प्रभावकारिता

डॉ. चंचलमल चोरडिया

आधुनिक समय धार्मिक प्रवृत्तियों के अनुकूल

आधुनिक युग में भौतिक विकास के साथ-साथ बाह्य रूप से धर्म का प्रचार-प्रसार बढ़ता हुआ प्रतीत होता है। जितने धार्मिक आयोजन, सम्मेलन, शिविर, धर्म-यात्राएँ, सत्साहित्य का प्रकाशन, तपस्याएँ, दीक्षाएँ एवं सद्गुरुओं के जन-सम्पर्क आज हो रहे हैं, उतने शायद पहले नहीं थे। सैकड़ों विद्यार्थी धार्मिक विषयों पर नवीन शोध करने में व्यस्त हैं एवं हजारों विद्वान् अपनी लेखनी द्वारा जन-जन को आध्यात्मिक प्रेरणा दे रहे हैं। हजारों स्वाध्यायी एवं प्रचारक धर्म-प्रचार में अपने अमूल्य समय का भोग दे रहे हैं। आज धर्म-शास्त्रों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हो जाने से जनसाधारण को उसका मर्म एवं रहस्य समझने के अधिक अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। पहले चाहते हुए भी आगम पढ़ने व समझने का सौभाग्य सब को प्राप्त नहीं होता था।

लक्ष्यहीन साधना अप्रभावशाली

वर्तमान में धर्म एवं सिद्धान्तों की जानकारी, सम्प्रदाय व सीमित क्षेत्रों से बढ़कर अन्तरराष्ट्रीय स्तर तक फैल रही है। मानव की बुद्धि, तर्क एवं चिन्तन में विकास हुआ है। सत्य को स्वीकारने में उसका दुराग्रह कम हुआ है। वह प्रत्येक तथ्य को अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार तर्क की कसौटी पर तोल कर, अपनी मान्यता एवं धारणा बनाने का प्रयास करता है। उसकी श्रद्धा एवं विश्वास का यही मापदण्ड बनता जा रहा है। सम्यग् ज्ञान एवं श्रद्धा के अभाव में वह चल अवश्य रहा है, परन्तु उसको अपने लक्ष्य का भान नहीं है। फलतः उसके भटकने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। इसी कारण धार्मिक क्षेत्र में इतना सब कुछ होने के बावजूद जीवन-मूल्यों का ह्रास हो रहा है, धार्मिक क्षेत्र में कट्टरता, शिथिलता, साम्प्रदायिकता, अन्धानुकरण, मूल सिद्धान्तों के विरुद्ध आचरण बढ़ रहा है। फलस्वरूप धर्म से प्रायः अधिकांश लोगों का विश्वास हटता जा रहा है। अधिकांश समाज धर्म के मूल सिद्धान्तों से भटक रहा है। हमारी लम्बे समय से नियमित साधना एवं धर्म क्रियाओं के बावजूद भी हमारे कषायों में मंदता तथा जीवन में अपेक्षित परिवर्तन बहुत कम देखने को मिलता है। जिस उद्देश्य के लिए हम सब साधना में प्रयत्नशील हैं उसे सही रूप से प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। इन सबके पीछे कुछ न कुछ कारण अवश्य हैं जिन पर सम्यग्

चिन्तन आवश्यक है। किसी कवि ने अपने भजन में कितनी मार्मिक बात कही है-

जीवन में शान्ति न जो लाता, वह धर्म नहीं बस धोखा है,
जीवन में क्रान्ति न जो लाता, वह धर्म नहीं बस धोखा है।

जो व्यापारी लाखों रुपये लगाकर व्यापार करता है एवं लाभ कमाने के स्थान पर अपनी मूल पूंजी भी गवां दे तो वह सफल व्यापारी नहीं कहला सकता। हम भोजन खाएँ और भूख नहीं मिटे, पानी पीएँ और प्यास नहीं मिटे तो हमें समझना होगा कि हम भोजन एवं पानी के रूप में अखाद्य तथा अन्य द्रव्य का सेवन कर रहे हैं।

साधना की नियमित समीक्षा आवश्यक

इसी प्रकार हम धार्मिक साधना करें एवं जीवन में बदलाव न आए, सद्गुणों एवं सद्प्रवृत्तियों का जीवन में विकास न हो, संतोष, सरलता, शान्ति, समता का प्रादुर्भाव न हो, विषय-कषाय घटने के स्थान पर बढ़ने लगें तो हमें स्वीकारना होगा कि हमारी साधना पद्धति के मूल में भूल है एवं ऐसी धार्मिक क्रियाएँ व आचरण से धर्म के नाम पर हम अपने आपको व दूसरों को धोखा दे रहे हैं।

यदि हमारी दुकान में आय बराबर न हो तो हम चिन्तित होते हैं। उसका कारण ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं। हम विचार करते हैं कि कहीं हमारे पास ग्राहकों की आवश्यकतानुसार उचित मूल्य पर माल का अभाव तो नहीं है? कहीं दुकान एकान्त में तो नहीं है? अनेक प्रश्न हमारे सामने प्रतिदिन खड़े होते हैं एवं हम आय बढ़ाने के स्रोतों का पता लगा उन्हें क्रियान्वित करते हैं।

यदि हमारा बच्चा किसी कक्षा में बार-बार अनुत्तीर्ण होता रहे तो उसको बुद्धिमान नहीं कह सकते। इसी प्रकार दीर्घकाल की साधना के बाद भी जीवन में परिवर्तन न आए तो साधना-पद्धति की भूल को सुधारना आवश्यक होता है।

आश्चर्य तो इस बात का है कि धार्मिक-क्षेत्र में हमारा दृष्टिकोण एवं मापदण्ड दूसरा ही होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि धार्मिक क्रियाएँ तो सद् गुरुओं की प्रेरणा एवं सुसंस्कार होने से परम्परागत हमको करनी पड़ती हैं। उसमें जितना उल्लास, रुचि, श्रद्धा, विश्वास-पात्रता होनी चाहिए वह नहीं होती है, अतः वर्षों की धार्मिक क्रियाओं के पश्चात् हम इस बात का पता तक नहीं करते कि हमारी साधना का लक्ष्य क्या है? उसमें कितना आगे बढ़े? अगर नहीं बढ़े तो क्यों? जीवन में कितने सद्गुणों का विकास हुआ? जीवन कितना निर्व्यसनी एवं संयमित बना। राग-द्वेष एवं विषय-कषायों में कितनी कमी आयी? साधना प्रारम्भ करने के बाद जीवन में समता, सरलता, संतोष एवं शान्ति में कितनी अभिवृद्धि हुई? हम अपने स्वभाव के कितने नजदीक आये?

यदि इन प्रश्नों के समाधानों से हम संतुष्ट हैं तो हमारा जीवन स्व-पर कल्याण के मार्ग में आगे बढ़ सकता है, अन्यथा धार्मिक अनुष्ठानों में हमारे समय, श्रम एवं साधनों का पूर्णरूपेण संतोषजनक उपयोग नहीं कहा जा सकता। साधना एवं धार्मिक क्रियाएँ हमें भार रूप लगने लगती हैं। उसमें जितना आनन्द, रस, प्रमोद एवं उत्साह होना चाहिये, नहीं होता। जो बाह्य क्रियाएँ अन्तर की प्रेरणा जागृत करने के लिए की जा रही हैं वे बाहर तक ही सीमित रह जायेंगी। अत: आवश्यक है कि धार्मिक साधना, सम्यग् चिन्तन पूर्ण हों, उसमें हमारा मन भी जुड़े, जितनी वाणी और काया जुड़ती है। अन्यथा तन से सामायिक करते हुए भी मन में समता न हो, हाथों में माला का मनका घुमाते हुए मन अन्य कार्यों में व्यस्त हों, मुँह से भले ही शास्त्रों की गाथाओं का उच्चारण करें, जब तक उस पर मनोयोग-पूर्ण चिन्तन नहीं चलेगा, जीवन में उसका प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा आवश्यक बदलाव आना कठिन होगा। विकास करना हमारा स्वभाव है एवं उसके लिए अपने लक्ष्य की ओर चलते ही रहना होगा।

साधना हेतु सही पथ प्रदर्शक आवश्यक

आगे बढ़ने के लिए आवश्यक है- या तो हमें स्वयं को सही मार्ग का ज्ञान हो अथवा हमारा सही पथ का प्रदर्शक हो। यदि न तो हमें मार्ग का ज्ञान है और न हमें सच्चे मार्गदर्शकों पर श्रद्धा एवं विश्वास है तो अपने लक्ष्य पर पहुँचना हमारे लिए कठिन होगा। अपवाद के रूप में कुछ धर्म-साधकों का जीवन अपने आराध्य के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होता है, वहाँ तर्क का कोई स्थान नहीं होता। वे तो आगम एवं गुरुवाणी को विनय एवं श्रद्धापूर्वक स्वीकारते हैं। उनके स्वभाव में सरलता, संतोष, करुणा, निस्पृहता जैसे भाव होते हैं, अतः उनकी श्रद्धा दृढ़ होती है। वे भले ही अधिक जानकारी न रखते हों, फिर भी सदैव सजग एवं सतर्क रहते हुए अपनी कमजोरियों का चिन्तन कर उन्हें दूर करने का प्रयास करते हैं। परन्तु आज के युग में जन-साधारण को सच्चे गुरु एवं मार्गदर्शक का सान्निध्य मिलना अत्यन्त कठिन होता है। यदि पथ प्रदर्शक ही भटक जायें तो स्थिति और भी विकट हो जाती है और आज ऐसी स्थिति प्राय: सामान्य हो गई है।

साधना का मूल उद्देश्य कषायों में मंदता

साधना का मूल उद्देश्य इन्द्रिय विषय एवं कषायों में मन्दता लाना है, परन्तु प्राय: ऐसा अनुभव किया जा रहा है कि आज हमारी धार्मिक क्रियायें, आयोजन, सेवा-दान के कार्य बिना चिन्तन, जन-साधारण की वाहवाही प्राप्त करने तक सीमित हो रहे हैं। जिससे कभी-कभी विषय-कषाय घटने के स्थान पर बढ़ रहे हैं। इस बात पर हमारा ध्यान ही नहीं जा रहा है। हमें हमारे मूल सिद्धान्तों का ज्ञान तक नहीं है, फिर उन पर सम्यग् श्रद्धा, चिन्तन, आचरण, समीक्षा कैसे हो?

साधना हेतु सम्यक् चिन्तन आवश्यक

डॉक्टर बनने के लिए डॉक्टरी का और इन्जीनियर बनने के लिए इंजीनियरिंग का अध्ययन आवश्यक होता है। ठीक उसी प्रकार साधक बनने अथवा साधना करने से पूर्व उसके उद्देश्य, तरीकों आदि का ज्ञान आवश्यक होता है। ज्ञान से स्वाध्याय एवं चिन्तन की ओर हमारे कदम बढ़ते हैं। सम्यक् चिन्तन से विवेक जागृत होता है। अन्धानुकरण रुकता है एवं लक्ष्य की तरफ बढ़ने में मिलने वाली अनुभूति का आभास होता है।

चिन्तन से हमारा दृष्टिकोण एकपक्षीय न होकर यथार्थवादी होता है। साधना में एकाग्रता, दृढ़ता एवं तल्लीनता आती है। चिन्तन के साथ जो भी क्रियाएँ की जायेंगी उनमें दिखावा कम होगा। साधना के सही स्वरूप का खयाल रहेगा एवं आवश्यक सावधानी हेतु सदैव सजगता रहेगी। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आध्यात्मिकता को महत्त्व मिलेगा एवं हमारे जीवन में निश्चित रूप से बदलाव आएगा। हमारी प्राथमिकताएँ एवं मापदण्ड बदलेंगे। भौतिक प्रवृत्तियों में रुचि व आकर्षण कम होगा। जीवन में समता का विकास होगा, जिससे मन अनुकूल एवं प्रतिकूल वातावरण में विचलित नहीं होगा। हमारा लक्ष्य आत्म-शान्ति की, किसी भी मूल्य पर रक्षा करने का होगा। हम संसार में रहते हुए भी अपने सभी कर्तव्यों एवं जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए भी उनमें आसक्त होने से बचने हेतु प्रयत्नशील रहेंगे।

प्रश्न खड़ा होता है कि जब चिन्तन एवं समीक्षा इतनी आवश्यक है तो धार्मिक क्षेत्र में कदम बढ़ाने वाले साधक उसकी उपेक्षा क्यों करते हैं? रूढ़िगत द्रव्य साधना मात्र से उन्हें सन्तुष्टि कैसे मिलती है? कभी सद्गुरुओं की सेवा में उपस्थित होकर अपनी वस्तु स्थिति बतलाने का प्रयास क्यों नहीं करते? साधक द्वारा गुरु से समाधान मांगने पर भी कहीं सद्गुरु ऐसा तो नहीं सोचते-जैसा करते हैं, करने दो, नहीं करने वालों से तो अच्छे हैं। साधना से उनका तन और वाणी तो स्थिर हुई है और धीरे-धीरे मन भी स्थिर हो जायेगा। अगर उन्हें अधिक प्रेरणा दी गयी तो, वे धार्मिक-स्थलों में आना ही छोड़ देंगे अथवा जिन विषय-कषाय को कम करने की प्रेरणा देनी चाहिए, उनसे वे स्वयं भी अछूते नहीं हैं।

द्रव्य एवं भाव साधना का तालमेल आवश्यक

वर्तमान में अधिकांश साधकों में सम्यग्ज्ञान का अभाव होता है एवं उनकी साधना सद्गुरुओं की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन पर आधारित रहती है। प्राय: द्रव्य साधना की ही प्रेरणा दी जाती है। विषय-कषाय को कम करने के लिए जितनी निरन्तर नियमित प्रेरणा देनी चाहिए, संकल्प कराने चाहिए, उस तरफ उपेक्षा हो रही है। विषय-कषाय की मन्दता के बिना द्रव्य साधना कितनी प्रभावकारी होगी, इस पर चिन्तन नहीं हो रहा है। अत: हम मूल को छोड़ फूल-पत्तों के सिंचन में अपना श्रम कर रहे हैं।

विषय-कषाय की मदंता एवं आध्यात्मिक आनन्द का निश्चित मापदण्ड न होने से, बाह्य साधना की गणित से हम अपनी साधना का मूल्यांकन करते हैं। हमने कितनी मालाएँ फेरी, कितने घण्टों आगम की गाथाओं का स्वाध्याय किया, कितनी सामायिक, दया-पौषध एवं अन्य व्रत प्रत्याख्यान तथा तपस्याएँ कीं? हमारा सारा प्रयास बाह्य क्रियाओं को बढ़ा-चढ़ा कर बताने एवं प्रचार-प्रसार करने का हो रहा है। हमने क्रोध को कितना जीता, मान एवं माया पर कितनी विजय पायी एवं लोभ को कितना वश में किया, प्रतिकूल एवं अनुकूल परिस्थितियों में कितना समभाव रहा, हमने सुकृत की कितनी अनुमोदना की आदि बातों की समीक्षा ही नहीं होती। हमें अपने रूढ़िगत मापदण्डों को बदलना होगा। हम अपने निज स्वभाव के कितना निकट आये, उसको हमारे अलावा वर्तमान में कोई नहीं जान सकता। हम ही हमारे सच्चे परीक्षक, निरीक्षक एवं समीक्षक हैं। जब तक हम (साधक अथवा प्रेरक) स्वयं के प्रति ईमानदार न होंगे एवं साधना की प्राथमिकता का निश्चय न कर पायेंगे तो मूल से भटककर बाह्य क्रिया-काण्डों में ही उलझ जावेंगे। जब तक मूल सुरक्षित है, बाह्य साधना उपयोगी हो सकती है, परन्तु मूल से हटने पर उसका महत्त्व नगण्य हो जाता है। जिस प्रकार अंक के साथ शून्य होने से उसका महत्त्व अधिक बढ़ जाता है, परन्तु बिना अंक शून्य का कितना महत्त्व?

इसी प्रकार जो साधना एवं क्रियाएँ हमें अपने निज स्वभाव में लाने में सहयोगी होती हैं, हमारे लिए उपयोगी हैं और जो विभाव में ले जाने वाली हैं, हमारे लिए लाभदायक नहीं हो सकतीं। साधना एवं धार्मिक क्रियाओं को करते समय इस मापदण्ड को ध्यान में रखना होगा। जो साधना आस्रव को रोक संवर एवं निर्जरा में सहयोगी हैं, हमारे लिए करणीय हैं, अन्यथा नहीं।

साधना का विकृत रूप- अहं तुष्टि

आज हमारी दृष्टि बदल गयी है, धार्मिक अनुष्ठानों से हमें कितना आदर-सत्कार, मान-प्रतिष्ठा एवं अहम् तुष्टीकरण होता है, वह सफलता का मापदण्ड बनता जा रहा है। इसी कारण जब कभी पर्युषणों एवं चातुर्मास की सफलता का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाता है तो व्रत-प्रत्याख्यान एवं तपस्याओं के आंकड़े प्रस्तुत किये जाते हैं। कितने व्यक्तियों का जीवन बदला, कितनों ने जीवन में नैतिकता एवं प्रामाणिकता का संकल्प लिया, मान एवं माया से बचने का निश्चय किया, क्रोध त्यागने एवं लोभ को वश में करने का दृढ़ मनोबल दिखाया, कितने जन पूर्वाग्रहों को छोड़ आध्यात्मिकता से जुड़े इत्यादि के आंकड़े शायद ही कहीं देखने को मिलते हैं। इसका कारण हमने उन मूल सिद्धान्तों को जितना महत्त्व देना चाहिए, नहीं दिया एवं भौतिक साधना को ही सब कुछ मान संतुष्ट होने की भूल कर रहे हैं।

अतः साधना के साथ सम्यक् चिन्तन आवश्यक होता है। उसके अभाव में हम अपने

लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते। चिन्तन के अभाव में साधना के लिए खर्च किया गया समय एवं श्रम आशा के अनुरूप उपयोगी नहीं होता। साधना के साथ चिन्तन जुड़ जाने से उसका लाभ कई गुना बढ़ जाता है। अत: साधना के साथ चिन्तन की अनिवार्यता आवश्यक है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.in

प्रेरक अनुभव

सुमिरन से मिलती शान्ति एवं एकाग्रता

श्री प्रमोद महनोत

घर से फैक्ट्री की पंद्रह किलोमीटर की यात्रा, रोज वही रास्ते, वही बाजार, वही दुकानें। कभी-कभार कुछ नया दिख जाये, बाकी तो रोज दर रोज बस पुराना सफर आँखें देखती-देखती थक जाये। विचार आया चुपचाप कार में आँखें बंद करके बैठ जाऊँ, कुछ आराम मिलेगा। कुछ हफ्ते यही सिलसिला चला।

फिर एक दिन माँ ने कहा कि आँखें मूंद कर बैठे हो तो नवकार मंत्र की माला ही फेर लिया करो, इस दौरान कर्मबन्ध से तो बचोगे। यह सुझाव काम कर गया, सफर के दौरान माला जपने से शांति का अनुभव हुआ।

शनैःशनैः एक क्रम बन गया। आरम्भ में एक माला बारह मिनट में पूर्ण होती थी, फिर दस मिनट में, फिर आठ मिनट में और आखिर में सिर्फ सात मिनट में। स्थिति सोचने योग्य हो गयी, ऐसा क्यों हुआ ? मैंने यह क्या कर लिया।

पता लगा सिर्फ औपचारिकता (Formality) हो रही है। माला, कौरी फेरने के लिए फेर रहे हैं। मन ही मन गुनगुना रहे हैं, पर उच्चारण में अस्पष्टता व्याप्त है। अर्थ पर ध्यान भी कभी-कभार ही रहता है।

लगा, मुझे बदलाव की जरूरत है, क्योंकि दोष स्वयं का है, It's time to change.

फिर नए सिरे से शुरु किया, हर पद की एक माला जपी, पाँच पद-पाँच मालाएँ। मन स्थिर हुआ, अनुभव हुआ कि मैं क्या कर रहा हूँ। अब ध्यान नहीं बंटा, कोई हड़बड़ी नहीं रही, उच्चारण शुद्ध हुआ और वापस बारह मिनट का समय लगने लगा।

पिछले दस वर्षों से इस क्रम का आनन्द ले रहा हूँ। मूल्यांकन करूँ तो व्यावहारिक जीवन में भी लाभान्वित हुआ हूँ। क्योंकि शान्तचित्त एवं बेहतर एकाग्रता से परिवार एवं व्यापार में भी सही निर्णय होते हैं।

प्रारम्भ के लिए माला या जप एकाग्रता एवं आत्मशुद्धि हेतु एक अच्छा अभ्यास है। इससे और आगे बढ़ना है तो गुणीजनों से मार्गदर्शन प्राप्त करें।

-सी-345, हंस मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

महावीर जयन्ती

भगवान महावीर का अपरिग्रह दर्शन

प्रो. सुमेरचन्द जैन

जैन दर्शन सम्मत अणगार के पंच महाव्रतों के अन्तर्गत अपरिग्रह एक महाव्रत माना गया है तथा आगारों के बारह व्रतों में पाँच अणुव्रतों के अन्तर्गत अपरिग्रह को परिग्रह परिमाण-व्रत या इच्छा परिमाण व्रत कहा गया है। अपरिग्रह व्रत की पुष्टि के लिए गुणव्रतों के अन्तर्गत दिग्विरति व्रत, पन्द्रह कर्मादान के त्याग सहित उपभोग-परिभोग-परिमाण व्रत एवं शिक्षा व्रतों के अन्तर्गत अतिथि संविभाग व्रत को सम्मिलित किया गया है।

भगवान महावीर ने अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह के महत्त्वपूर्ण सूत्र दिए। अपरिग्रह के बारे में महावीर का दृष्टिकोण रहा है- 'असंविभागो न हु तस्स मोक्खो' जो अर्थ का संविभाग नहीं करता, विसर्जन नहीं करता, वह मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकता। जीव परिग्रह के निमित्त हिंसा करता है, असत्य बोलता है, चोरी करता है, मैथुन का सेवन करता है और अत्यधिक मूर्च्छा करता है। इस प्रकार परिग्रह पाँचों पापों की जड़ है।

परिग्रह की लौकिक परिभाषा है- अर्थ और वस्तुओं का संग्रह। भगवान महावीर की भाषा इससे भिन्न है। यह शरीर परिग्रह है। संचित कर्म परिग्रह है। अर्थ और वस्तु परिग्रह है। आत्म-चैतन्य से भिन्न जो कुछ है, यदि उसके प्रति मूर्च्छा है तो वह सब परिग्रह है। यदि उसके प्रति मूर्च्छा नहीं है तो कोई भी वस्तु परिग्रह नहीं है। मूर्च्छा अपने आप में परिग्रह है। वस्तु अपने आप में परिग्रह नहीं है। वह मूर्च्छा से जुड़कर परिग्रह बनती है। जिसका मन मूर्च्छा से शून्य है, उसके लिए वस्तु केवल वस्तु है, उपयोगिता का साधन है, किन्तु परिग्रह नहीं है। जिसका मन मूर्च्छा से पूर्ण है, उसके लिए वस्तु परिग्रह का निमित्त है। इस भाषा में परिग्रह के दो रूप बनते हैं- 1. अन्तरंग परिग्रह- मूर्च्छा, 2. बाह्य परिग्रह- वस्तु।

एक बार भगवान महावीर के ज्येष्ठ शिष्य गौतम एक रंक की ओर संकेत कर बोले- 'भंते! यह कितना अपरिग्रही है? इसके पास कुछ भी नहीं है।''

'क्या उसके मन में भी कुछ नहीं है?' 'मन में तो है।'

'फिर अपरिग्रही कैसे?' जिसके मन में मूर्च्छा है और पास में कुछ नहीं, वह परिग्रह प्रिय दरिद्र है। जिसके पास जीवन निर्वाह के साधन मात्र हैं और मन में मूर्च्छा नहीं है, वह संयमी है। जिसके मन में मूर्च्छा भी नहीं है और पास में भी कुछ नहीं है, वह अपरिग्रही है। स्पष्ट है कि आसक्ति व्यक्ति और पदार्थ से नहीं जुड़ती। इसका मूल स्रोत है भीतरी मूर्च्छा

के संस्कार। एक योगी के लिए सिर्फ एक कम्बल पूरा संसार है और अन्य योगी के लिए राजमहल भी एकान्त तपोभूमि है। प्रश्न है मन कहाँ, कितना, किसके लिए आसक्त है।

चोर ने संन्यासी की कम्बल चुराई। पकड़े जाने पर जज ने पूछा- 'तुमने संन्यासी का और क्या चुराया?' चोर बोला- 'उसके पास सिवाय कम्बल के और कुछ था ही नहीं' जज ने संन्यासी से पूछा तो संन्यासी ने बड़े दुःख के साथ कहा- 'हाँ, जज साहब वही एक कम्बल मेरा पूरा संसार था। जब सोता तो मैं उसे बिछाता, उसका तकिया बनाता। ठंड लगती तो उसे ही ओढ़ता। उसी पर बैठकर पूजा-पाठ करता, मेरा तो सबकुछ वही था।'

महावीर के अनुसार मूर्च्छा परिग्रह का आत्म-पक्ष है। शोषण, विषमता, अन्याय उसका लोकपक्ष है। उससे समग्र लोकजीवन उत्पीड़ित होता है। महावीर कहते हैं- लोक पीड़ा आत्म-पीड़ा है। और आत्मपीड़ा तत्त्वतः लोकपीड़ा ही है। लोक और आत्मा के मध्य विभाजक रेखा खींचना सम्भव नहीं है। जो लोक का अपलाप करता है, वह अपना ही अपलाप करता है, जो अपना अपलाप करता है, वह लोक का भी अपलाप करता है, जो लोक की आशातना करता है, वह अपनी ही आशातना करता है। जो अपनी आशातना करता है, वह लोक की आशातना करता है।

असंग्रह का दर्शन- संग्रह शोषण का जन्मदाता है, अतः जीवन को इस प्रकार जीना है जिससे किसी का शोषण न हो, उत्पीड़न न हो, किसी का अपलाप न हो, किसी की आशातना न हो। परिग्रह का लोक पक्ष संग्रह है जो जन्मदाता है शोषण का, गरीबी का, भूख का। अतः महावीर परिग्रह के लोकपक्ष के निरसन की भी मर्यादा निरूपित करते हैं। यह प्ररूपण दो स्तरों पर है। साधु-साध्वी तो अणगार हैं अर्थात् उनका अपना आवास भी नहीं है, वस्त्र भी नहीं है, शरीर भी नहीं, अपना कुछ भी नहीं है। वे भिक्षाजीवी होते हैं। वहाँ संग्रह का प्रश्न ही नहीं उठता, जहाँ उपार्जन ही नहीं है।

भगवान महावीर ने सामाजिक मनुष्य को अपरिग्रह की दिशा में ले जाने के लिए परिग्रह-संयम का सूत्र दिया। गृहस्थ मनुष्य पूर्णतः संग्रहरहित नहीं हो सकता। जीवन चलाने के लिए भिक्षाजीवी नहीं हो सकता। उसके लिए महावीर ने इच्छा परिणाम के रूप में परिग्रह के सीमाकरण का विधान किया, दूसरे शब्दों में महावीर ने असंग्रह का दर्शन दिया। संग्रहशील व्यक्ति अर्थार्जन की प्रक्रिया में शोषण और अप्रामाणिकता के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ लेता है। अर्थ के प्रति मन की आसक्ति का जब योग होता है तो विलासी जीवन जीने की चाह जागृत होती है। व्यक्ति संग्रह करने में जुट जाता है। प्रारम्भ में वह अर्थ की आवश्यकता से प्रेरित होकर अर्थ का अर्जन करता है। अर्जन के साथ संवर्द्धन की कामना उसे सुविधावाद की ओर अग्रसर करती है।

गृहस्थ सामाजिक जीवन जीता है। उसके लिए अर्थ का उपार्जन आवश्यकता है। जीवन में साधनों का संचय आवश्यक है। किन्तु साधनों को इस प्रकार उपार्जित किया जाए कि किसी का उत्पीड़न न हो एवं आवश्यकतानुसार ही उसका उपयोग किया जाए। उसके प्रति स्वामित्व की भावना कदापि न रहे। दूसरे के भाग का अपहरण न हो, इसकी जागरूकता रहे और इसके लिए यथासम्भव त्याग भी किया जाए। यह महावीर का गृहस्थ जीवन के संदर्भ में अपरिग्रह मूलक आदर्श है, जिसकी व्रतों द्वारा निश्चित सीमाएँ बाँध दी गयी हैं।

संग्रह के दो पक्ष हैं- उपार्जन पक्ष और उपभोग पक्ष। प्रथम उपार्जन पक्ष है। इस दृष्टि से अनेक व्यवसायों को महावीर ने अतिचार माना है और इन्हें एकदम छोड़ देने की प्रेरणा दी है। महावीर उन व्यवसायों का भी विवर्जन करते हैं जिनमें दूसरे प्राणियों की हानि हो। व्यावसायिक प्रकियाओं में समाविष्ट होने वाली अनैतिकताओं को भी उन्होंने वर्जित किया है।

दूसरा पक्ष है- इच्छा परिमाण। संग्रह का मूल इच्छा है, इच्छा आवश्यकता से अलग है। आवश्यकता है शरीर की और इच्छा है मन की। आवश्यकता का परिमाण नहीं हो सकता। वह अपने आपमें न्यूनतम ही होती है। साधु-साध्वियों को भी आवश्यकता पूर्ति करनी पड़ती है। यह परिग्रह नहीं है। जो वस्त्र, पात्र, कम्बल आदि साधन हैं, वे मात्र संयम जीवन धारण करने के लिए हैं। वे अनिवार्य हैं, परिमाण करने का विषय है- इच्छाएँ जो कभी तृप्त होती ही नहीं। महावीर के शब्दों में- कैलाश पर्वत जितने बड़े सोने चाँदी के अगणित ढेर हों तो भी लोभी मानव का मन संतुष्ट नहीं होता, क्योंकि इच्छाएँ आकाश की तरह अनन्त होती हैं। इच्छाओं का अतिरेक ही शोषण, संग्रह, विषमता और हर प्रकार की अप्रामाणिकता का हेतु बनता है। भारत की वर्तमान स्थिति को देखा जाए तो सारा दृश्य अमर्यादित इच्छाओं की कुत्सा को प्रतिबिम्बित करता है। महावीर प्रारम्भ से ही इच्छा परिमाण व्रत तथा अतिचार विवर्जन द्वारा अर्जन को मर्यादित करने का मार्ग निरूपित करते हैं।

संग्रह की मनोवृत्ति मनुष्य से अन्याय करवाती है और समाजिक धरातल पर विषमता के अंकुर फूट पड़ते हैं। संग्रह की दुःखद परिणति का अनुभव कर भगवान महावीर ने कहा था- 'इच्छाओं पर नियंत्रण करो। अनियंत्रित कामनाएँ व्यक्ति से अवांछनीय कार्य करवा देती हैं। अवांछनीय परिस्थितियों से बचने के लिए संग्रह मत करो। उपभोग-परिभोग में आने वाली सामग्री का सीमाकंन करो। ऐसा करने वाला व्यक्ति स्वयं स्वस्थ जीवन जी सकता है और अभाव एवं विलासिता की अतियों को तोड़ सकता है। संकट से घिरी हुई विश्व-चेतना को उबारने के लिए भगवान महावीर के अपरिग्रह दर्शन अर्थात् असंग्रह दर्शन को समझना होगा। जब तक व्यक्ति के मन में संग्रह की अभीप्सा का अन्त नहीं होगा,

विश्व व्यापी संकट का समाधान नहीं हो सकता।

यह स्मरणीय है कि भगवान महावीर ने मुनि के लिए अपरिग्रह का विधान किया है, गृहस्थ के लिए इच्छा-परिमाण की बात कही। गृहस्थ को इच्छा-परिमाण करना चाहिए। जो आकाश की तरह अनन्त इच्छाएँ है, उनकी कोई न कोई सीमा करनी चाहिए। सीमा के लिए उन्होंने दो बातें बतलाई- पहली बात अर्जन के साधन अशुद्ध नहीं होने चाहिए, अप्रामाणिक नहीं होने चाहिए। महावीर की पूरी आचार संहिता है गृहस्थ के लिए। उसमें अप्रामाणिकता के जितने व्यवहार हैं, उन सबका वर्णन किया है। दूसरी बात है- अर्जित धन का उपयोग अपने विलास के लिए न किया जाए, व्यक्तिगत संयम किया जाए। ये दोनों बातें होती हैं तो फिर कितना ही कमाए, इस पर कोई नियंत्रण नहीं होता।

एक व्यक्ति शुद्ध साधन से कमाता है, लाखों करोड़ों कमा लेता है। कमा लेने पर उसका उपयोग वह अपने लिए नहीं करता। अपने लिए पूरा संयम करता है। जैसे आनन्द श्रावक का जीवन था। करोड़ों की सम्पदा, करोड़ों का व्यापार, किन्तु अपने लिए बहुत संयमी। ये दो शर्ते हैं गृहस्थ के लिए अपरिग्रह की प्रारम्भिक भूमिका की। ये दोनों महत्त्वपूर्ण हैं।

उपर्युक्त सब बातों में सर्वत्र व्याप्त है- अपरिग्रह दर्शन। भावना के स्तर पर यह ममत्व का विसर्जन है और लोक जीवन में व्यवस्था के स्तर पर स्वामित्व का विसर्जन है, महावीर प्रणीत अर्थ-व्यवस्था में व्यक्तिगत स्वामित्व के लिए कोई साधन नहीं है। महावीर स्वामित्व का सम्पूर्णतः उन्मूलन स्वस्थ आर्थिक सामाजिक जीवन-व्यवस्था के लिए आवश्यक मानते हैं। इसका अर्थ है- व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण क्षमता और ज्ञान का नियोजन कर प्राप्त अर्जन में से अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसमें से उपयोग करे और शेष को विसर्जित कर दे। इन सबसे ऊपर की बात यह है कि स्वामित्व की भावना न उसमें रखे जिसका उपयोग परिभोग कर रहा है और न उसमें जिसका विसर्जन कर रहा है।

गाँधीजी की ट्रस्टीशिप की परिकल्पना में भी अनासक्ति एवं असंग्रहवृत्ति का भाव छिपा हुआ था। यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने भी 'रिपब्लिक' में स्वामित्वमुक्त आर्थिक, सामाजिक व्यवस्था का एक आदर्श चित्र उपस्थित किया है जो महावीर के अपरिग्रह सूत्र के समकक्ष है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि महावीर का अपरिग्रह दर्शन आज के युग में व्याप्त आर्थिक विषमता का समाधान देता है। भारत जैसे देश में करोड़ों-अरबों रुपये के होने वाले घोटालों के पीछे मूल कारण अनियंत्रित इच्छाएँ, उनकी पूर्ति की लालसा और संग्रह की प्रवृत्ति है। भगवान महावीर का इच्छा परिमाण सिद्धान्त ही इस गहन तिमिर में प्रकाश की एक किरण है।

-10, इण्डस्ट्रियल एरिया, रानी बाजार, बीकानेर-334001 (राज.)

नारी-स्तम्भ

गर्भस्थ बच्चे की हत्या का आँखों देखा विवरण

श्रीमती सुमन कोठारी

आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी महाराज साहब जब पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. की 106 वीं जन्म-जयन्ती के अवसर पर नित्यानन्दनगर में विशाल जन समूह के समक्ष अपने हृदय की पीड़ा व्यक्त करते हुए, आचार्य श्री ने भ्रूण हत्या को रोकने के लिये असीम व्यथा के साथ फरमाया यदि आप भ्रूण हत्या करने वालों को रोक नहीं सकते तो कम से कम यह नियम ग्रहण करें कि भ्रूण हत्या स्वयं करवायेंगे नहीं एवं करने वालो का अनुमोदन नहीं करेंगे। आचार्य भगवन्त की प्रेरणा पूर्ण उद्बोधन से ही यह लेख लिखने के भाव हुए। हृदय असीम करुणा से भर उठा, आँखे नम हो गयी।

वर्ष 1984 में 'नेशनल राइट्स टू लाइफ कन्वेन्शन' कनास सिटी मिस्सौरी में हुआ था। इसी सम्मेलन की एक प्रतिनिधि Mrs. Sandy Ressal ने Dr. Bernand Nattanson के द्वारा एक (Suction abortion) गर्भपात की अल्ट्रा साउण्ड मूवी का जो आँखों देखा विवरण दिया था, वह उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है-

''गर्भ की वह मासूम बच्ची अभी दस सप्ताह की थी एवं काफी चुस्त थी। हम उसे माँ के कोख में खेलते, करवट बदलते व अगूंठा चूसते हुए देख रहे थे। उसके दिल की धड़कनों को भी हम देख पा रहे थे और वह उस समय 120 की सामान्य गति से धड़क रही थी। सब कुछ सामान्य था, किन्तु जैसे ही पहले औजार (Suction Pump) ने गर्भाशय की दीवार को छुआ, वह मासूम बच्ची डर से एकदम घूमकर सिमट गयी। उसके दिल की धड़कन काफी बढ़ गयी।

हम दहशत से भरे यह देख रहे थे कि किस तरह वह औजार उस नन्हीं मुन्नी मासूम गुड़िया सी बच्ची के टुकड़े-टुकड़े कर रहा था। पहले कमर, स्पाइन, फिर पैर के टुकड़े-टुकड़े जैसे कोई गाजर-मूली हो। वह बच्ची दर्द व पीड़ा से छटपटाती हुई घूम-घूमकर तड़पती हुई इस हत्यारे औजार से बचने का प्रयत्न कर रही थी। डर के कारण उसकी दिल की धड़कन 200 तक पहुँच गयी। मैंने स्वयं अपनी आँखों से उसको अपना सिर पीछे झटकते हुए एवं मुँह खोलकर चीखने का प्रयत्न करते हुए जिसे डॉ. नैथान्सन ने उचित ही (Silent Scream) मूक चीख कहा है, स्वयं देखा। अन्त में हमने वह नृशंस व बीभत्स दृश्य भी देखा, जब सँडासी उसकी खोपड़ी को तोड़ने के लिये उसकी तलाश कर रही थी, और

फिर दबाकर तोड़ रही थी, क्योंकि सिर का वह भाग बगैर तोड़े सक्शन ट्यूब के माध्यम से बाहर नहीं निकाला जा सकता था।

हत्या के इस बीभत्स खेल को सम्पन्न करने में करीब 15 मिनट का समय लगा और इसके दर्दनाक दृश्य का अनुमान इससे अधिक और कैसे लगाया जा सकता है कि जिस डॉक्टर ने यह ऑपरेशन किया था और कौतुहलवश यह फिल्म बनवा ली थी, जब उसने फिल्म स्वयं ने देखी तो अपनी क्लिनिक को छोड़कर चला गया, एवं फिर वापस नहीं आया।

गर्भस्थ शिशु की हत्या व उसकी वेदना को दर्शाने वाली फिल्म को जब भूतपूर्व अमरीकी प्रेसिडैन्ट श्री रोनाल्ड रीगन ने देखा तो श्री रीगन ने abortion law को बदलने की इच्छा प्रकट की। मदर टैरेसा ने कहा कि गर्भपात गर्भाशय में बालक की हत्या ही है। यदि हम यह स्वीकार कर लें कि एक माँ अपने बच्चे की हत्या कर सकती है तो हम दूसरों से कैसे कह सकते हैं कि वे एक दूसरे की हत्या न करें।''

हम सब करुणा के अवतारी, अहिंसा के पुजारी, महा उपकारी वीतराग भगवन्त महावीर की सन्तान हैं, जिन्होंने जिनवाणी के माध्यम से सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों की हिंसा के त्याग की हमें प्रेरणा प्रदान की है, भ्रूण हत्या तो साक्षात् पंचेन्द्रिय जीव की हिंसा ही है। हम सब आचार्य भगवन्त की अनन्त पीड़ा को समझते हुए, भ्रूण हत्या का निषेध करें, इसी मंगल भावना के साथ।

-जयपुर (राज.)

ऐ मेरे भगवन्

सुश्री निधि जैन

ऐ मेरे भगवन् तू मुझको ये रहमत दे।
दुर्गुणों को छोड़कर सद्गुणों को पाऊँ मैं।।
निंदा किसी की मैं किसी से भी ना करूँ।
मैं सदाचारी बनूँ, तुझको ही ध्याऊ मैं।।
ऐ मेरे.....।।1।।
जीवन में न मेरे कभी भी अहं भाव आए।
हे प्रभो मुझको तू इतना सा ही बल देना।।
ऐ मेरे.....।।2।।
पथ के प्रदर्शक हो तुम्हीं, मम चित्त के मर्मज्ञ।
बस एक यही है प्रार्थना तेरी शरण पाऊँ।।
ऐ मेरे.....।।3।।

-टाईप वाले, खेरली गंज, जिला-अलवर (राज.)

78 वें जन्म-दिवस पर

जय बोलो-बोलो रे पूज्यवर हीरा की

श्री मगनचन्द जैन

जय बोलो-बोलो रे पूज्यवर हीरा की।
गुण-कीर्ति गावो रे पूज्यवर हीरा की।।
पंच महाव्रत पालन करते,
समिति-गुप्ति को ध्यान में रखते,
षट्-काया की रक्षा करते,
शासन का संचालन करते,
वन्दना करलो- करलो रे छत्तीस गुणधारी की।
गुण-कीर्ति गावो रे गुरुवर हीरा की।।
राग-द्वेष चित्त में नहीं धरते,
समभावों में सदा विचरते,
आगत भक्तों की सुधि लेते,
सामायिक से इन्हें जोड़ते,
शिक्षा मानो-मानो रे पूज्यवर गुरुवर की।
गुण-कीर्ति गावो रे गुरुवर हीरा की।।
ढलती उम्र फिर भी नहीं थकते,
सिद्धान्तों में सदा दृढ़ रहते,
मनोभाव भक्तों का समझते,
सही मार्ग उनको बतलाते,
चरण-धूलि मस्तक से लगालो रे अपने गुरुवर की।
गुण-कीर्ति गावो रे गुरुवर हीरा की।।
व्यसनी को निर्व्यसनी बनाते,
फैशन-सुधार की शिक्षा देते,
सुषुप्त-जनों को जाग्रत करते,
धर्म-मार्ग में उन्हें बढ़ाते,
'मगन' अब शरण ग्रहण करलो हस्ती-पट्टधर की।
गुण-कीर्ति गावो रे गुरुवर हीरा की।। जय बोलो....।।

-ग्राम फाजिलाबाद, तह. हिण्डौन, जिला-करौली (राज.)

अमृत संस्कार चिन्तन,

समभाव

डॉ. रमेश 'मयंक'

मानव-जीवन
अत्यन्त दुर्गम और दुर्लभ
यह पुनः प्राप्त होगा या नहीं
इसकी अनिश्चितता को देखकर
किसी ने भी निश्चितता नहीं कही

आइए-
संशय को दूर करें
जितना सार्थक यह जीवन कर सकें
उतना अवश्य करें,

ऐन्द्रियक सुखों में उलझकर
जीवन का महत्त्व नहीं समझ पाते
सत्य को नहीं जानते
बोध से रह जाते अनजान,
बिना सज्जन-संगति
और स्वाध्याय के बनना चाहते महान्

अवसर का लाभ नहीं उठाया
और चूक गए तो
जब आएगा- अवसान
तब-
पश्चात्ताप मात्र रह जाएगा
बीता हुआ समय
लौटकर नहीं आएगा

आओ-
समय की नब्ज को पहचान जाएँ
सही उपयोग में

अपना समय-जीवन और ऊर्जा लगाएँ
मनुष्यत्व को अपनाएँ
धर्म श्रवण में मन रमाएँ
श्रद्धा-संयम से पराक्रम को अपनाएँ

जब अपने सोच में बदलाव आएगा
दुःख मुक्ति हेतु भटकना नहीं होगा
समभाव बनेगा अमोघ कवच
आत्मा रूपी निर्मल गगन में
अपनी प्रखरता से उदित होगा
समभाव रूपी सूर्य बनकर सच

दुःख का कारण- मानसिक विषमता
जिसे मिटाया जा सकता है
मन में लाकर भावमय समता
सामायिक से पापों का त्याग करें
स्वाध्याय से ज्ञान का अनुराग करें
तप द्वारा होती मुक्ति
कथन को स्वीकार- निर्विवाद करें।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

सन्तों का संग

श्री रेणुमल जैन

श्रेणिक को समझाते-समझाते रानी चेलना का पूरा जीवन चला गया, पर वही राजा अनाथी मुनि के चरणों में उपस्थित हुआ तो दृढ़धर्मी श्रावक बन जाता है, रागी-वैरागी बन जाता है और साधना मार्ग में आगे भी बढ़ सकता है। संतों का दर्शन-वंदन समकित दिखाने में सहायक होता है। वैराग्य जगा सकता है और संसार सागर से पार पहुँचा सकता है।

श्रमण भगवान महावीर ने एक अपूर्व बात कही है, देवताओं को भी यदि मोक्ष चाहिए तो मनुष्य जन्म को धारण करना पड़ेगा। मनुष्य का यह परम सौभाग्य है कि वह परमात्म पद को प्राप्त करने की साधना कर सकता है। मनुष्य जीवन तो सुवर्ण-मिट्टी के समान है। इसमें स्वर्ण के अंश को और मिट्टी के अंश को अलग करना ही जीवन की कृतार्थता, पूर्णता और सफलता है।

-स्वास्तिक प्लाईवुड, एफ-2, अंजुमन कम्पलेक्स, सदर-नागपुर (महा.)

धारावाहिक

लगन की वेला (18)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

(गतांक से आगे)

दोनों नवयुवक इस वार्तालाप से बहुत प्रभावित हुए। शिवसुन्दर तो आचार्यदेव के दर्शन करने के लिये लालायित हो गया। उसने पूछा- "अभी यहाँ कितने मुनि हैं?"

"तात! तुम अभी तक दर्शन करने नहीं गये?"

शिवसुन्दर इस प्रश्न से लज्जित हो गया। उसने मंद स्वर में पिता से कहा- "गया था- केवल एक बार, आया था उसी दिन।"

सार्थवाह ने आश्चर्य से कहा- "फिर नहीं गये! गुरुदर्शन प्रतिदिन करना चाहिये। तुम्हें किसी ने दर्शन के लिये नहीं कहा?"

"हाँ, नहीं गया"- अपराध-सा अनुभव करता हुआ वह बोला- "मुझे कुछ आता तो है नहीं। क्या करता वहाँ जाकर?"

"तुम्हें नमोक्कार भी याद नहीं है? गुरु-वंदना भी याद नहीं है?"

"नमोक्कार तो बिलकुल शुद्ध याद है"- वह कुछ गौरव से बोला- "उसका स्मरण तो नित्य प्रति चलता रहता है। परन्तु गुरु-वन्दन टूटा-फूटा हो गया है।"

"वत्स! इसमें तुम्हारा दोष नहीं, मेरा ही दोष है। मैंने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। मैं यह भूल गया कि कलायतन में मात्र ऐहिक ज्ञान दिया गया है और अभी धार्मिक ज्ञान पाना तुम्हें शेष है। मेरा कर्त्तव्य था कि तुम्हें स्वयं मैं अपने गुरुदेव के दर्शन के लिय ले जाता। तुम्हें धार्मिक ज्ञान के अर्जन की प्रेरणा देता। परन्तु मैं चूक गया। आज सायंकाल मेरे साथ चलना। मैं गुरुदेव से तुम्हारा परिचय करा दूँगा।" फिर प्रायश्चित्त कर रहे हों, ऐसी मुद्रा में बोले- "यदि इच्छा हो तो अभी चलो।"

"तात! आप अभी ही उधर से पधारे हैं। आप कष्ट न करें। कुछ देर बाद मैं स्वयं ही चला जाऊँगा। क्या गुरुदेव मुझसे बातचीत करेंगे?"

"अवसर होगा तो अवश्य वार्तालाप करेंगे। धर्म-प्रेरणा देंगे। कुछ तत्त्व की बातें समझायेंगे। कदाचित् यह न भी हो तो भी दर्शन करने जाना।"

"तब तो ठीक है, तात! मैं स्वयं ही चला जाऊँगा।"

"यदि चलना हो तो चलो। मैं उधर होकर घर निकल जाऊँगा।"

गंगेश ने उत्सुकता दिखलायी- "मेरे पिताजी भी आचार्यश्री की प्रशंसा कर रहे थे। तुम

जैन लोगों के सिवाय अन्य जनों में भी आचार्यश्री के प्रति बहुमान है। कई लोग उनमें अपने इष्टदेव के दर्शन करते हैं। चलो, ऐसे पुण्यात्मा का मुझे भी दर्शन-लाभ हो जायेगा।''

इस बात से उत्साह से युक्त हो गया शिवसुन्दर! उसने वस्त्र पहने और गंगेश के साथ प्रस्थान किया। वे सीधे मार्ग से उपाश्रय की ओर न जाकर राजमार्ग से निकल गये। रास्ते में नगरश्रेष्ठी का भवन आया। उनकी दृष्टि उस भवन पर पड़ी। अभी एक घड़ी पूर्व ही अरुण कई दिनों के बाद गुरुदेव के दर्शन के लिये वहाँ से रवाना हुआ था। भवन देखकर दोनों के पैर ठिठक गये।

शिवसुन्दर ने कहा- ''यह नगरश्रेष्ठीजी का भवन है।''

गंगेश ने कहा- ''हाँ! मिलना है- अरुण से?''

''हाँ, मन तो होता है। अभी वह यहाँ है या नहीं- क्या पता? सुहृद्! उससे परिचय तो करना है। पर फिर कभी। अभी तो गुरुदर्शन के लिये ही चलें।'' वे संकोच से भवन के सोपान पर चढ़ते-चढ़ते रुक गये और आगे बढ़ गये।

अरुण आज अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध उपाश्रय चला। उसका मन अस्वस्थ था। पिता के अकारण विरोध और अपने पर नियन्त्रण से उसे क्षोभ था। परन्तु कुछ दूर चलने पर उसने अन्तर की आकुलता को बुहार कर अलग फेंक दिया और गुरुदेव को देखते ही प्रसन्न होकर स्थानक में प्रवेश किया। वह स्थानक कई दिनों में आया था। आचार्यदेव ने उसकी ओर वात्सल्य भाव से देखा और वह निहाल हो गया। उसने आचार्यदेव की गद्गद् भाव से विधियुक्त वंदना की। आचार्यदेव ने पूछा-''अरुण! इतने दिन दिखाई नहीं दिये? क्या कहीं बाहर गये थे?''

''जी, गुरुदेव! बाहर भी गया था और प्रतिबन्ध में भी था।''

''प्रतिबन्ध में थे? नगरश्रेष्ठीजी के?''- गुरुदेव ने पूछा।

''हाँ, गुरुदेव! मैं अब युवा जो हो गया हूँ?''

''अच्छा, श्रेष्ठीजी को यह भय लग गया कि कहीं मेरा राजा-बेटा साधु न बन जाये। या तुमने कुछ कहा था?''

''नहीं, गुरुदेव! मैंने तो अभी कुछ नहीं कहा। उन्हें आशंका हुई है, इसलिए वे मुझे नगर में अपनी दृष्टि से बाहर कहीं भी जाने देना नहीं चाहते और इसीलिए उन्होंने मुझे बाहर जनपद में भेज दिया। आज भी बड़ी मुश्किल से आया हूँ।''

''नियम तो सब पल रहे हैं?'' हाँ, गुरुदेव! रात्रि भोजन का त्याग पालने में बड़ी कठिनाई आयी, परन्तु आपकी कृपा से मनोबल दृढ़ रहा। आपका स्मरण बल देता रहा, प्रभो!''

"अभी कई दिनों से श्रेष्ठीजी नहीं आये। लगता है- मुझसे अप्रसन्न हैं।"

"भन्ते! आप से तो क्या अप्रसन्न हो सकते हैं? आपके प्रति तो उनके मन में भक्ति है। पर, बेटे का मोह है न। यों भी वे धर्मक्रियाओं में शिथिल हैं। फिर भी आस्था-विहीन नहीं हैं। भन्ते! पिताजी के प्रतिबन्ध के कारण ही मुझे आपके दर्शन नहीं मिले।"

"वत्स! जैसा तुम्हारा अवसर।"

अरुण ने अन्य संतों के दर्शन किये। उनकी जिज्ञासा का भी समाधान किया। इसमें कुछ समय व्यतीत हो गया। वह सामायिक करने के लिये उद्यत हो रहा था, तभी उसे शिवसुन्दर और गंगेश उपाश्रय में प्रविष्ट होते हुए दिखाई दिये। उन्हें देखकर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। पर वे दोनों अभी उसे न देख पाये थे।

उन दोनों ने आचार्यदेव को वंदन किया। उनके वंदन की पद्धति से आचार्यश्री को अनुमान हो गया कि एक जैन है- एक जैनेतर। उन्हें आचार्यदेव ने पूछा- "यहीं के हो, देवानुप्रिय?"

अरुण समझ गया कि वे आज ही आये हैं। वह उनका परिचय करवाने के लिये आगे बढ़ा। उन दोनों ने जब अरुण को वहाँ देखा, तब वे उसे पहचानते ही प्रसन्न हो गये। उसने उन्हें "जयजिनेन्द्र" कहकर, उनका अभिवादन किया और उन्होंने भी अभिवादन किया। अरुण ने फिर उन्हें कहा-"लगता है कि आप आज ही पधारे हैं"। वे कुछ उत्तर दें, उसके पहले ही वह आचार्यदेव से उनका परिचय देते हुए बोला- "गुरुदेव! इनका नाम है शिवसुन्दर। ये सार्थवाह गुणसुन्दरजी के सुपुत्र हैं और इनका नाम है- गंगेश। आप महेश्वरदत्तजी शैव के सुपुत्र हैं। ये दोनों आपके यहाँ स्थिरवास विराजने के पूर्व ही महा कलायतान में कला के अध्ययन के लिये चले गये थे। अध्ययन पूर्ण करके अभी कुछ दिन पूर्व ही लौटे हैं।"

उन दोनों को अरुण का व्यवहार अच्छा लगा। शिवसुन्दर को उसकी बात के ढंग से लगा कि यह आचार्यदेव का प्रिय पात्र है। इसकी गुरुदेव के पास भी अच्छी पेठ है। गंगेश ने सोचा- 'बड़े घर का बेटा है, अतः आचार्यजी को प्यारा होगा ही।' परन्तु दोनों ने उसके द्वारा आचार्यश्री को अपने परिचय देने से राहत पायी। वे जिससे मिलना चाहते थे वह अनायास ही यहाँ मिल गया। अतः वे प्रसन्न हुए। उन्हें उसका सहज ढंग से वार्तालाप करना बहुत सुहाया।

गुरुदेव ने अरुण से पूछा- "देवानुप्रिय! ये तुम्हारे मित्र हैं?"

"भन्ते! ये चाहेंगे तो अब मैं इनका मित्र बन जाऊँगा"- वे अरुण की इस बात से आनन्दित हो गये। गंगेश बोला- "आपकी मित्रता कौन नहीं चाहेगा?" शिवसुन्दर ने

कहा- ''जिस दिन आपने मुक्तामाला पहनायी, उसी दिन से मैं तो आपको अपना मित्र ही मान रहा हूँ।'' अरुण ने प्रसन्न होकर कहा- ''मैं सौभाग्यशाली हूँ कि आप मुझे अपना मित्र मान रहे हैं। मेरे बालमित्र तो मुझसे बिछुड़ गये हैं। आपसे मित्रता पाकर मैं धन्य हूँ। आप मेरे सच्चे मित्र बनेंगे ही- यह मुझे विश्वास हो गया है। क्योंकि गुरुदेव वचन-सिद्ध महात्मा हैं।'' उसकी बात सुनकर दोनों का हृदय प्रफुल्लित हो गया। फिर अरुण ने उनसे कहा- ''अब आप गुरुदेव से धर्म-चर्चा करिये। मैं आज उपाश्रय में बहुत दिनों से आया हूँ। अतः सामायिक कर लूँ।'' शिवसुन्दर ने उसे कहा- ''ठीक है, सखे! मुझे धर्मक्रियाओं का ज्ञान नहीं है, आप प्रसन्नता से सामायिक करिये।''

''चाह हो तो ज्ञान भी आता ही है।''- यह कहकर वह सामायिक करने एक ओर चला गया। वह उत्साह से आराधना में लग गया।

वे दोनों आचार्यदेव के सम्मुख बैठ गये। आचार्यदेव ने शिवसुन्दर से पूछा- ''क्या कुछ दिन पहले तुम आये थे?'' ''हाँ, गुरुदेव! आया था। दर्शन करके और मंगल-पाठ सुनकर चला गया था।'' गुरुदेव ने गंगेश से कहा- ''आयुष्मन्! महेश्वरदत्तजी भी कभी-कभी आ जाते हैं।'' ''पिताजी के मुँह से ही आप पूज्यवर की महिमा सुनी थी। सौभाग्य से आज आपश्री के दर्शन हो गये।''

आचार्यदेव ने शिवसुन्दर की ओर देखकर कहा- ''आयुष्मन्! धर्म तत्त्व समझने का कुछ प्रयास किया है?' ''गुरुदेव! अभी तक लौकिक ज्ञान के उपार्जन में लगा रहा। इस ओर कुछ भी प्रयास नहीं किया। जिज्ञासा तो है, यदि आज्ञा हो तो कुछ पूछूँ?''

''जिज्ञासा ज्ञान का ही नहीं, धर्म का प्रवेश द्वार है, वत्स! जिज्ञासु को ज्ञान देना हमारा कर्त्तव्य है। प्रसन्नता से पूछो।''

शिवसुन्दर का संकोच दूर हो गया। उसने विनम्र शब्दों में पूछा- ''पूज्यवर! परलोक है क्या?'' गुरुदेव ने उलट कर उसी से पूछा- ''क्या तुम्हें परलोक की प्रतीति होती है?'' ''गुरुदेव! ऐसी तो कुछ प्रतीति नहीं होती है। यदि ऐसी प्रतीति होती तो यह प्रश्न ही नहीं उठता।''

''आयुष्मन्! जरा चिन्तन करो। परलोक शब्द का क्या अर्थ है?''

''परलोक अर्थात् दूसरा लोक।'' दूसरा लोक अर्थात् क्या?''

'इस पृथ्वी के सिवाय दूसरा स्थान।''

आचार्यश्री ने पूछा- ''आप दूसरे नगर शब्द से दूसरे स्थान पर बने हुए मकान आदि ही आशय लेते हैं कि उसमें रहने वाले जीवों का आशय लेते हैं?'' ''दोनों ही आशय ग्रहण करते हैं।'' मान लो, उस नगर में एक भी मनुष्य नहीं रहे तो आप उसे नगर कहोगे?'' ''है

तो वह भूतपूर्व नगर ही।'' ''भूतपूर्व क्यों? मकान-महल तो उसमें हैं ही।'' ''परन्तु मनुष्य तो नहीं है।''

''आयुष्मन्! अब प्रधान अर्थ को समझ लें। नगर शब्द से प्रधान रूप से 'उसमें रहने वाले मनुष्य' और गौण रूप से 'स्थान' अर्थ गृहीत होता है। वैसे ही लोक शब्द से प्रधान रूप से 'जीव' और गौण रूप से जहाँ जीव रहते हैं, वह क्षेत्र गृहीत होता है। अपने से भिन्न जाति के जीव भी लोक ही हैं। तुम्हें हाथी-घोड़े, कीड़े-मकोड़े आदि दिखायी देते हैं कि नहीं?''

''ये तो दिखाई देते ही हैं।'' ''ये भी तो परलोक ही हैं। क्या उनका लोक तुम से भिन्न नहीं है? उनके आकार-प्रकार, वृत्ति आदि की भिन्नता के कारण ये परलोक ही हैं। इसी प्रकार नारक, देव आदि भी परलोक हैं।''

''परन्तु वे हमें दिखायी तो देते ही नहीं।''- गंगेश ने कहा।

''पूरा पशुलोक भी हमें कहाँ दिखायी देता है''- आचार्यदेव बोले- ''जितना वह हमारे समीप है, उसमें भी जो हमारी इन्द्रियों के गम्य है, उसे उतना ही हम देख सकते हैं। अन्धा तो उतना भी नहीं देख पाता है, परन्तु जिन्हें वह नहीं देखता है- उनका अभाव है, ऐसा न वह कहता है और न मानता है, क्योंकि वह यह समझता है कि मेरा देखना या नहीं देखना- ये मेरी क्रियाएँ हैं। इससे पदार्थ के अस्तित्व या नास्तित्व का कुछ सम्बन्ध नहीं है और अन्य स्थान को नहीं देखता हूँ तो वहाँ मेरा गमन नहीं होगा- यह भी वह नहीं मानता है। इसी प्रकार हम नहीं देखते हैं, अतः परलोक नहीं- स्वर्ग-नरक नहीं हैं, यह बात सुज्ञ मानव नहीं मान सकते। जब हमें हमारी, हमसे निम्न कोटि के जीव पशु आदि की प्रतीति हो रही है, तब हमसे विशिष्ट पुण्यफल भोगने वाले देव और विशिष्ट पापफल भोगने वाले नरक जीवों का अस्तित्व भी है ही। परन्तु तुम्हारा आशय तो यह है कि जीव परलोक में जाता है या नहीं?''

''हाँ, मेरा यही आशय है, गुरुदेव!'' -शिवसुन्दर ने सहर्ष कहा।

''आयुष्मन्! कोई नया पदार्थ उत्पन्न नहीं होता और कोई भी पदार्थ बिल्कुल नष्ट भी नहीं होता, परन्तु उसका रूपान्तर होता रहता है। जीव नव उत्पन्न पदार्थ नहीं है। वह अनन्त अतीत में था, वर्तमान में है और अनन्त भविष्य में भी रहेगा। अतः वह किसी न किसी अवस्था में रहता ही है। एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर का निर्माण करना- यह अवस्था का रूपान्तरण है और यही भवान्तर है- परलोक गमन है।''

''क्या जीव सभी प्रकार के भवों में जा सकता है?'' ''हाँ, जा सकता है।''

''हमने यह सुना है कि जीव जैसे कर्म करता है, वैसे भव में जाता है- तो यह बात सही

है क्या?" "हाँ, सही है।"

"तो इसका निष्कर्ष यह निकला कि हमें परलोक सुधारने के लिये धर्म करना चाहिये?"- शिवसुन्दर ने पूछा। आचार्यदेव ने प्रतिप्रश्न किया- "परलोक सुधारने से क्या आशय?"

"परलोक में हमारी अच्छी गति हो, दुर्दशा न हो, सुख प्राप्त हो, दुःख प्राप्त न हो, अभाव न हो, यही परलोक-सुधार है।"

"यह सब होगा कब?" "धर्म करेंगे तब।"

"धर्म? कैसा धर्म?" "पापाचरण नहीं करना, दया, सत्य आदि का पालन करना"- शिवसुन्दर ने उत्तर दिया। आचार्यदेव की तत्त्वचर्चा की शैली उसे अच्छी लगी। कई बातों का स्पष्टीकरण वे जिज्ञासु के मुँह से ही करवा लेते थे।

आचार्यश्री ने मूल प्रश्न के स्पष्टीकरण की दृष्टि से प्रश्न किया- "जो पापाचरण नहीं करता है, उसे इसका फल या लाभ इस लोक में होता है कि नहीं?"

इस तत्त्व-चर्चा में गंगेश को भी रस आ रहा था। इसलिए बीच-बीच में वह भी भाग ले लेता था। अतः वह बोला- "लाभ तो होता है। वह अच्छा नागरिक माना जाता है। शासन उसे दण्डित नहीं कर सकता है। उसकी प्रतिष्ठा भी जम जाती है आदि।"

आचार्यश्री ने अब स्पष्टीकरण किया- "ये ऐहिक फल हैं। ऐसे ही पारलौकिक फल भी होते हैं। परन्तु इहलोक या परलोक को सुधारना- यह धर्म का वास्तविक उद्देश्य नहीं है।"

दोनों एक साथ बोले- "तो फिर क्या उद्देश्य है?"

"धर्म का सही उद्देश्य है- आत्म-सुधार।"

"आत्म-सुधार किसे कहते हैं?"-शिवसुन्दर ने पूछा।

"श्रद्धा और चरित्र की विकृति से जीव मलिन होता है। इनकी विकृति ही पाप है। पिछले जन्मों की विकृति से- पापाचरण से अपार कर्मों का संग्रह हुआ है, जिससे जीव दुःख भोगता है, उनसे मुक्त होना ही आत्म-सुधार है। जीव पिछली विकृति से पीछे हटे, वर्तमान विकृति का विनाश करे और भविष्य में विकृति नहीं करने का संकल्प करे- यह उसका उपाय है, यही धर्म है और इसे आत्म-सुधार भी कहते हैं।"

"गुरुदेव! आपने हमें अच्छी समझ दी। हमने आपका बहुत समय लिया। हम अज्ञानी हैं। चर्चा में कुछ अविनय हुआ हो तो क्षमा करें।"- शिवसुन्दर ने सविनय कहा।

"वत्स! तुम्हें ज्ञान प्राप्त हो- इससे हम प्रसन्न हैं।"

"गंगेश समझ गया कि सरलता के कारण ही ये जन-मान्य हैं।' (क्रमशः)

बाल-स्तम्भ

करुणा की कहानियाँ

श्रद्धेय श्री ज्ञानमुनिजी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अप्रेल 2016 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

---

(1)
करुणाशील अरिष्टनेमि

दया करै धरम मन राखै, घर में रहे उदासी।
अपना-सा दुःख सबका जानै, ताहि मिले अविनाशी।।

महाराज समुद्रविजय और महारानी शिवादेवी के सुपुत्र थे- कुमार अरिष्टनेमि। वे द्वारका से महाराज उग्रसेन की सुन्दर कन्या राजीमती से विवाह करने के लिए बारात लेकर पहुँचे। रथ में बैठकर कुमार नगर में प्रवेश कर ही रहे थे कि सहसा उनकी दृष्टि एक बाड़े में घिरे जंगली पशुओं के झुण्ड पर पड़ी।

कारण पूछने पर पता चला कि विवाहोत्सव में सम्मिलित होने वाले सामिष भोजियों के लिए उन पशुओं को बाँध कर रखा गया है। कुमार का संवेदनशील हृदय करुणा से भर गया। इस विशाल हत्याकाण्ड का कारण विवाह होने से उन्होंने इस हिंसा के लिए अपने को ही जिम्मेदार माना। बाड़ा खुलवाकर उन्होंने तत्काल सभी पशुओं को मुक्त करा दिया। फिर रथ लौटाने का आदेश देते हुए सारथी से कहा- ''अब मैं राजीमती से नहीं, मोक्षलक्ष्मी से विवाह करूँगा।'' कथनी और करनी में अन्तर नहीं हुआ। वे जैन धर्म के बाईसवें तीर्थंकर बने। यह अहिंसा का प्रताप था।

दर्द जिस दिल में हो, उस दिल की दवा बन जाऊँ।
दुःख में हिलते, हुए होठों की दुआ बन जाऊँ।।

(2)
जहाँ हिंसा, वहाँ धर्म नहीं

जीवन प्रिय सब जीव को, सबको सुख की चाह।
तिरस्कार, दुःख-मृत्यु के, नहीं जावे कोई राह।।

पार्श्वकुमार अपनी माता वामादेवी के साथ हाथी पर सवार होकर बनारस के बाहर ठहरे हुए एक तापस के निकट गये, जिसके दर्शन के लिए सारा नगर चला जा रहा था।

तापस पंचाग्नि तप पर प्रदर्शन कर रहा था। अपनी सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति के आधार पर कुमार ने जान लिया कि अग्निकुण्ड में जलते हुए लक्कड़ में नाग-नागिन का एक जोड़ा जल रहा था। कुमार ने तापस से कहा- "जहाँ हिंसा है, वहाँ धर्म का नाटक हो सकता है, धर्म नहीं। तुम्हारे सामने ही अग्नि में नाग-नागिन का जोड़ा जल रहा है। किन्तु इस ओर तुम्हारा ध्यान भी नहीं?"

इसके बाद अपने अनुचरों से अधजले लक्कड़ को फड़वा कर तड़पते नाग-नागिन का जोड़ा निकालकर बता दिया। नाग-नागिन को नवकार महामंत्र सुनाया गया। अंत समय में नवकार श्रवण से नाग-नागिन को देवगति मिली। पार्श्वकुमार अपनी माता के साथ महलों में लौट आये। यही पार्श्वकुमार आगे चलकर जैन धर्म के तेईसवें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ के रूप में प्रसिद्ध हुए।

खंजर चले किसी पे, तड़पते हैं हम अमीर।
सारे जहाँ का दर्द, हमारे जिगर में है।।

(3)
पेट कब्रिस्तान नहीं

है भला तेरा इसी में, माँस खाना छोड़ दे।
इस मुबारक पेट में, कब्रें बनाना छोड़ दे।।

-जैन दिवाकर

नोबेल पुरस्कार विजेता नाटककार जॉर्ज बर्नाड शॉ शाकाहारी थे और शाकाहार के प्रबल समर्थक भी। एक बार वे किसी भोज में निमन्त्रित किए गये। भोज सामिष था। शॉ भी एक कुर्सी पर बैठ गये। सबको भोजन परोसा गया। भोजन ग्रहण करते हुए अन्य लोगों ने जब शॉ को चुपचाप बैठे देखा तो कहा- "मिस्टर शॉ! जहाँ शाकाहारी भोजन की व्यवस्था न हो, वहाँ कभी-कभी सामिष-भोजन करने में कोई हर्ज नहीं। आप भोजन ग्रहण कीजिये।"

इस पर शॉ ने कहा- "मेरा पेट पेट ही है, कब्रिस्तान नहीं कि इसमें मुर्दों को स्थान दिया जाये।"

शॉ ने भोजन नहीं किया। उनके त्याग और इस सुन्दर उत्तर से सभी निमन्त्रित सज्जन चकित हो गये। बहुत कम शब्दों में शॉ ने अपनी बात प्रभावशाली ढंग से कह सुनाई। कुशल वक्ता का यही लक्षण है। शॉ ने एक वाक्य में मानो पूरा प्रवचन ही दे दिया था-

अल्पाक्षररमणीयं, यःकथयति निश्चितं सः खलु वाग्मी।
बहुवचनमल्पसारं, यःकथयति विप्रलापी सः।।

(4)

हमारा क्या अपराध?

दाँतो तले तृण दबाकर, दीन गायें कह रहीं।
हम पशु, तुम हो मनुज, पर योग्य क्या तुमको सही।
हमने तुम्हें माँ की तरह है दूध पीने को दिया।
देकर कसाई को हमें, तुमने हमारा वध किया।।
जारी रहा क्रम यदि यहाँ, यों ही हमारे ह्रास का।
तो अस्त समझो सूर्य भारत भाग्य के आकाश का।
जो तनिक हरियाली रही, वह भी न रहने पायेगी।
यह स्वर्ग भारत भूमि बस, मरघट मही बन जायेगी।।

-मैथिलीशरण गुप्त

"ये गायें मेरी ओर क्यों देख रही हैं?" ऐसा प्रश्न सुनकर समय और वाणी का सदुपयोग करने में कुशल बीरबल ने गायों की ओर से अकबर से कहा- "जहांपनाह! हम घास खाकर निर्वाह करती हैं। हमने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा। न किसी की चोरी की और न विश्वासघात ही किया। हम सबको दूध देती हैं। हमारे बछड़े बैल बनकर खेतों में काम आते हैं। मरने के बाद भी हमारी चमड़ी जूते बनकर हिन्दू-मुस्लिम का भेद किये बिना पाँवों की समान रूप से रक्षा करती हैं, फिर हमने कौनसा अपराध किया है कि कसाई हमारा वध करते हैं और मुसलमान ईद के दिन हमारा जीवन ले लेते हैं। ऐसा क्यों?" आपसे ये गायें अपनी मौन वाणी में यही कह रही हैं।"

बादशाह अकबर ने यह सुनकर गोवध पर कानूनन प्रतिबंध लगा दिया। उन्होंने घोषणा करवा दी कि धर्मोत्सव के नाम पर भी गोवध निषिद्ध रहेगा। राजाज्ञा का उल्लंघन करने वाले को कठोर राजदण्ड दिया जायेगा।

हत्या में वीरत्व नहीं है, यह तो क्रूरों का कर्म।
वध नहीं, रक्षा करना है सच्चे शूरों का धर्म।।

-'ज्ञान रश्मियाँ' भाग-1 पुस्तक से संकलित

बाल-स्तम्भ (2)

पुस्तकें होतीं अनमोल

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

ज्ञान-प्राप्ति और बुद्धि विकास के लिये पुस्तकों का अध्ययन आवश्यक है। बच्चों में जीवन शक्ति और इच्छा शक्ति दोनों होती हैं। जीवन में कुछ बनने की, कुछ हासिल करने की इच्छा हर बच्चे के मन में होती है। इसलिये अच्छी पुस्तकों के अध्ययन से उसका सही मार्गदर्शन होता है।

बच्चों को महापुरुषों, वैज्ञानिकों एवं अच्छे साहित्यकारों की जीवनियाँ तथा आत्मकथाएँ पढ़नी चाहिए। इससे हृदय और मस्तिष्क विकसित होते हैं, जीवन को आलोक मिलता है। उत्साह जागता है तथा लोक व्यवहार का ज्ञान भी मिलता है। पुस्तकें ज्ञान का भण्डार होती हैं।

जिन लोगों को किताबें पढ़ने का शौक होता है, वे कभी बोर नहीं होते। पुस्तकें पढ़ना समय का सर्वश्रेष्ठ उपयोग है। जो लोग समर्थ हैं उन्हें अच्छी किताबों का संग्रह कर घर में ही छोटा पुस्तकालय बना लेना चाहिये और अपने पड़ौसी, मित्रों और परिजनों को किताबें पढ़ने को देनी चाहिए।

कहा जाता है कि तीर, तोप और गोले में भी वह शक्ति नहीं होती, जो साहित्य में छिपी होती है। ये चीजें केवल शरीर पर ही प्रभाव डालती हैं, जबकि साहित्य सीधा हृदय पर प्रभाव डालता है। जिस प्रकार सड़ा-गला बासी खाने-पीने से शरीर रोगों का घर बन जाता है उसी प्रकार बेकार समाचार, फिल्मी खबरें, विकृत साहित्य पढ़ने से भी जीवन दूषित होता है। अतः पुस्तकें धार्मिक, उत्कृष्ट एवं जीवन निर्माणकारी होनी चाहिए।

अधिकांश घरों में शाम को सब अपना-अपना काम समाप्त करके टी.वी. देखने बैठ जाते हैं, परन्तु घर के सभी सदस्यों को सोने से पूर्व आधा घण्टा अच्छी पुस्तकें पढ़ने की आदत डालनी चाहिये। बच्चों को स्कूल की पुस्तकों के अलावा भी दूसरी अच्छी कहानियों की किताबें पढ़नी चाहिये।

तकनीकी विकास के कारण आजकल अच्छे विचार, छोटी कहानियाँ Whatsapp पर भी आती हैं। हम अपनी रुचि को और विकसित करने के लिये भी उस विषय से सम्बन्धित किताबों का अध्ययन खाली समय में कर सकते हैं।

महात्मा गाँधी, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, नारायण मूर्ति आदि कई महापुरुष अच्छी किताबों के स्वाध्याय पर बहुत जोर देते रहे हैं। किताबें हमें अनुशासन भी सिखाती हैं। इनसे समाज और राष्ट्र का विकास होता है। *-कांदिवली (पूर्व), मुम्बई (महा.)*

प्रश्नः-

1. क्या अरिष्टनेमि ने विवाह किया था? कारण सहित उत्तर दीजिए।
2. "जहाँ हिंसा होती है वहाँ धर्म नहीं।" क्या आप इस कथन से सहमत हैं? यदि सहमत हैं तो क्यों?
3. जार्ज बर्नाड शॉ की कौनसी बात आपको पसन्द आयी एवं क्यों?
4. 'जारी रहा क्रम यदि यहाँ, यों ही हमारे ह्रास का।
   तो अस्त समझो सूर्य भारत भाग्य के आकाश का।।'
   इन पंक्तियों का क्या तात्पर्य है?
5. सच्चे शूरों का धर्म क्या है?
6. गोवध पर कानूनन प्रतिबंध किसने लगाया था? अभी प्रतिबंध है या नहीं?
7. अच्छी पुस्तकें पढ़ने के कोई पाँच लाभ बताइए।

बाल-स्तम्भ [जनवरी-2016] का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी-2016 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'दृष्टिकोण में निहित है- विवाद और समाधान' एवं 'माँ' के प्रश्नों के उत्तर 26 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	लक्की कांकरिया-बैंगलुरु (कर्नाटक)	27.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	दीपांशु जैन-जयपुर (राज.)	26.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	हर्ष देशलहरा-बालोद (छत्तीसगढ़)	26
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	दिलीप मुरडिया-बल्लारी(कर्नाटक)	26
	नेहल जैन-इन्दौर (मध्यप्रदेश)	26
	अभिषेक पालरेचा-जोधपुर (राज.)	26
	अरिन चोरड़िया-जयपुर (राज.)	26
	अरनव सचिन जैन-जयपुर (राज.)	25.5

रचनाएँ आमन्त्रित

जिनवाणी के लिए मौलिक एवं स्तरीय रचनाओं/आलेखों का सदैव स्वागत है। आपकी रचनाओं से ही यह पत्रिका दीप्तिमान हो रही है। इस वर्ष भी कतिपय श्रेष्ठ रचनाओं को पुरस्कृत किया जाएगा। **-सम्पादक**

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

मैंने पढ़ा आप भी पढ़ो (भाग 1 व 2)- सम्पादक- आचार्यश्री जयानंदसूरीश्वर जी, ***प्रकाशक***- गुरुश्री रामचन्द्र प्रकाशन समिति, भीनमाल, द्वारा- शा. देवीचन्द छगनलालजी, सुमति दर्शन, नेहरू पार्क के सामने, माघ कॉलोनी, भीनमाल-343029 (राज.) फोनः 02969-220387, ***पृष्ठ***-128+16, 240+16, ***मूल्य***- उल्लेख नहीं।

प्रस्तुत दोनों पुस्तकें विभिन्न लेखों के संग्रह हैं। प्रथम भाग में 34 एवं द्वितीय भाग में 61 लेखों का संग्रहण किया गया है। ये लेख शिक्षण, सदाचार, स्वास्थ्य, दैनिक व्यवहार, जीवन की समस्याओं, साध्वाचार, श्रावकाचार, नारी एवं बालकों से सम्बन्धित हैं। कतिपय लेखों के शीर्षक इस प्रकार हैं- नारी के लिए वास्तव में किस प्रकार का आदर्श शिक्षण हो, शिक्षण की चिन्ता, स्त्री और सदाचार की सुरक्षा के लिए सावधान बनिए, मानव जीवन का समग्रतः परिवर्तन, साध्वाचार और पर्यावरण शुद्धि, समस्या पानी छानने की, विद्या बेची नहीं जाती, वर्तमान परीक्षा पद्धति के दुष्परिणाम, हमारी रसोई, श्रावक-श्राविका और माइक, लक्ष्मी का वर्चस्व, संघ और संघपति : एक प्रसंग, निन्दारस से सावधान रहो, नौकरी करने वाली स्त्री क्या समाज और कुटुम्ब के लिए उपकारक है?, नारी का आत्म-सम्मान, कानून और कुदरती न्याय आदि। ये सभी तरह के पाठकों के लिए उपयोगी एवं संग्रहणीय है।

सामायिक को समझें- सम्पादक- आचार्यश्री जयानंदसूरीश्वर जी, ***प्रकाशक***- उपर्युक्तानुसार, ***पृष्ठ***-62+8, ***मूल्य***- उल्लेख नहीं।

जिनवाणी पत्रिका के मासिक एवं विशेषांक से सामायिक विषयक 9 लेखों का संकलन इस पुस्तक में किया गया है। वे इस प्रकार हैं- आनन्द का अखण्ड स्रोत-सामायिक (श्री भंवरलाल कोठारी), सद्गुण जगाने की साधना (श्री सरदारमल कांकरिया), सामायिक का अर्थ एवं स्वरूप (श्री सुभाष कोठारी), सामायिक : आत्म-साक्षात्कार की प्रकिया (डॉ.श्रीमती शान्ता भानावत), आचारांग में वर्णित सामायिक (समता) का स्वरूप (श्री मानमल कुदाल), सामायिक का स्वरूप व उसकी सम्यक् परिपालना (पं. कन्हैयालाल दक), सामायिक सम्बन्धी उपयोगी बातें (श्री शिरोमणि चन्द्र जैन), सामायिक का अभ्यास (श्रीमती कुसुम लता जैन), प्रत्याख्यान का महत्त्व (श्री कन्हैयालाल लोढ़ा)। यह पुस्तक सामायिक के स्वरूप, पालना और उसके महत्त्व को प्रकट करती है।

महावीर का अन्तर्बोध- ***सम्पादक***- दुलीचन्द जैन, ***प्रकाशक***- रिसर्च फाउण्डेशन फोर जैनोलॉजी, सुगन हाउस, 18 रामानुज अय्यर स्ट्रीट, साहूकार पेट, चेन्नई-600079, फोन : 044-25298082,25296557, ***पृष्ठ***-181+32, ***मूल्य***- 50 रुपये, सन् 2015

भगवान महावीर की वाणी के सार को अपने में आत्मसात् किया हुआ उत्तराध्ययन सूत्र, गीता और धम्मपद के समतुल्य आदर-प्राप्त है। विद्वान् लेखक ने इसी तथ्य से बोध प्राप्त कर 'अन्तर्बोध' नामक इस ग्रन्थ की परिकल्पना की और पाठकों के समक्ष नूतन सरणि में इसे प्रस्तुत किया है। इसमें उत्तराध्ययन सूत्र की अनमोल गाथाओं को विविध विषयों में वर्गीकृत कर संकलित किया गया है, साथ ही हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में अनुवाद भी दिया गया है। इसमें निरूपित विषय हैं- आत्म-तत्त्व, ज्ञान और चारित्र, कषाय-विजय, कर्म-सूत्र, भावना-सूत्र, धर्ममार्ग, शिक्षा एवं ध्यान, दृष्टान्त एवं कथाएँ। यह पुस्तक कुञ्जी के सदृश स्वाध्यायियों के लिए उपयोगी है।

जीवन-व्यवहार

जीवन के सत्य

आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.

सद्बुद्धि

"पिताजी के पास जितनी संपत्ति थी
उसकी अपेक्षा मेरे पास विपुल प्रमाण में
संपत्ति होते हुए भी, पिताजी के पास
जो प्रसन्नता थी उसके लाखवें अंश की भी
प्रसन्नता मेरे पास नहीं है"
ऐसा स्पष्ट जानने पर एवं अनुभूति
करने पर भी आज का सुपुत्र संपत्ति
के पीछे जो अंधी दौड़ लगा रहा है उसे
वह स्थगित करने को तैयार नहीं है।
सुपुत्र के पास सद्बुद्धि होने में
क्या शंका नहीं होती?

सावधानी

जिस रास्ते पर कीचड़ बहुत होता है
उस रास्ते पर कदम सँभालकर ही
रखने पड़ते हैं।
जिस वातावरण में धूल बहुत होती है
वहाँ आँखें सँभालकर ही
खोलनी पड़ती हैं।
जिस पौधे पर काँटें बहुत सारे हों
उस पौधे पर हाथ सँभालकर ही
रखना पड़ता है।
वैसे इस दुनिया में **मैत्रीभावरहित जीव**
बहुत हैं वहाँ शब्द अत्यन्त सँभालकर
बोलने पड़ते हैं।
नाहक ही किसी के साथ दुश्मनी
क्यों पैदा करनी?

-'इशारा' पुस्तक से साभार

युवक परिषद्

आओ स्वाध्याय करें

भगवान महावीर सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी 7 का परिणाम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में इतिहास-अध्ययन के लक्ष्य से जिनवाणी के माध्यम से प्रारम्भ की गई 'श्री भगवान महावीर सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता(2) सप्तम (अक्टूबर-2015)' में 161 प्रतियोगियों ने भाग लिया। परिणाम संभागक्रम से इस प्रकार है-

संभाग/क्षेत्र	15 से 45 वर्ष	45 वर्ष से ऊपर
1. पल्लीवाल/दिल्ली/पंजाब (20)	(1) बबीता जैन-भरतपुर	(1) बेबी जैन-भरतपुर
	(2) जया जैन-भरतपुर	(2) नीलम जैन-दिल्ली
	(3) संगीता रांका-फरीदाबाद	(3) ममता जैन-भरतपुर
2. जयपुर/पोरवाल/मध्यप्रदेश (31)	(1) महक जैन-जयपुर	(1) चंचल गोलेछा-जयपुर
	(2) अदिति जैन-अलीगढ़	(2) अनिल जैन-कोटा
	(3) दिव्या ओस्तवाल-जयपुर	(3) हेमचन्द जैन-बाँरा
3.महाराष्ट्र एवं अन्य क्षेत्र (38)	(1) हेमलता छाजेड़-शहादा	(1) रमेशचन्द छाजेड़-भुसावल
	(2) शिल्पा सुराणा-जलगाँव	(2) सुजल कोठारी-धुले
	(3) प्रशांत कोठारी-धुलिया	(3) सुशीला रूणवाल-पूना
4. कर्नाटक/तमिलनाडु/आंध्रप्रदेश (12)	(1) संगीता खाबिया-मैसूर	(1) मनीषा कांकरिया-चेन्नई
	(2) रेखा जसवंत नंगावत-मैसूर	(2) नीता कांकरिया-दौडबालापुर
	(3) बसंता गुगलिया-हैदराबाद	(3) संगीता बोहरा-चेन्नई
5. मारवाड़/गुजरात (45)	(1) अंजना जैन-ब्यावर	(1) कांता अरुण भण्डारी-अहमदाबाद
	(2) उपमा चौधरी-अजमेर	(2) कमला सुराणा-पाली
	(3) स्वीटी हींगड़-पाली	(3) पुष्पा कांकरिया-पाली
6. ग्रुप में-	(1) तनुजा प्रशांत कोठारी	
	(2) पुष्पा गादिया/हर्ष जैन-पाली	
	(3) अष्य जैन/निधी जैन-सूरत	

परिणाम के सम्बन्ध में विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र- श्री गौतम जी जैन, पचाला-090010-17837

उत्तरतालिका (भगवान महावीर सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी 7)

1. चण्डकोशिक	2. ग्रह	3. जिनदत्त-जीर्णसेठ
4. राजर्षि उदायन	5. छद्मस्थ	6. सिद्धिफल

7. संगम	8. ग्वाला	9. मद्दुक
10. आचार्य मेरुतुंग	11. भगवान महावीर	12. कलंकलिका
13. धन्ना	14. प्रभास	15. अम्बड़
16. दुषमा-सुषम	17. किरातराज	18. करालकाल
19. शरीर	20. दशवैकालिक	21. आनन्द
22. बुद्ध	23. मस्करी	24. महावीर
25. रानी चेलना	26. जमालि	27. नन्दिषेण
28. सुभद्रा	29. शक्रेन्द्र	30. शालिभ्रद
31. 0	32. 14	33. 42003 वर्ष 8.5 माह
34. 12	35. 18	36. 0
37. 2	38. 11,60,000	39. 4
40. 5	41. हाँ	42. ना
43. हाँ	44. ना	45. हाँ
46. ना	47. हाँ	48. ना
49. हाँ	50. ना	

'आओ स्वाध्याय करें' के प्रतियोगियों हेतु सूचना

'आओ स्वाध्याय करें' प्रतियोगिता के अन्तर्गत विजेता प्रतिभागियों की पुरस्कार राशि उनके बैंक खाते में हस्तांतरित की जाएगी। प्रतिभागी अपना नाम, स्थान का उल्लेख करने के साथ अपने बैंक का नाम, खाते का प्रकार, खाता धारक का नाम, खाता संख्या, बैंक **IFS Code** एवं मोबाइल नं. की जानकारी पत्र द्वारा इस पते पर भेंजे- **अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्**, सामायिक स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.)

-मनीष लोढ़ा, महासचिव

जिनवाणी पर अभिमत

संतोष चोरड़िया

जिनवाणी पत्रिका के लेख कितने उपयोगी हैं, यह कुछ कहना सूरज को दीपक की रोशनी दिखाना भर है। इसके लेख इतने उपयोगी लगे कि उन्हें बार-बार पढ़ने हेतु पत्रिका से निकालकर अलग से संकलित करना पड़ता है।

-चोरड़िया सदन, 72/6, कोठारी नगर, मंदसौर-458001 (मध्यप्रदेश)

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की थोकड़ा परीक्षा का परिणाम घोषित

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 10 जनवरी 2016 को आयोजित जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा) परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। परीक्षा परिणाम सम्बन्धी सूचना सभी परीक्षार्थियों को SMS द्वारा भिजवाई जा चुकी है। केन्द्राधीक्षकों को सम्बन्धित परीक्षार्थियों के प्राप्तांकों की सूची भी भेजी जा चुकी है। जिन परीक्षार्थियों ने वरीयता सूची में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित हैं-

अस्थायी वरीयता सूची

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
		(प्रथम कक्षा)		
8758	मंजू प्रफुल्लजी सुराना	हांगकांग	99.25	प्रथम
9041	प्रेरणा विकासमोहनजी जैन	शास्त्रीनगर-दिल्ली	98.50	द्वितीय
8515	मीना नरेन्द्रजी चौधरी	वैल्लुर-चेन्नई	98.00	तृतीय
		(द्वितीय कक्षा)		
7100	रेखा कैलाशजी मोदी	ब्यावर (राजस्थान)	99.50	प्रथम
4664	ममता पदमजी देशरला	पावटा-जोधपुर	99.25	द्वितीय
7049	शोभा श्रेणिकजी छाजेड़	करही (मध्यप्रदेश)	99.00	तृतीय
		(तृतीय कक्षा)		
6246	अंजलि दीपकजी कोठारी	मदनगंज (राज.)	99.50	प्रथम
5387	रिया कीर्तिकुमारजी सुराना	हिंगनघाट (महा.)	99.00	द्वितीय
3723	श्वेता मुकेशजी बुरड़	शिरपुर (महा.)	98.50	तृतीय
		(चतुर्थ कक्षा)		
951	नीलम दिलीपजी लुंकड़	सेईदापेठ-चेन्नई	99.00	प्रथम
3594	उज्ज्वला कमलेशजी कांसवा	हिंगनघाट (महा.)	98.50	द्वितीय
927	प्रतीभा गौतमजी कोठारी	स्वाध्याय भवन-चेन्नई	98.00	तृतीय
		(पाँचवी कक्षा)		
1993	भारती महेन्द्रजी गाँधी	गंगाधाम, पुना (महा.)	99.75	प्रथम
3211	इन्द्रा रिखबचन्दजी चोरड़िया	भीलवाड़ा (राज.)	99.50	द्वितीय
3591	निधि रितेशजी सुराणा	हिंगनघाट (महा.)	99.25	तृतीय
		(छठी कक्षा)		
2240	अनुराधा अविनाशकुमारजी पींचा	चिंतादरीपेठ-चेन्नई	98.50	प्रथम
593	मोहिनी रमेशचन्दजी तातेड़	चांदनी चौक, दिल्ली	97.50	द्वितीय
861	आरती रूपचन्दजी छाजेड़	खांमगांव (महा.)	97.00	तृतीय

(सातवीं कक्षा)

1353	मीना गौतमचन्दजी ललवानी	मालेगांव कैम्प (महा.)	99.25	प्रथम
1310	सुशीला नीलेशजी समदड़िया	सिड़को, नाशिक	99.00	द्वितीय
543	शर्मीला महावीरजी धोका	मैसूर	98.50	तृतीय

बोर्ड की आगामी परीक्षा कक्षा 1 से 12 तक के लिए **24 जुलाई 2016** को 12.30 से 3.30 बजे तक हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती माध्यम में आयोजित होगी एवं जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़े) की आगामी परीक्षा कक्षा 1 से 8 के लिए **08 जनवरी 2017** को हिन्दी माध्यम में आयोजित होगी। परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर (राज.)- फोनः 0291-263490, फैक्सः 2636763, Website : jainratnaboard.com, E-mail:shikshanboardjodhpur@gmail.com, info@jainratnaboard.com

अशोक चोरडिया	**नवरतन गिड़िया**	**धर्मचन्द जैन**
संयोजक	सचिव	रजिस्ट्रार
9414129162	9414100759	9351589694

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर

(सिद्धान्त-शाला) में वर्ष 2016 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

(जैन विद्यार्थियों के लिए आध्यात्मिक संस्कारों के साथ उच्च अध्ययन का स्वर्णिम अवसर)

भारतवर्ष के जैन विद्यार्थियों के लिए वर्ष 2016 से प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन 01 मार्च 2016 से प्रारंभ है। संस्थान में प्रवेश के लिए कक्षा 9वीं से उच्च कक्षा के कोई भी विद्यार्थी रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। माह जून 2016 में प्रवेश के लिए चयनित छात्रों का साक्षात्कार आयोजित किया जायेगा। परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा की प्रेरणा से वर्ष 1973 में संस्थापित शिक्षण संस्थान में आध्यात्मिक शिक्षण के साथ-साथ उच्च अध्ययन की समुचित व्यवस्था है। साथ ही सर्वांगीण विकास के लिए कई कार्यक्रम भी संचालित किये जाते हैं। संस्थान में विद्यार्थियों के लिए उचित आवास-भोजन व्यवस्था के साथ,कम्प्यूटर शिक्षण,इंग्लिश स्पीकिंग क्लासेज,सेमिनार एवं मोटिवेशनल कक्षाएं आयोजित होती रहती हैं। शैक्षणिक अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन भी संस्थान में करवाया जाता है। जो छात्र संस्कारित रहकर जयपुर में उच्च अध्ययन करना चाहते हैं, वे रजिस्ट्रेशन करवाने हेतु आवेदन करें। रजिस्ट्रेशन फार्म जिनवाणी के पृष्ठ 123 पर दिया गया है। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें:- डॉ प्रेमसिंह लोढा 'व्यवस्थापक', ए-9 महावीर उद्यान पथ,बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.), फोन न. 0141-2710946,94614-56489, Email: ahassansthan@gmail.com

दीक्षा-रिपोर्ट

दूदू की धरा हुई धन्य
पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से 4 मुमुक्षु बहनों की भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, **आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. महान् अध्यवसायी सेवाभावी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 10** तथा विदुषी महासती श्री सुशीला कंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रूचिताजी म.सा. आदि ठाणा 24 के पावन सान्निध्य में माघ शुक्ला तृतीया गुरुवार 11 फरवरी 2016 को एन.बी.गार्डन, मौजमाबाद रोड़, दूदू में प्रवचन के पश्चात् लगभग 12 बजे अग्रांकित चार मुमुक्षु बहनों की भागवती दीक्षा पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से भव्यता के साथ हजारों श्रद्धालुओं की अनुमोदना में सम्पन्न हुई- 1. **मुमुक्षु श्रीमती सज्जनकंवरजी मेहता**-जोधपुर, 2. **मुमुक्षु सुश्री नेहाजी खिंवसरा**-माण्डल, जिला-जलगांव, 3. **मुमुक्षु सुश्री रूचिताजी खिंवसरा**-माण्डल, जिला-जलगांव, 4. **मुमुक्षु सुश्री खुशबू जी जैन**-गंगापुरसिटी।

दूदू में दीक्षा-महोत्सव का उत्साह सर्वत्र नजर आ रहा था। स्थान-स्थान पर लगे बैनरों एवं पोस्टरों से सभी कार्यक्रमों की सूचना समय पर मिल रही थी। न केवल जैन समाज अपितु सभी जाति एवं वर्ग के दूदू नागरिक इस दीक्षा समारोह में अपनी भूमिका निभाने के लिए तत्पर थे। यहाँ की सुन्दर व्यवस्था एवं आत्मीयता को देखकर हर आगन्तुक प्रभावित था।

भव्य शोभायात्रा

वि.सं. 2072 माघ शुक्ला द्वितीया, बुधवार दिनांक 10 फरवरी, 2016 को प्रात: 9 बजे के लगभग ओसवाल कॉलोनी दूदू से शोभायात्रा प्रारम्भ हो, इसके पूर्व चारों विरक्ता बहिनें अपने पारिवारिक-परिजनों व संघ के सैंकड़ों सदस्यों के जयनादों के बीच महावीर भवन पहुंची जहां आचार्यप्रवर प्रभृति मुनिपुंगवों को वंदन-नमन कर मांगलिक श्रवण की, और महावीर भवन के बाहर एक-एक कर चार सुसज्जित बग्गियों में चारों विरक्ता बहिनें अपने परिवार के कुछ सदस्यों के साथ हाथ जोड़े जनसमुदाय का अभिवादन करते खड़ी रही, बैठने का सहज सुयोग भी संभव न हो सका।

आगे-आगे चल रहे घोड़ों-ऊँटों पर नगाड़ों का नाद शोभायात्रा के शुरू होने का संकेत कर रहा था, भगवान महावीर स्वामी की जय, आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. की जय, आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की जय, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की जय, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की जय, सभी निग्रन्थ मुनिराजों की जय, महासतीवृन्द की जय जैसे जयघोष चल रहे थे, तो संघ स्तर पर सर्वप्रचलित नारे जिनमें जैन जगत के दिव्य सितारे हस्ती-हीरा मान हमारे। गुरु हस्ती के दो फरमान-सामायिक-स्वाध्याय महान्। गुरु हीरा का है आह्वान-निव्यर्सनी हो हर इंसान, जैसे नारों का नाद गुंजायमान हो रहा था। शोभायात्रा में बैण्ड की धुनें भी आकर्षित कर रही थी। सड़कों पर यह दृश्य देखने के लिए सभी लालायित थे।

शोभायात्रा में देशभर से अनेक श्रीसंघ, श्रद्धालुजन तथा संघ के विभिन्न राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय पदाधिकारीगण सम्मिलित हुए। शोभायात्रा का स्वरूप देखते ही बनता था।

दूदू नगर के जनसमुदाय ने स्थान-स्थान पर विरक्ता बहिनों के स्वागत-सत्कार और अभिनन्दन मे कोई कमी नहीं रखी। दूदू पंचायत के सरपंच ठाकुर साहब श्री कुलदीपसिंहजी ने तथा ठाकुर साहब श्री महिपालसिंहजी ने रावले के संभ्रान्तजनों के साथ विरक्ता बहिनों की खोल-भराई की। राजपूत समाज की संभ्रान्त महिलाओं ने विरक्ता बहनों को शुभकामना अर्पित की। दिगम्बर जैन, अग्रवाल, माहेश्वरी, ब्राह्मण, कुमावत, गुर्जर परिवार के साथ दूदू के हर वर्ग, जाति समुदाय ने विरक्ता बहिनों का अभिवादन किया। स्थान-स्थान पर शोभायात्रा में सम्मिलित लोगों की प्रेम पूर्वक मनुहार की गई। मौजमाबाद के पूर्व सरपंच श्री सुआलालजी गुर्जर, श्री फूलचन्दजी झांझरी, श्री मुनिशजी झांझरी सहित अनेक गणमान्य लोगों का सहयोग रहा।

शोभायात्रा में प्रायः उछाल होती है, खाद्य वस्तुएं और वस्त्रादि दिए जाते हैं, किन्तु विरक्ता बहिनों की सूझबूझ कहें या संघ सदस्यों की सकारात्मक सोच, उछाल जैसी प्रवृत्ति पर अंकुश रहा।

शोभायात्रा में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री पी. एस. सुराणा, कार्याध्यक्ष श्री आनंदजी चौपड़ा, डॉ. अशोकजी कवाड़, महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी, संयुक्त महामंत्री श्री कैलाशमलजी भण्डारी, श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा, महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेच्छा, महासचिव श्री मनीषजी लोढ़ा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री विनयचन्दजी डागा जैसे राष्ट्रीय पदाधिकारी शोभायात्रा की शोभा में सम्मिलित रहे।

स्वाध्याय संघ, शिक्षण बोर्ड, संस्कार केन्द्र के पदाधिकारियों की अच्छी भूमिका रही। संघ संरक्षकगण, शासन सेवा समिति के सम्माननीय सदस्यगण एवं संघ के ट्रस्ट के ट्रस्टीगणों के साथ क्षेत्रीय प्रधान, स्थानीय शाखाओं के संघाध्यक्ष-संघमंत्री स्थानीय श्राविका मण्डल, युवक परिषद् के पदाधिकारियों के अलावा समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्र के श्रीसंघों, संघ सदस्यों की महनीय उपस्थिति के साथ दूदू श्रीसंघ के आबाल-वृद्ध सदस्यों का सुन्दर सामंजस्य शोभायात्रा की विशेषता रही। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पदाधिकारियों के साथ संघ-सेवी श्रावकरत्न श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, श्री कांतिलालजी चौधरी, श्री प्रमोद़जी लोढ़ा ने कई बार दूदू आकर दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम की सफल क्रियान्विति में कार्य-योजना को मूर्तरूप दिया एवं दूदू संघ का मार्गदर्शन किया।

अभिनन्दन समारोह

विरक्ता बहिनों व वीर परिवारजनों का अभिनन्दन समारोह एन.बी. गार्डन में दिन में लगभग 2 बजे प्रारम्भ हुआ। समारोह स्थल शास्त्रीय गाथाओं एवं जीवनोपयोगी सूक्तियों से सुशोभित था। वीर परिवार, पदाधिकारी गण एवं दीक्षा की अनुमोदना में पधारे हजारों भाई-बहनों के लिए बैठने की पृथक्-पृथक् व्यवस्था थी। सुन्दर बिछायत के साथ पाण्डाल के चारों ओर कुर्सियाँ भी लगी हुई थीं। अभिनन्दन समारोह के समीप ही भोजन कक्ष का पाण्डाल था, जहाँ भोजन करने के अनन्तर सभी भाई-बहन अभिनन्दन-स्थल पर सुगमता से तुरन्त पहुँच रहे थे।

मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि और राष्ट्रीय एवं स्थानीय प्रमुख पदाधिकारियों के साथ चारों विरक्ता बहिनों की बैठने की व्यवस्था स्टेज पर अलग-अलग की गई। समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री नरपतमलजी लोढ़ा, विशिष्ट अतिथि दूदू क्षेत्र के विधायक डॉ. प्रेमचन्दजी बैरवा, समारोह की अध्यक्षता के लिए रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, संघ संरक्षक व शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना, संघ संरक्षक श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, संघ के महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी, स्थानीय संघ अध्यक्ष श्री विनोदकुमारजी मेहता जैसे प्रमुख पदाधिकारी स-सम्मान मंचासीन हुए।

कार्यक्रम में मंगलाचरण की प्रस्तुति बालिका मण्डल, दूदू ने दी। संघ की ओर से कार्याध्यक्ष श्री आनंदजी चौपड़ा ने स्वागत भाषण में मानव जीवन की सार्थकता और सफलता के कारणों का विश्लेषण किया तथा गुरु हीरा की दूरदर्शिता और जयपुर-अजमेर-मदनगंज जैसे बड़े नगरों-महानगरों की विनतियों के बीच दूदू जैसे साधरण कस्बे में दीक्षा-महोत्सव की स्वीकृति प्रदान कर दूदू नगर पर महती कृपा की। दूदू को पहली बार

दीक्षा-महोत्सव का अवसर प्राप्त हुआ।

स्थानीय संघ की ओर से स्वागत-गीत की सुन्दर प्रस्तुति के साथ शब्दों से स्वागत-सत्कार के लिए साधुवाद-धन्यवाद ज्ञापन स्थानीय संघाध्यक्ष श्री विनोदकुमारजी मेहता ने संतुलित, किन्तु प्रभावी शब्दों में किया।

मुमुक्षु बहिनों श्रीमती सज्जनकंवरजी मेहता, सुश्री नेहा जी खिंवसरा, सुश्री रूचिताजी खिंवसरा और सुश्री खुशबूजी जैन का परिचय देने के अनन्तर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं दूदू संघ की ओर से माल्यार्पण से स्वागत, चून्दड़ी से सत्कार, अभिनन्दन-पत्र से बहुमान किया गया।

वीर परिवार के सदस्यगण वीरपति, वीर माता-पिता, दादा-दादी सहित परिवारजनों का स्वागत-अभिनन्दन संघ परम्परानुसार किया गया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ व दूदू श्रीसंघ द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन राष्ट्रीय अध्यक्ष, मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि के कर-कमलों से प्रदान करवाए गए।

विरक्ता बहिनों ने अपने-अपने हृदयोद्गारों में आचार्यश्री-उपाध्यायश्री प्रभृति संत-सतीवृन्द के ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन में सहयोग, पारिवारिक-परिजनों की आज्ञा-अनुज्ञा, गौरवशाली रत्नसंघ की अनुमोदना के आदर्श आदि का उल्लेख कर सारगर्भित शब्दों में ज्ञान-दर्शन-चारित्र के विकास में सबके सहयोग की भावना का इजहार किया। भाषा-भाव से हृदयोद्गार प्रभावी रहे।

विरक्ता बहिनों के परिवारजनों की ओर से प्रमुख वक्ता थे वीरपुत्र श्री कमलेशजी मेहता, वीरमाता श्रीमती किरणजी खिंवसरा, वीरपिता श्री अशोकजी खिंवसरा, वीरमाता श्रीमती मायाजी। वीरपुत्र ने माँ की भावना एवं साधना का बखान किया तो वीरमाता ने संयम-पथ की पथिकाओं को अपना, अपने परिवार का, रत्नसंघ का और जिनशासन का नाम रोशन करने की सीख दी। वक्ताओं ने वयः सम्पन्न अवस्था में रत्नसंघ में दीक्षित श्री दयामुनिजी म.सा. के पदचिह्नों पर चलने वाली उनकी सुपुत्री सज्जनकंवरजी मेहता के जीवनादर्श को जीवन-व्यवहार में चरितार्थ करने की भावना पर हर्ष व्यक्त किया गया।

प्रमुख वक्ताओं के उद्गार-

विशिष्ट अतिथि डॉ. प्रेमचन्दजी बैरवा ने कहा कि दूदू क्षेत्र मे आचार्य श्री हीराचन्द्रजी महाराज द्वारा प्रदत्त यह प्रसंग दूदू के इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगा, क्योंकि इस धरती से ये चार मुमुक्षु बहिनें दीक्षित होकर अपना उद्धार करने के साथ हजारों-हजार लोगों को सत्पथ पर चलने की प्रेरणा देंगी।

मुख्य अतिथि महाधिवक्ता श्री नरपतमलजी लोढ़ा ने अपने सम्बोधन में गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय और गुरु हीरा के व्यसन-त्याग सन्देश के परिप्रेक्ष्य में कहा कि हम सबको धर्माचार्य-धर्मगुरुओं के प्रशस्त पथ का अनुसरण करना चाहिये। चारों विरक्ता बहिनों के साथ उनके परिवारजनों के प्रति शुभकामना और मंगल आशीर्वाद देते हुए लोढ़ा साहब ने स्व-पर ज्ञान-ध्यान वृद्धि के साथ उनके संयम की सफलता की कामना की।

समारोह के अध्यक्ष एवं रत्नसंघ के **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा** ने कहा कि माघ शुक्ला द्वितीया हमारे आचार्य भगवन्त गुरु हस्ती का दीक्षा-दिवस है, इस मंगल मय दिन पर हम दीक्षार्थी बहिनों का, दीक्षार्थी बहिनों के परिवारजनों का स्वागत, सत्कार, बहुमान करने के साथ दीक्षा की अनुमोदना में कुछ-न-कुछ व्रत-नियम लेकर अपने जीवन को सार्थक-सफल बनाएं। समूचे नगर के प्रेम-सहयोग के लिए सुराना साहब ने अपनी ओर से तथा रत्नसंघ की ओर से आभार व्यक्त किया।

संघ-संरक्षक एवं शासन सेवा समिति के संयोजक **श्री रतनलालजी बाफना** ने दूदू जैसे छोटे गांव में इतनी शान से आयोजित समारोह पर विस्मय व्यक्त करते कहा कि आप-सब दूदूवासियों का प्रेम सदा याद रहेगा। बाफना साहब ने चारों बहिनों की संयम-यात्रा की सफलता हेतु शुभकामना व्यक्त की। श्री बाफना साहब के गद्य-पद्य भाषा-भाव में दीक्षार्थी बहिनों के प्रति व्यक्त विचार प्रभावी थे।

संघ महामंत्री **श्री पूरणराजजी अबानी** ने कहा कि मेरे शब्दकोष में शब्द नहीं कि मैं दूदू संघ के लिए कुछ बोल सकूँ, आपने दूदू को तीर्थ बना दिया। यहाँ के प्रत्येक परिवार ने अपनत्व, आतिथ्य एवं प्रेम दिया उसके लिए संघ अध्यक्ष श्री विनोद्कुमारजी मेहता, मंत्री श्री माणकचन्दजी कोठारी और उनकी समस्त टीम का तहेदिल से हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। जब कभी भी रत्नसंघ का इतिहास लिखा जायेगा तो आपकी ये सेवाएं स्वर्णिम अक्षरों में लिखी जायेंगी। उन्होंने शांतिपूर्वक कार्यक्रम की क्रियान्विति में सबके सहयोग के लिए आभार प्रदर्शित किया।

हष-हर्ष, जय-जय के जयकारों के साथ अभिनन्दन-समारोह सम्पन्न हुआ। अभिनन्दन समारोह का संचालन श्री सुमतिजी मेहता, श्री राजेन्द्रजी जैन 'राजा' एवं श्री तरुणजी बोहरा ने किया।

महाभिनिष्क्रमण यात्रा

माघ शुक्ला तृतीया गुरुवार का मंगल प्रभात दूदू नगर के इतिहास में नव प्रभात का

सुन्दर सन्देश लेकर उपस्थित हुआ। चारों दीक्षार्थी बहिनें अपने पारिवारिक-परिजन, इष्ट-मित्र एवं संघ के आबाल-वृद्ध सदस्यों के साथ धर्माचार्य-धर्मगुरु पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन के साथ मांगलिक श्रवण कर रत्नसंघीय परम्परा का परिपालन करते हुए अभिनिष्क्रमण के उन्मुख हुई, तो दीक्षार्थी बहिनों के मुख-मण्डल पर खुशी का नजारा छुपाए नहीं छुप रहा था। ओसवाल कॉलोनी से प्रारम्भ हुई महाभिनिष्क्रमण यात्रा मौजमाबाद रोड़ स्थित एन.बी. गार्डन दीक्षा-स्थल पर जय-जयकारों के साथ सम्पन्न हुई।

दीक्षा-महोत्सव

आचार्यप्रवर **पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** अपने मुनिपुंगवों के साथ दीक्षा-स्थल पधारे। उसके पूर्व महासतीवृन्द का दीक्षा-स्थल पर पदार्पण हो गया था। संतों के बैठने के लिए स्थान खुले चबूतरे पर संतों ने बनाया। एक ओर महासतीवृन्द और दूसरी तरफ खुला स्थान दीक्षार्थी बहिनों के लिए था, जहाँ वे वंदन कर सकें और दीक्षा-पाठ अंगीकार कर सकें। पाण्डाल में दीक्षार्थी बहिनों के परिवारजनों के लिए तथा विशिष्ट पदाधिकारियों के लिए स्थान पहले से आरक्षित था। सामायिक-साधना के लिए एक ओर भाइयों की तो दूसरी ओर बहिनों की व्यवस्था थी।

आचार्यप्रवर और संत-मुनिराजों के विराजने के अनन्तर कार्यक्रम संचालक श्री सुमतिचन्दजी मेहता व श्री प्रकाशचन्दजी सालेचा ने कतिपय सूचनाओं का प्रसारण किया, कुछ जयनाद करवाए। आचार्यप्रवर ने नमस्कार महामंत्र से शुभारम्भ किया। संतों ने स्वर मिलाए। जनसमुदाय शान्त चित्त से गुरुदेव की ओर निहारने लगा। नमस्कार के पश्चात् गुरुदेव ने 'ओम शांति, शांति , शांति सब मिल शांति कहो' भजन की चन्द पंक्तियों का उच्चारण किया तो श्रावकों ने भी शांतिनाथ भगवान की प्रार्थना में समवेत स्वर मिलाना शुरू कर दिया। जिसे जहां भी स्थान मिला, स्थान ग्रहण किया। सैंकड़ों लोग पाण्डाल के आगे खड़े-खड़े दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम देखते रहे।

आचार्यप्रवर के संकेत से **श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.** ने अपने प्रवचन में फरमाया कि संसारी के पास खारे पानी की गागर है तो संयमी के पास क्षीर-सागर है। सच्चा सुख संयमी प्राप्त करता है। मुनिश्री ने कहा-त्याग शांति का रक्षक है, जब कि लोभ की लाय में करोड़ों की आय भी हाय-हाय वाली है। पैसा, पद और प्रतिष्ठा मद करने के लिए नहीं, किन्तु किसी की मदद करने के लिए है। आसक्ति दुर्गति का कारण है, अतः आप आसक्ति से बचें। आचार्यश्री की दूरदर्शिता का बखान करते मुनिश्री ने कहा कि जयपुर, अजमेर,

मदनगंज जैसे बड़े नगरों की विनतियाँ होते हुए दूदू संघ को दीक्षा का अवसर मिला, दूदू वासियों ने प्राप्त अवसर का अच्छा उपयोग किया है।

व्याख्यात्री महासती **श्री रुचिताजी म.सा.** ने 'संयम सुखदायी है' विषय पर विचार रखे तथा संत-सतीवृन्द की ओर से शुभकामना रूप एक-एक पंक्ति में भावना प्रस्तुत की। महासती मण्डल ने समवेत स्वर में संयम विषयक गीत की प्रस्तुति दी।

आचार्यप्रवर की आज्ञा से **श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.** ने अपने मनोभाव रखते कहा कि बाहर देह से और भीतर मोह से संग्राम करना संयम है। आप अभी मौजमाबाद रोड़ पर बैठे हैं। मौज का मार्ग है संयम। संसार का मार्ग तो मौत का मार्ग है। आप-सब जन हैं, जन से सज्जन और सज्जन से निरंजन होना है, यही है सज्जनकंवर बाईसा का जीवन-अर्थ। दूसरी बहिन है नेहा। नेहा कौन ? देह से उठकर नेह और नेह से विदेह। रूचिता यानी बार-बार चित्ता में जलने के बजाय रूचिता मिल जाये तो इशिता मिलते देर नहीं। खुशबू से खुश बनना है। संयम का मार्ग सदा खुशहाल है।

संत-सतीवृन्द के प्रवचन चल रहे थे, इसी बीच राजस्थान सरकार के गृहमंत्री **माननीय श्री गुलाबचन्दजी कटारिया** का दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम में पदार्पण हुआ। चारों ओर से पुलिस अधिकारियों से घिरे रहने वाले दृढ़धर्मी अनन्य आस्थावान श्रावकरत्न ने मुंह पर मुंहपति बांधकर पाण्डाल में प्रवेश किया। आचार्य श्री हीरा, संत-सतीवृन्द को वंदन-नमन कर अपने स्थान पर विराजे। जनसमुदाय को गृहमंत्री महोदय की भक्ति-भावना और श्रावकोचित्त व्यवहार देखकर अत्यन्त प्रमोद हुआ। एक गृह मंत्री द्वारा इस प्रकार का भक्तिभावपूर्ण विनय व्यवहार प्रभावित करने वाला था। मंच संचालक श्री सुमतिचन्दजी मेहता ने विशाल जनसभा में कटारिया साहब के आगमन की घोषणा करते हुए कहा कि हमारे लिए यह हर्ष और गर्व का विषय है कि गृहमंत्री महोदय धर्माचार्य-धर्मगुरु की सभा में एक श्रावक की तरह मुंहपत्ति लगाकर हमें सन्देश दे रहे हैं कि हम धर्म-संघ की मर्यादा बनाए रखने में सदैव सजग रहें। धर्म सभा में गृहमंत्री महोदय के पी.एस. श्री महेन्द्रजी पारख जो स्वयं गुरुभक्त हैं, साथ पधारे।

कार्यक्रम संचालक श्री सुमतिचन्दजी मेहता ने गृहमंत्री महोदय का अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, दूदू की ओर से माल्यार्पण से स्वागत, शॉल ओढ़ाकर सत्कार तथा मोमेन्टो प्रदान कर अभिनन्दन करने के लिए श्रीमान मोफतराजजी मुणोत और दूदू संघाध्यक्ष श्री विनोदजी मेहता को आमंत्रित किया, तत्काल गृहमंत्री ने खड़े होकर स्पष्ट घोषणा की कि मैं आचार्यश्री के सामने स्वागत-अभिनन्दन नहीं करवाता। गृहमंत्री महोदय की घोषणा को विशाल जनमेदिनी ने

एक प्रबुद्ध श्रावकरत्न की सद्-सीख के रूप में लेकर हर्ष-हर्ष, जय-जय का नाद कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम संचालक ने गृहमंत्री श्री कटारिया साहब की व्यस्तता को देखते हुए उन्हें अपने विचार रखने हेतु आमन्त्रित किया।

गृहमंत्री महोदय ने आचार्यप्रवर, संत-मुनिराजों एवं महासती मण्डलों को वंदन-नमन कर जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे दीक्षा महोत्सव में आने का, दीक्षार्थी बहिनों के दर्शन करने का सुअवसर मिला है। दीक्षा महोत्सव के पावन प्रसंग हमारे लिए बहुत श्रेष्ठ अवसर होते हैं। मैं ऐसे प्रसंगों पर पहुंचने के लिए निमन्त्रण का इन्तजार नहीं करता और बिना निमन्त्रण पहुंचने की कोशिश करता हूँ।

कटारिया साहब ने उपस्थित जनसमुदाय से स्पष्ट कहा कि मैं और आप दोनों दो कारणों से यहां पहुंचे हैं। गुरु हस्ती ने हमको सामायिक और स्वाध्याय ये दो मंत्र दिए। गुरु हीरा का सन्देश है कि हम-सब व्यसन मुक्त हों। आप-हम सब व्यसन मुक्त होंगे तो हम हीं नहीं, हमारे बच्चे भी सुखी होंगे। मैं यह बात इसलिए कह रहा हूँ कि सुख धन से नहीं, शांति से मिलता है। धन कइयों के पास है, लेकिन वे शांति का अनुभव नहीं करते। आचार्यश्री और ये संत-सती जो यहां विराजे हुए हैं, उनके पास धन तो नहीं है, पर शांति है। कटारिया साहब ने कहा-आज हर व्यक्ति का कमाने पर जोर है। कमाई और पढ़ाई पर सब सोचते हैं। हर व्यक्ति पैकेज पकड़ता है। मेहनत करके अर्जित करें उसमें कोई हर्ज नहीं, पर पैकेज वाला संस्कारित नहीं होगा तो वह शांति नहीं पा सकता। मैं इन धर्मगुरुओं को पावर हाउस मानता हूँ और मुझे खुशी है कि मैं इस पावर हाउस से जुड़ा हूँ, जुड़ा रहूँगा। आचार्य श्री हीरा की ओर मुखातिब होकर गृहमंत्री महोदय ने कहा- समाज इस पावर हाउस से प्रकाशित हो रहा है। हम और हमारा समाज कितना भाग्यशाली है कि हमें ज्ञान का प्रकाश मिल रहा है। आज भाषण की नहीं, आचरण की जरूरत है। अगर भाषण से देश ठीक हो तो कभी का ठीक हो गया होता। भाषण के अनुसार आचरण होना चाहिए। हमें संस्कार चाहिए। आज सब कुछ है, किन्तु इन्सान अच्छा नहीं है यह विनाश का कारण है। मै अच्छा श्रावक बना रहूँ, समाज गौरव बढ़े और मैं जनता की सेवा कर सकूँ यह आचार्यश्री से आर्शीवाद चाहता हूँ। ये बहिनें दीक्षा ले रही हैं। आप-हम इनकी अनुमोदना करने आए हैं तो कुछ-न-कुछ त्याग-तप में शक्ति लगाएं।

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने अपने उद्गार रखते हुए कहा कि कटारिया साहब भक्ति भावना वाले श्रावक हैं। शुरू से आप अच्छे वक्ता रहे हैं, आचार-विचार-व्यवहार से स्पष्ट और कर्त्तव्य से चुस्त-दुरूस्त हैं। आज लोग धर्म को जयकारों से चलाना चाहते हैं, धर्म जयकारों से नहीं चलता। धर्म चलता है सदाचरण से, संयम से। संसार में

रहकर प्राणी संसार तज सकता है। जय-जयकार व भाषणों से यह धर्म नहीं चल सकता। आपकी संतान कहाँ जा रही है, उसका आचरण एवं नीति कैसी है? इसकी चिंता करनी होगी। आज बच्चों को सुधारने का कोई भी जिम्मा नहीं ले रहा। अहमदाबाद गुरुकुल में संस्कारों से संस्कारित करने का उपक्रम चल रहा है। यदि आपकी नसों में खून का जरा-सा भी कतरा बचा है तो संभल जाओ। युवा पीढ़ी को बचा लीजिये। आप दीक्षा के अनुमोदन में यहां आए हैं, आप और कुछ कर सकें या नहीं, इतना जरूर कर लीजिए कि अपने घर का बच्चा व्यसन नहीं करेगा तो आपका यहां आना सार्थक हो जाएगा। तत्त्वचिंतक मुनिश्री का प्रवचन चल रहा था कि इसी बीच विरक्ता बहिनें जयनाद के साथ एक-एक कर पूज्य गुरुदेव के सम्मुख साध्वी वेश में उपस्थित हुई। माताएं सिर पर टोकरी लिए चल रही थीं। टोकरी में वस्त्र-पात्र आदि उपकरण रखे हुए थे। एक-एक कर चारों बहिनें पूज्य गुरुदेव के पास पहुँची। वन्दन-नमन किया।

आचार्य श्री ने फरमाया- ये बहिनें वस्त्र परिवर्तन करके आ गई हैं। संयम स्वीकार करने वाली मुमुक्षु बहिनें स्वच्छन्दता त्याग कर संयम-पथ पर अग्रसर होना चाहती हैं। हम, दीक्षा देने के पहले पारिवारिक-परिजनों की आज्ञा-अनुमति लेते हैं। बिना आज्ञा संयम स्वीकार नहीं करवाया जाता। चारों बहिनों ने अपने पारिवारिक-परिजनों से दीक्षा की आज्ञा खड़े होकर देने का अनुरोध किया, सभी परिजनों ने खड़े होकर पूज्य गुरुदेव को सहर्ष आज्ञा प्रदान की। आज्ञा-अनुमति का दृश्य देखकर यह स्पष्ट आभास हो गया कि दीक्षा भी तभी होती है जब परिवारजन सहर्ष स्वीकृति करते हैं।

आचार्य श्री ने फरमाया कि पारिवारिक-परिजनों की तरह अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पदाधिकारी हों या श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, दूदू के अधिकारी ही क्यों न हों, दोनों संघों के पदाधिकारी आज्ञा दें। संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत, शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना, संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराना, कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा, डॉ. अशोकजी कवाड़, महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी सहित राष्ट्रीय पदाधिकारियों व स्थानीय दूदू संघ के अध्यक्ष श्री विनोदकुमारजी मेहता, उपाध्यक्ष श्री ज्ञानचंदजी नाहर, मंत्री श्री माणकचंदजी कोठारी, सहमंत्री श्री महावीरप्रसादजी कोठारी, कोषाध्यक्ष श्री गौतमसिंहजी चौपड़ा आदि ने खड़े होकर आज्ञा प्रदान की। युवक परिषद् के पदाधिकारी श्री सुरेन्द्रजी नाहर, श्री राजेन्द्रजी कोठारी, श्राविका मण्डल दूदू की श्रीमती प्रमिलाजी मेहता व श्रीमती नीराजी मेहता ने भी खड़े होकर आज्ञा-अनुमति प्रदान की।

आचार्यश्री ने फरमाया- पारिवारिक परिजनों और संघ पदाधिकारियों के अलावा मैं यहां

उपस्थित राज्य सरकार की ओर से गृहमंत्री गुलाबचन्दजी कटारिया से भी चाहता हूँ कि वे अनुमति प्रदान करें। गृहमंत्री ने खड़े होकर दीक्षा हेतु अनुमति प्रदान की।

आज्ञा-अनुमति के अनन्तर आचार्यश्री ने दीक्षार्थी बहिनों की ओर मुखातिब हो कहा कि अब आप उपस्थित जन-समुदाय से क्षमायाचना करें। दीक्षार्थी बहिनों ने माता-पिता और परिवारजनों के चरण-स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लिया और जनसमुदाय को हाथ जोड़कर अब तक जीवन में जो भी उनके प्रति भूलें हुईं, उसके लिए विशुद्ध भाव से क्षमायाचना की।

दीक्षा महोत्सव पर विशाल जनमेदिनी एकत्रित होती हैं सब सुन ही लेंगे, यह संभव नहीं होता, किन्तु सुनने से भी अधिक दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम देखने के लिए होता है, इसलिए आचार्यश्री ने उपस्थित जनसमुदाय का आह्वान किया कि आपको सुनाई दे या नहीं, आप ध्यान पूर्वक कार्यक्रम का अवलोकन तो करें ही, हमारे विधि-विधान को जानने-समझने का प्रयास भी करें और कुछ-न-कुछ व्रत-नियम की श्रद्धा समर्पित करने में कोताही नहीं करें। आप शादी-विवाह में जाते हैं, किसी फंक्शन में शरीक होते हैं तो कुछ भेंट देते हैं। हम आपसे रूपया-नारियल नहीं लेते और न ही मांगते हैं, पर आप यहाँ आए हैं, दीक्षा की अनुमोदना करना चाहते हैं तो कोई-न-कोई व्रत-नियम अवश्य लें, खाली हाथ न जाएं।

आचार्य श्री हर काम समय के साथ प्रारंभ करते हैं और समय पर ही समापन करने का ध्यान रखते हैं। दीक्षा का समय हो जाने के कारण आचार्य श्री ने नमस्कार महामंत्र से लेकर इच्छाकारेणं, तस्सउत्तरी का पाठ बोला। 'अप्पाणं वोसिरामि' के साथ चारों दीक्षार्थी बहिनों को इच्छाकारेणं का ध्यान करने को कहा। ध्यान के पश्चात् दीक्षार्थी बहिनों ने पुनः वन्दन-नमन किया। आचार्यप्रवर ने लोगस्स का समवेत स्वर में उच्चारण किया।

आचार्यश्री ने फरमाया- मैं आज इन बहिनों को एक ऐसा मंत्र देने जा रहा हूँ जिसके प्रभाव से वे स्वयं सुखी रहेंगीं और अपने सान्निध्य में आने वालों को सुख-शान्ति का मार्ग प्रशस्त करेंगी। इस मंत्र को स्वीकार करने के बाद एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के सभी जीवों को न मारेंगी, न मरवाएंगी और न मारने वालों का अनुमोदन ही करेंगी। स्वयं न झूठ बोलेंगी, न बोलने वालो को अच्छा समझेंगी। मन-वचन-काया से न चोरी करेंगी, न करवाएंगी, न करने वालों की अनुमोदना ही करेंगी। कुशील का सेवन न खुद करेंगी, न कुशील सेवन करने का कहेंगी और न अनुमोदना ही करेंगी। नोट, लिफाफा, पैसा, चैक, बैंक-बैलेंस आदि किसी भी तरह का परिग्रह नहीं रखेंगी, न रखने का कहेंगी न रखने वालों का अनुमोदन ही करेंगी। पांच महाव्रतों का मन से, वचन से और काया से, तीन करण-तीन

योग से पालन करेंगी। आज से किसी पर क्रोध नहीं करेंगी, अहंकार नहीं करेंगी। अट्ठारह पापों का त्याग रखेंगी।

आचार्यश्री ने संक्षेप में दीक्षा के पाठों का सार सुनाया। बहिनों को जो दीक्षा-पाठ ग्रहण कर रही थीं, उन्हें एक-एक पाठ का उच्चारण तो करवाया ही, पाठ का हार्द भी समझाया। आचार्यश्री ने चारों दीक्षार्थी बहिनों को 'करेमि भंते' के पाठ से प्रतिज्ञा-सूत्र प्रदान कर तीन बार वोसिरामि-वोसिरामि बुलवाकर मुमुक्षु बहिनों को दीक्षा-मंत्र प्रदान किया।

दीक्षा-पाठ एवं जय-जयकारों के जयनाद के पश्चात् कार्यक्रम संचालक श्री सुमतिचन्दजी मेहता ने दूदू दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम की सफल क्रियान्विति में सबके सहयोग के लिए आभार प्रदर्शित करते हुए आवश्यक सूचनाएं प्रसारित की। दीक्षा महोत्सव पर अन्यान्य श्रीसंघों के कई पदाधिकारीगण यहां पधारे हैं, ज्ञानगच्छ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विनयकुमारजी जैन सहित कतिपय नामों का उल्लेख संचालक महोदय ने किया। दूदू श्रीसंघ का विशेष अनुरोध कि दीक्षा महोत्सव पर पधारे सभी श्रीसंघों की एवं श्रद्धालुओं की भोजन व्यवस्था पास ही पाण्डाल में रखी गई है। हम-सब दूदू श्रीसंघ के आतिथ्य सत्कार का स्नेह पूर्वक समादर करें। व्यवस्था में सहयोग करें।

आचार्य श्री, संत-मुनिराजों और महासतियांजी महाराज ने एक-एक कर दीक्षा-स्थल से प्रस्थान किया।

हजारों श्रद्धालुओं ने एकाग्रता पूर्वक दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम में भागीदारी प्रदर्शित कर शासन-दीप्ति में सकारात्मक सहयोग करके कार्यक्रम की सफल क्रियान्विति की । दूदू श्रीसंघ का दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम सदा-सर्वदा स्मरणीय रहेगा।

दिन भर महावीर भवन में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। लोग व्रत-नियम लेते, मांगलिक सुनते और अपने गन्तव्य की ओर प्रस्थान करते रहे, सायं तक कई श्रीसंघ दीक्षा की अनुमोदना करके प्रस्थान कर गए।

भव्य कार्यक्रम की सफलता में आचार्यश्री हीरा का अतिशय-प्रभाव तो प्रभावी निमित्त था ही, जनमानस की शुभभावना भी एक सशक्त कारण रही।

नवदीक्षिता साध्वियाँ छेदोपस्थापनीय-चारित्र में आरूढ़
नवीन नामकरण सम्पन्न

ओसवाली मौहल्ला स्थित महावीर भवन, (जैन स्थानक) में आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक जैनाचार्य पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान्

अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 10 तथा महासतीवृन्द की सन्निधि में बुधवार 17 फरवरी 2016 को दूदू में नव दीक्षिता चारों साध्वियों की बड़ी दीक्षा विधि सम्पन्न हुई।

प्रवचन सभा में आचार्यप्रवर चौकी पर विराजे फिर उनके आजू-बाजू महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा, श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री रविन्द्रमुनिजी म.सा. विराजे।

महावीर भवन स्थित नीचे के हॉल में एक तरफ विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रूचिताजी म.सा. आदि ठाणा 24 विराजे। **नवदीक्षिता साध्वी श्री सज्जनकंवरजी म.सा., साध्वी श्री नेहाजी म.सा., साध्वी श्री रुचिताजी म.सा. एवं साध्वी श्री खुशबूजी म.सा.** संघनायक के सम्मुख वन्दन-नमन कर खड़ी हो गई।

आचार्यप्रवर ने नमस्कार-महामंत्र बोलकर उपस्थित जन-समुदाय को सम्बोधित करते हुए फरमाया- "तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने आत्मा से परमात्मा बनने के लिए श्रुत और चारित्र रूप धर्म का कथन किया है। इस श्रुत और चारित्र धर्म को दूसरे शब्दों में 'ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्ष-मार्गः' कहा है। आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज) की भाषा में कहूँ तो इसे सामायिक और स्वाध्याय के नाम से कहा जा सकता है। व्यवहार में ये दोनों शिक्षा और दीक्षा के नाम से कहलाती हैं। शिक्षा अर्थात् ज्ञान और दीक्षा अर्थात् आचरण। शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् दीक्षान्त-समारोह किया जाता है।

जैन धर्म की दीक्षा में प्रथम सामायिक-चारित्र को रखा गया है तो दूसरा छेदोपस्थापनीय-चारित्र है। सामायिक-चारित्र किन्हें देना चाहिए, इस सम्बन्ध में अमुक सीमा तक ज्ञान होना आवश्यक बताया है। दशवैकालिक सूत्र, वीरस्तुति, सुखविपाक का ज्ञान प्रारम्भिक ज्ञान की स्थितियों में रखा गया है। उत्तराध्ययन सूत्र का पहला अध्ययन, नौवां अध्ययन जैसे कुछ रूप आचार्य भगवन्त के शासन में कहे गए हैं। इसके साथ समिति-गुप्ति, पच्चीस बोल, तेंतीस बोल आदि आवश्यक ज्ञान की बात कही गई है। तीर्थंकर भगवन्तों की भाषा में जाति-सम्पन्न, कुल-सम्पन्न के बाद ज्ञान-सम्पन्न और दर्शन-सम्पन्न को स्थान दिया गया है। जातिवान बैल गर्दन टूट जाय, उसकी परवाह नहीं

करता, लेकिन लिए हुए भार को पार उतारता है। जातिवान घोड़ा अपने प्राणों के बजाय मालिक की प्राण-रक्षा में तत्पर रहता है। सामायिक-चारित्र ग्रहण करने वाला जाति सम्पन्न, कुल सम्पन्न होना चाहिए। यहाँ क्षुद्र को ज्ञान देने की मनाही नहीं है। ज्ञान हर किसी को दिया जा सकता है, बशर्ते कि वह पात्र हो। जाति-सम्पन्न, कुल-सम्पन्न का अर्थ है जिनके माता-पिता का आचरण श्रेष्ठ हो, वे जाति-सम्पन्न, कुल-सम्पन्न में शुमार किए गए हैं। जाति-सम्पन्न, कुल-सम्पन्न ली गई प्रतिज्ञा का सक्षमता से पालन करता है।

आज नवदीक्षित साध्वियों को छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ करवाया जा रहा है। सेना में पहले रंगरूटों को भर्ती किया जाता है। रंगरूट भर्ती हो गए, तो फिर उन्हें ट्रेनिंग दी जाती है। एक चिकित्सक भी जब डिग्री प्राप्त लेता है तो फिर उसे प्रायोगिक ज्ञान दिया जाता है। डिग्री के बाद ट्रेनिंग। कलेक्टर आदि अधिकारी जो भी बनते हैं उन्हें भी ट्रेनिंग दी जाती है। हमारे यहाँ भी अमुक प्रकार का ज्ञान लेने के बाद ट्रेनिंग के रूप में प्रकृति का निरीक्षण किया जाता है, कषायों की मन्दता से सम्बन्धित जांच की जाती है, विनय का रूप कैसा है और निभने-निभाने की कला देखकर छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ करवाया जाता है।

आचार्यप्रवर ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन के पश्चात् नमस्कार महामंत्र बोलकर इरिया वहियं-आलोचनासूत्र इच्छाकारेणं, उत्तरीकरणसूत्र तस्सउत्तरी का पाठ बोलकर-बोलाकर नवदीक्षिता साध्वियों को एक इच्छाकारेणं का ध्यान करने को कहा। आचार्य श्री ने भी इच्छाकारेणं का ध्यान किया। ध्यान समाप्ति पश्चात् काउसग्ग में आर्त्तध्यान न हटाया हो तत् सम्बन्धी मिच्छा-मि-दुक्कड़ं देकर लोगस्स का सस्वर उच्चारण करने के पश्चात् नवदीक्षिता साध्वियों को वन्दन-नमन करने का संकेत किया। वन्दन-नमन के पश्चात् पुनः इच्छाकारेणं-तस्सउत्तरी पाठों का उच्चारण किया गया। ध्यान में लोगस्स का ध्यान किया-करवाया गया। ध्यान के पश्चात् लोगस्स का उच्चारण किया गया।

आचार्यश्री के संकेत से चारों नवदीक्षिता साध्वियों ने अपने अन्तर्मन के भाव समवेत स्वर में इस प्रकार अभिव्यक्त किए-''ये प्रार्थना दिल की बेकार नहीं होगी। गुरुदेव सिर पे तेरा हाथ है, गुरुदेव डरने की क्या बात है महाव्रत धारूँगी, हर आज्ञा पालूँगी''। हस्ती की मस्ती में हीरा के उपवन में हम अपनी भूमिका-भागीदारी का प्राण-प्रण से निर्वहन करेंगी, ये भाव समवेत स्वर में जन-जन ने सुने।

आचार्यप्रवर ने दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन फरमाए। एक-एक अध्ययन का हार्द समझाया। 'धम्मो मंगलमुक्किट्टं' गाथा से प्रारम्भ एक-एक कर छज्जीवणी अध्याय का मूल, अर्थ एवं विवेचन समझाया। नवदीक्षिता साध्वियाँ हाथ जोड़े हुए और नत-मस्तक हो एक-एक पाठ को बड़े ध्यान से सुन-समझ रही थीं तथा छेदोपस्थापनीय चारित्र

में आचार्यश्री द्वारा नवदीक्षिता साध्वियों को आरूढ़ करवाने का दृश्य जनसमुदाय सश्रद्धा-भक्ति आत्मीयता से देखकर हर्षित था।

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी महाराज ने आचार्यप्रवर के संकेत पर अपनी बात प्रारम्भ करते हुए कहा कि महापुरुषों का कृतित्व हमें प्रेरणा कर रहा है कि हम अपने कर्त्तव्य का सही रूप से पालन करें। कर्त्तव्य सबसे श्रेष्ठ है। कर्त्तव्य वही निभा सकता है जिसकी दृष्टि सदैव दूसरे के अधिकार की रक्षा पर है। इसका मतलब हुआ- हर जीव को जीने का अधिकार है। हर जीव को जीने का अधिकार है तो मेरा पहला कर्त्तव्य है- अहिंसा। हर जीव का अधिकार तभी सुरक्षित होगा जबकि अहिंसा का कर्त्तव्य-पालन होगा। अहिंसा के साथ संयम कहा गया है। जड़ की जकड़ से मुक्त होना संयम है। यह वीतराग वाणी है जो हमें जीवन जीने की प्रेरणा देती है। मुनिश्री ने भ्रमर की उपमा से गोचरी का हार्द समझाया।

मुनिश्री ने कहा- औदारिक शरीर का ऐसे पोषण हो ताकि कार्मण शरीर का पोषण न हो। कामना करोगे तो दु:खी बनोगे। कामना है तो संकल्प-विकल्प रहेंगे और व्यक्ति संकल्प-विकल्प का जाल बुनता रहेगा। कामना-पूर्ति में आबद्ध नहीं होना त्याग है। सहज में मिल जाय, वह ग्रहण करना है। छेद यानी कुशल है, जो जीव को आगे बढ़ाने में सहायक है।

आचार्यश्री ने नि:संग बनने के लक्ष्य से जिस बात का प्रमुख रूप से उल्लेख किया है, उसमें पांच महाव्रत, रात्रिभोजन-त्याग का विवेचन समझाया है, हम सुनकर ही नहीं रहें, हमें रोम-रोम में श्रद्धा-कृतज्ञता जगानी होगी। चलने, बैठने, उठने, सोने, खाने, बोलने हर क्रिया में यतना रखें तो ही सब जीवों के प्रति अपनेपन का विकास होगा।

नामकरण:- आचार्य श्री ने नवदीक्षिता साध्वियों से कहा- आप धर्म-मार्ग में कर्त्तव्य करते चलें, पर जब तक शरीर है तब तक इस शरीर का कोई-न-कोई नाम होगा ही। नाम भी आगे बढ़ने में सहायक होता है। आचार्यश्री ने नवदीक्षिता महासतियों को नए नाम प्रदान किए, जो इस प्रकार हैं-

दीक्षित होते समय नाम	**नया नाम**
1. नवदीक्षिता साध्वी श्री सज्जनकंवरजी	महासती प्रियदर्शनाजी
2. नवदीक्षिता साध्वी श्री नेहाजी	महासती विदेहाश्रीजी
3 नवदीक्षिता साध्वी श्री रूचिताजी	महासती विरक्ताश्रीजी
4. नवदीक्षिता साध्वी श्री खुशबूजी	महासती आराधनाश्रीजी

आचार्यश्री ने नवदीक्षिता महासतियों से अपेक्षा रखी कि वे नाम को सार्थक करें। नाम के अनुसार आप गुणों में, कर्त्तव्य पालन में प्रदत्त नामों को सार्थक करें।

आचार्यश्री ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को सम्बोधित करते हुए फरमाया कि आपका नाम भगवान ने श्रमणोपासक रखा है। आप कितने श्रमण के उपासक हैं, अपना चिंतन करें। आप स्वयं कदाचित् संयम न ले सकें तो जो लेने वाले हैं उनके संयम में बाधक बनने के बजाय सहायक बनें।

आचार्यश्री ने यहाँ तक फरमाया कि घर में कोई मेहमान आए तो आपको भी मीठा खाने को मिलता है। आप-सब यहाँ त्याग की अनुमोदना करने आए हैं तो कुछ-न-कुछ त्याग करें, खाली कोई न जाय। आचार्यश्री के नामकरण पश्चात् महासती मण्डल ने समवेत स्वर में गुरु हीरा का गुणगान किया।

स्थानीय संघाध्यक्ष श्री विनोदकुमारजी मेहता ने कहा कि बड़ी दीक्षा के प्रसंग से जोधपुर, जयपुर, मेड़ता, गोटन, सवाईमाधोपुर, अलीगढ़-रामपुरा, अलवर, अजमेर, किशनगढ़-मदनगंज, गंगापुर सहित अनेक ग्राम-नगरों के सुज्ञजन उपस्थित हैं तो चेन्नई, बैंगलोर जैसे सुदूर क्षेत्रों के भक्त भी यहाँ पधारे हैं। मैं समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के साथ जोधपुर, मांडल, गंगापुर के दीक्षार्थी परिवारों का हृदय से शुक्रगुजार हूँ, जिन्होंने दूदू संघ की व्यवस्था में रही कमी को नजर-अंदाज कर सहयोग किया है। प्रवचन सभा में मेड़ता, गोटन, मदनगंज, अजमेर जैसे कई संघ अपनी विनति लेकर उपस्थित थे।

संघनायक की महती कृपा पर दूदू संघ की ओर से हर्ष प्रकट करते हुए मेहताजी ने कहा कि हमें गत वर्ष महासती मण्डल का चातुर्मास मिला, दीक्षा प्रसंग के साथ बड़ी दीक्षा का सुयोग पाकर हमारी प्रसन्नता कई गुना बढ़ गई है। दूदू श्री संघ ही नहीं, पूरा कस्बा आचार्यश्री के उपकारों से उपकृत है। हमारी केवल एक ही प्रार्थना है कि आप दयालु-कृपालु हैं, हमें आपश्री अपना एक चातुर्मास देकर हमारी विनति साकार करें। आपको मारवाड़ पधारना है, पधारें। मारवाड़ से पुनः दूदू पधार कर चातुर्मास देकर हमें कृतार्थ करें।

सामूहिक वन्दन पश्चात् आचार्यश्री ने मांगलिक सुनाई। हर्ष-हर्ष, जय-जय के जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- नौरतनमल मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी मासिक पत्रिका

आवश्यकता

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को दक्ष हिन्दी आशुलिपिकों की आवश्यकता है। अपनी योग्यता-विवरण के साथ निम्नांकित पते पर आवेदन करें।-

पूरणराज अबानी, महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोनः 0291-2636763

समाचार विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(01 मार्च, 2016)

- जिनशासन-गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.आदि ठाणा 6 महावीर भवन, किशनगढ़ विराज रहे हैं। अजमेर की ओर विहार सम्भावित है।
- परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा., मधुरव्याख्यी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 चौपासनी हाउसिंग बोर्ड सेक्टर 16 स्थानक, जोधपुर में विराज रहे हैं।
- सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 का जोधपुर के लक्ष्य से विहार चल रहा है। अभी गोटन पधारे हैं।
- तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 हरमाड़ा पधारे है। यहाँ से किशनगढ़ की ओर विहार संभावित है।
- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.आदि ठाणा 11 सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 का हिण्डौनसिटी की ओर विहार चल रहा है।
- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 किशनगढ़ विराज रहे हैं।
- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 सोजत रोड़ पधारे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3 किशनगढ़ विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4, सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 7 किशनगढ़ विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 किशनगढ़ विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 9 मुम्बई में विचरण कर रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री विमलावतीजी म.सा. आदि ठाणा 3 जोधपुर से बड़ी रियाँ पधारे हैं। अजमेर की ओर विहार चल रहा है।
- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 5, व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 8, व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 एवं व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 का विहार सेंधवा की ओर चल रहा है।

- **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5** का कोप्पल की ओर विहार चल रहा है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4** रोहिणी-दिल्ली में विराज रहे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6** ब्यावर पधारे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. आदि ठाणा 3** वृन्दावन विहार, जयपुर में विराज रहे हैं।

पूज्य आचार्यप्रवर ने दूदू को बनाया धन्यपुर

चार मुमुक्षु बहनों को दीक्षा प्रदान कर किशनगढ़ पदार्पण

भक्ति में शक्ति होती है। स्थानकवासी घरों की संख्या व क्षेत्र की दृष्टि से यद्यपि दूदू एक छोटा कस्बा है, किन्तु भक्ति-भावना के कारण पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने दूदू संघ को चार दीक्षाओं के आयोजन की स्वीकृति प्रदान की। दूदू की पुण्यवानी जाग उठी। यह कस्बा भारत के नक्शे पर छा गया। जन-जन की आस्था के केन्द्र आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुण रत्नाकर, जिनशासन गौरव, रत्नसंघ की सौरभ, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, परमाराध्य, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** प्रभृति संत-सतीवृन्द के पावन श्री चरण जैन भागवती दीक्षा के मंगलमय पावन प्रसंग के कारण जयपुर से दूदू की ओर बढ़ने लगे।

विगत मासांत में 30 जनवरी 2016 को नासरौवा, 31 को मोखमपुरा, 1 फरवरी को लाम्बी की ढाणी व 2 फरवरी को पूज्य गुरुदेव का गिदाणी पधारना हुआ, जहाँ खरतरगच्छ के श्री मैत्रीप्रभसागरजी म.सा. ने दर्शन-सेवा सन्निधि का लाभ लिया। 3 फरवरी को पूज्य आचार्य भगवन्त का दूदू की धरा पर उल्लासमय वातावरण में जयघोष के साथ मंगलमय पावन पदार्पण हुआ। व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 9 यहाँ पूर्व से विराजमान थे। जोधपुर से मुमुक्षु श्राविका श्रीमती सज्जनकंवरजी मेहता तथा गंगापुरसिटी से मुमुक्षु खुशबूजी जैन अपने आत्मीयजनों के साथ पूज्य आचार्य भगवन्त की चरण सन्निधि में आ गए। 4 फरवरी को माण्डल (महाराष्ट्र) से मुमुक्षु सुश्री नेहाजी व मुमुक्षु सुश्री रूचिताजी खींवसरा परिवारजनों के साथ पूज्य गुरुदेव के चरणों में प्रव्रजित होने की भावना से पधारीं। आज से दोपहर समय में बृहत्कल्प सूत्र की वाचनी संघ शिरोमणि पूज्य आचार्य भगवन्त की पावन सन्निधि में प्रारम्भ हुई। वाचन श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने एवं विवेचन महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री

महेन्द्रमुनिजी म.सा.ने सुन्दर व सटीक शैली में फरमाया। 5 फरवरी को व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. का पूज्य श्री की सेवा में पधारना हुआ। माण्डल संघ ने चातुर्मास की विनति पूज्य प्रवर के पावन श्री चरणों में रखी। सेवा सन्निधि में आये जैन सोशियल ग्रुप के युवकों को नवकार मंत्र की माला फेरने व निर्व्यसनतामय जीवन जीने की प्रभावी प्रेरणा की गई। 6 फरवरी को विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा तथा व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. आदि ठाणा के पधारने से यहाँ विराजित महासतियाँजी की संख्या 24 हो गई। 7 फरवरी को विजयनगर संघ एवं धनोप संघ चातुर्मास या अन्य किसी भी प्रसंग का लाभ प्रदान करने की विनति लेकर पूज्यवर्य की सेवा में उपस्थित हुआ। बैंगलोर से मरलेचा परिवार श्री वसन्तराजजी की युग्म सुपुत्री कुमारी चेरिशाजी व कुमारी दिविशाजी के आकस्मिक दुर्घटना में असामयिक निधन पर मांगलिक श्रवण करने सेवा में आया। 8 फरवरी को हरमाड़ा संघ चातुर्मास की विनति लेकर व अजमेर से श्राविका मण्डल अपनी भावना पूज्य गुरुदेव के चरणों में रखने उपस्थित हुआ। दीक्षार्थी बहिनें जब से गुरु चरणों में पधारीं, तब से प्रवचन शृंखला के अन्तर्गत महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. व श्रद्धेय श्री यशवंतमुनिजी म.सा. गुरु आज्ञा, विनम्रता, वाणी, व्यवहार, मान बड़ाई, ईर्ष्या, अहंवृत्ति, कषाय, सत्य, शील, मोह आदि विविध प्रसंगों पर व्याख्यान फरमाकर मुमुक्षु बहिनों की सजगता, दृढ़ता, अप्रमत्तता, निर्मोहता, अनासक्तता को वृद्धिंगत, प्रगाढ़ एवं पुष्ट करने का रसायन प्रदान करते रहे।

पूज्य आचार्य भगवंत भी स्वयं 9 फरवरी को कृपाकर प्रवचन सभा में पधारे एवं सारगर्भित, संक्षिप्त प्रवचन फरमाया (जिसका अंश पृष्ठ 12 पर प्रकाशित है।) अट्ठारस सहस्स सीलंगरथदारा। एक दया से मोक्ष है तो एक ब्रह्मचर्य से मोक्ष है। अनुमोदनार्थ आने वाला हर भाई-बहिन कुछ न कुछ व्रत नियम की भेंट द्वारा सच्चे भावों से अनुमोदना का लाभ लिरावे। दूदू वाले श्रद्धालु धर्मस्थान में आकर माला फेरें, सामायिक करें। प्राणिमित्र पद्मभूषण श्री डी.आर. मेहता ने चरण सन्निधि का लाभ लिया। किशनगढ़ व ब्यावर संघ अपनी-अपनी विनति लेकर पावन श्री चरणों में पधारे।

10 फरवरी को तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा भी जयपुर से विहार करते हुए पावन सेवा में पधार आये। पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण कर दीक्षार्थिनी चारों बहनों की आज शोभायात्रा दीक्षा धरा दूदू की सड़कों से गुजरी, स्थान-स्थान पर उनका बहुमान करने वालों की बहुलता थी। करीब 2 किमी के मार्ग में ही दो घण्टे से अधिक का समय लग गया। जिधर देखो उधर भक्तों के समूह दृष्टिगत हो रहे थे। पावन प्रसंग पर उत्साह-उल्लास का अभूतपूर्व परिदृश्य था। दोपहर समय दीक्षार्थी बहिनों व

उनके परिवारजनों का अभिनन्दन समारोह था। (दीक्षा का विवरण अलग से प्रकाशित है।) 11 फरवरी को चार-चार मुमुक्षु आत्माएँ छः काय के प्रतिपालक बनने जा रही थी। एन.बी. ग्राउण्ड 6000 से अधिक की विशाल जनमेदिनी से खचाखच भरा हुआ था। अनुमोदनार्थ मुम्बई, दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, बैंगलोर, रायचूर, हुबली, इचलकरंजी, हैदराबाद, अहमदाबाद, सूरत, जलगांव, माण्डल, पारोला, बीजापुर, होशियारपुर, धुलिया, जोधपुर, पीपाड़, भोपालगढ़, मेड़ता, गोटन, ब्यावर, अजमेर, किशनगढ़, मदनगंज, हरमाड़ा, विजयनगर, पाली, धनेरा, नागौर, बीकानेर, कोसाणा, जोबनेर, नरेना, निमाज, बिलाड़ा, जयपुर, सवाईमाधोपुर, गंगापुर, अलीगढ़-रामपुरा, कुश्तला, चौथ का बरवाड़ा, सुमेरगंजमण्डी, कुम्भकोणम, भरतपुर, रसीदपुर, खेड़ली, मण्डावर, हरसाना, लक्ष्मणगढ़, खोह, पहरसर, बालोतरा आदि अनेक सुदूर व समीपस्थ स्थलों से श्रद्धालुजन पधारे हुए थे।

पूज्य आचार्य भगवन्त दीक्षा-स्थल पर लगभग 10 बजे पधारे। संत-सतीवृंद वंदन कर विराज गये। चारों मुमुक्षु बहिनें महाअभिनिष्क्रिमण यात्रा कर गुरुदेव की सेवा में पधारीं तथा वन्दन कर आज्ञा लेकर केश कर्तन व वेश परिवर्तन के लिये प्रस्थान कर गईं। शांति नाथ स्तवन के पश्चात् श्रद्धेय श्री यशवंतमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. ने संसार की असारता व संयम की महत्ता पर विचार प्रस्तुत करते हुए संयम लेकर संसार को सीमित करने जा रही दीक्षार्थी बहिनों को निरंजन बनने के लिये मंगल मनीषा के भावों की अभिव्यक्ति की।

शिक्षा मंत्री सम्माननीय श्री गुलाबचन्दजी कटारिया व संघ के चेयरपर्सन व संरक्षक मण्डल के संयोजक श्रीमान् मोफतराजजी मुणोत का दीक्षा-स्थल पर आगमन हो गया था। श्रीमान् कटारिया साहब को अनुमोदना स्वरूप भावाभिव्यक्ति के लिए आमंत्रित किया गया। उद्बोधन में उन्होंने कहा कि मेरा सौभाग्य है, पुण्य का उदय है जो आचार्य भगवन्त के दर्शनों के साथ मुमुक्षुओं के दीक्षा प्रसंग पर अनुमोदना का अवसर मिला। यदि स्वयं दीक्षा लेने में समर्थ नहीं हैं तो अनुमोदना का लाभ तो अवश्य ले सकते हैं। यदि हम गुरुहस्ती के दो फरमान- 'सामायिक स्वाध्याय महान्।' एवं 'गुरुहीरा का यह फरमान, निर्व्यसनी हो हर इंसान' पर चलें तो देश व समाज का उत्थान सहज ही हो सकता है।

पूज्य आचार्य भगवन्त ने दीक्षा मंत्र की महिमा का आगमोक्त आधार से हार्द समझाते हुए फरमाया कि प्राचीनकाल में देवताओं को आकर्षित किये जाने वाले मंत्र भी थे। प्रेत बाधाओं को दूर करने वाले मंत्र भी थे। सम्मोहन और वशीकरण वाले मंत्र भी थे। उस काल में युद्ध के समय भी मंत्रों का अवलम्बन लिया जाता था। लेकिन इन सब मंत्रों से बढ़कर एक ऐसा मंत्र जो भगवान का दिया हुआ है, जिसके प्रभाव से यह आत्मा महात्मा बन जाती है

और महात्मा से परमात्मा बनने का सामर्थ्य भी रखती है, वह मंत्र हैं- दीक्षा मंत्र। इस मंत्र पाठ के बाद ये दीक्षार्थी माता-पिता, कलेक्टर, प्रधानमंत्री, सबके पूज्य बन जायेंगे। पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से 'करेमि भंते' के पाठ से दीक्षित बहिनों ने तीन बार वोसिरामि कहा और वे पूजनीय वंदनीय बन गईं। जनमेदिनी ने जय-जयकार कर हर्षाभिव्यक्ति से अनुमोदना के भाव प्रकट किये। आचार्य भगवन्त ने एक संस्मरण सुनाया- रामलीला देखने जाने वाले आरती वाली थाली में भेंट रूप में राशि डालते हैं। मैं भी एक बार गया, आयोजक ने कहा- सभी भक्त आरती में पैसा डालें, जो नहीं डालेगा, वह राम का चोर होगा। दीक्षा की अनुमोदना स्वरूप मेरा भी आप सभी से निवेदन है- शादी में भी जाते हैं तो कुछ देकर आते हैं। यहाँ पैसों की आवश्यकता नहीं है। मीठा माल आप खाइये। मैं आपसे खारी भेंट मांगता हूँ। संतों के चरणों में व्यसन त्याग की भेंट चढ़ाकर अनुमोदना करें। दीक्षा-महोत्सव में श्री सुधर्म जैन श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री विनयकुमारजी जैन एवं श्री मदनजी बालड़ ने भी अनुमोदना का लाभ लिया। मांगलिक श्रवण के बाद भक्तों का यथास्थान के लिये प्रस्थान का क्रम घण्टों तक चलता रहा। चतुर्विध संघ का समवसरण सम परिदृश्य अद्भुत एवं श्लाघनीय रहा। ए.डी.एम. श्री सावनकुमार चायल, ए.एस.पी. श्री संजय गुप्ता, उप-अधीक्षक श्री प्यारेलाल जी मीना आदि की अभिनन्दन समारोह व दीक्षा के दिन महनीय सेवाएँ रहीं। सकल जैन समाज के अध्यक्ष श्री विमलकुमारजी छाबड़ा, दूदू संघ के अध्यक्ष श्री विनोदजी मेहता सहित दूदू संघ का हर सदस्य, हर आगत बन्धु की आवास आदि की व्यवस्था में अहर्निश उद्यत रहा। स्वधर्मी वात्सल्य भावना के साथ समूची व्यवस्थाएँ वर्णनातीत रहीं। थोड़े से घरों वाले छोटे से कस्बे ने विशाल स्तर पर प्रबन्धन का जो आदर्श प्रस्तुत किया वह शब्दातीत है। विनति की शृंखला में पूज्य गुरुदेव की सेवा में सरस्वती नगर-जोधपुर, प्रतापनगर-जयपुर, बजरिया संघ शाखा, फत्तेपुर, पारोला, गंगापुरसिटी, कोयम्बतूर व पीपाड़ संघ ने चातुर्मास के लिये पुरजोर विनति प्रस्तुत की। बड़ी दीक्षा का कार्यक्रम 17 फरवरी को दूदू में ही आयोजित किये जाने की स्वीकृति पूज्य श्री ने फरमाई।

13 फरवरी को कोटा से श्री महेन्द्र कुमार जी, श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन चौथ का बरवाड़ा वाले अपनी माता श्रीमती शांतिबाईजी धर्मसहायिका स्वर्गीय श्री शांतिलालजी जैन के 9 फरवरी 2016 को स्वर्गवास हो जाने पर पूज्य गुरुदेव की सेवा में मांगलिक श्रवण करने परिवारजनों के साथ उपस्थित हुए। 14 फरवरी को किशनगढ़ संघ विनति लेकर व आर.एस.एस. के अखिल भारतीय स्तर के वरिष्ठ प्रचारक श्री हस्तीमल जी जैन, जैन विश्व भारती लाडनूँ के वरिष्ठ पदाधिकारी श्री अनुज जी जैन तथा आर्ट ऑफ लिंविग सिखाने की कला में दक्ष श्री निर्मल जी जैन गुरुदेव की सेवा सन्निधि का लाभ ले प्रमुदित व

प्रभावित हुए। 16 को लासूर स्टेशन संघ के सदस्य अच्छी संख्या में विनति लेकर पधारे।

17 फरवरी को बड़ी दीक्षा का कार्यक्रम 9.15 से 11.30 तक चला। पूज्य गुरुदेव ने दशवैकालिक के चार अध्ययनों का वाचन करते हुए, परिवीक्षाकाल में आचार-व्यवहार का निरीक्षण-परीक्षण कर योग्य पाये जाने पर छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरोहण कराया। (बड़ी दीक्षा की रिपोर्ट अलग से प्रकाशित है।)

मेड़तासिटी, गोटन, ब्यावर व हरमाड़ा संघ ने अपने-अपने क्षेत्र की विनति पावन श्री चरणों में रखी। दूदू की धरा पर 3 से 17 तक पूज्य गुरुदेव का विराजना हुआ। 18 को विहार फरमाकर मीणा की ढ़ाणी, 19 फरवरी को तेतरवाल की ढाणी, 20 फरवरी को दांतरी, 21 फरवरी को बांदर सिंदरी पधारने के समय विजयनगर से पूनिया श्रावक बन्धु दर्शन लाभ लेने पधारे। 22 फरवरी को प्रशासनिक अधिकारी श्री महेन्द्र जी पारख ने सेवा सन्निधि का लाभ लिया। 23 फरवरी को बडगांव में बाड़मेर संघ चातुर्मास की विनति लेकर गुरु चरणों में उपस्थित हुआ। 24 को इन्द्रा कॉलोनी (किशनगढ़) पधारने पर व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा. ने लम्बी समयावधि के बाद पूज्य गुरुदेव के दर्शनों का एवं सेवा सन्निधि का लाभ लिया। 25 फरवरी को धर्मधरा किशनगढ़ शहर में प्रमोदजन्य उपस्थिति में पूज्य आचार्य भगवन्त का मंगलमय पावन पदार्पण हुआ। 26 फरवरी को भोपालगढ़ संघ पूज्य आचार्य भगवन्त के चातुर्मास की विनति लेकर पावन श्री चरणों में उपस्थित हुआ। *-जगदीश जैन*

उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में धर्माराधन की निरन्तरता

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी **श्री गौतममुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में चौपासनी हा.बोर्ड में धर्माराधना का निरन्तर ठाट लगा हुआ है। प्रतिदिन प्रातःकाल प्रार्थना एवं पश्चात् व्याख्यान में पूरा हॉल भर जाता है। दोपहर में ठाणांग सूत्र का वाचन चल रहा है, जिसमें 25-30 श्राविकाएँ एवं 6-7 श्रावक रहते हैं। बहिनें गुरुभगवन्तों से थोकड़े एवं तत्त्वज्ञान सीख रही है। प्रत्येक बुधवार को श्राविका मण्डल की विशेष कक्षा होती है, जिसमें 30 से 40 महिलाएँ भाग लेती हैं। 17 फरवरी को 25 श्रावकों ने भिक्षु दया की आराधना की। प्रत्येक रविवार को शक्तिनगर एवं पावटा के युवक प्रातः 7.30 से 8.30 बजे तक सामूहिक सामायिक का लाभ हाउसिंग बोर्ड में आकर ले रहे हैं। इस समय 50 से 60 युवकों की उपस्थिति रहती है। प्रत्येक रविवार को धार्मिक पाठशाला भी चल रही है। उपाध्यायप्रवर के शारीरिक समाधि बनी हुई है। *-धनपत सेठिया, अध्यक्ष*

महासती मण्डल के सान्निध्य में धर्मजागरण

जोधपुर- शासन प्रभाविका साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा के

सान्निध्य में सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा-जोधपुर में नियमित धर्माराधन हो रहा है। माघशुक्ला त्रयोदशी 20 फरवरी को शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. का 70 वां दीक्षा दिवस तप-त्याग एवं गुणानुवाद के साथ मनाया गया।

मुम्बई- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 9 का विचरण-विहार मुम्बई के उपनगरों में सुख-सातापूर्वक चल रहा है। बोरिवली, कांदिवली, मलाड़, गोरेगांव, अंधेरी, विलेपार्ले होते हुए अंधेरी ईस्ट में महासती मण्डल का पधारना हुआ। यहाँ गोयनका हॉल में महासती श्री मुदितप्रभाजी द्वारा 'फाइव स्टार फैमिली' **(Five Star Family)** विषय पर एक कार्यशाला को सम्बोधित किया गया, जिसके पाँच स्टार निम्नानुसार विवेचित किए गए- **1. प्रेमी परिवार-** परिवार के प्रत्येक सदस्य में प्रेम होना चाहिए। **2. धार्मिक परिवार-** परिवार के सदस्यों को सप्ताह में एक बार एक साथ बैठकर स्वाध्याय और प्रार्थना करनी चाहिए। **3. विवेकी परिवार-** इमोशन में आकर कभी वादा नहीं करना और क्रोध में निर्णय नहीं लेना। **4. समर्पित परिवार-** परिवार के सभी सदस्य अपने दिन भर के अनुभव और समस्याओं को परस्पर शेयर करें, ताकि एक-दूसरे की समस्या का निराकरण हो सके। **5. संगठित परिवार-** परिवार के सदस्यों में परस्पर संगठन बहुत बड़ी शक्ति होती है। जिस घर में माता-पिता की बात कटती है, उस घर की पुण्यवानी घटती है। महासतीवर्या ने आज की पीढ़ी एवं पिछली पीढ़ी के बीच दूरी क्यों आ गई है, इस पर भी प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में 51 पारिवारिक सदस्यों ने भाग लिया। महासती मण्डल के पधारने से मुम्बई में धर्ममय वातावरण बना हुआ है, साथ ही मुम्बई वासियों में उमंग एवं उत्साह का संचार हुआ है। *-नरेन्द्रकुमार डागा, मंत्री*

दिल्ली- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 गाँधीनगर स्थानक में चातुर्मास पूर्ण कर शंकर नगर, कृष्णानगर, विश्वास नगर, सूर्या नगर, विवेक विहार, पटपड़गंज, नवक्रांति अपार्टमेन्ट, वरदान अपार्टमेन्ट, ऋषभविहार स्थानक (ज्ञानगच्छ परम्परा के संत श्री भद्रिकमुनिजी आदि ठाणा 3 के साथ संयुक्त प्रवचन), नवीन शाहदरा, वेस्ट आजाद नगर, गाँधीनगर, कैलाश नगर, श्री मुन्नालाल धर्मशाला, चांदनी चौक, श्री जैन स्थानक सदर बाजार, श्री जैन स्थानक कोल्हापुर रोड़, सब्जी मण्डी घण्टाघर, राणा प्रताप बाग होते हुए जैन स्थानक, मॉडल टाउन पधारे। यहाँ चारों मुमुक्षु बहनों का संघ की ओर से अभिनन्दन किया गया। विहार कर कन्हैयानगर, केशवपुरम्, पीतमपुरा, उत्तरी पीतमपुरा पधारे। यहाँ संघ शास्ता श्री सुदर्शनलालजी म.सा. के पट्टधर संघनायक शास्त्री श्री पदमचन्दजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. एवं राजर्षि श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. के साथ संयुक्त प्रवचन हुआ। यहाँ से 28 फरवरी को जैन स्थानक

शालीमार बाग पधारे हैं। यहाँ संघनायक शास्त्री श्री पदमचन्दजी म.सा. एवं सभी संत-सतियों के दर्शन-वंदन का लाभ लेकर महासती मण्डल ने रोहिणी सेक्टर-7 की ओर विहार किया है। -*अशोक सुराना, क्षेत्रीय अध्यक्ष, दिल्ली*

उपाध्यायप्रवर के 82 वें जन्मदिवस पर तप-त्याग

शान्त-दान्त-गम्भीर उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 82 वां जन्म-दिवस माघ शुक्ला चतुर्थी 28 जनवरी 2016 को तप-त्याग, उपवास-पौषध एवं गुणानुवाद के साथ देश के विभिन्न ग्राम-नगरों में मनाया गया। प्राप्त कतिपय रिपोर्ट प्रकाशित है।

पाली-मारवाड़- माघ शुक्ला चतुर्दशी गुरुवार 28 जनवरी 2016 को उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 82 वां जन्मदिवस धर्म-ध्यान, तप-त्याग, उपवास-पौषध, सामूहिक एकाशन, दया-संवर तथा कम से कम पाँच-पाँच सामायिक के साथ मनाया गया। अत्र विराजित गच्छाधिपति श्रद्धेय श्री उत्तमचन्दजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी श्रद्धेय महासतीजी श्री कीर्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में प्रवचन में पूज्य उपाध्यायप्रवर के गुणानुवाद किये गये। इस अवसर पर सामायिक-स्वाध्याय, भवन में नवकार मंत्र का जाप रखा गया तथा वृद्धाश्रम, कुष्ठाश्रम आदि संस्थाओं में मीठा भोजन कराया गया। -*रूपकुमार चौपड़ा, अध्यक्ष*

बैंगलोर- रविवार होने से यहाँ 31 जनवरी 2016 को रत्नसंघ के सामूहिक कार्यक्रम में उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 82 वां जन्मदिवस गुणानुवाद के साथ मनाया गया। यहाँ रत्नसंघ के द्वारा सामूहिक **सामायिक कार्यक्रम का शुभारम्भ** 'सीतादेवी रतनचन्द नाहर आदर्श कॉलेज' के प्रांगण, चामराजपेठ में किया गया है। श्रावक संघ के मंत्री श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने उपाध्यायप्रवर के जीवन की झाँकी विभिन्न प्रभावी संस्मरणों के साथ प्रस्तुत की। इस अवसर पर श्रावक संघ, श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के सभी गणमान्य सदस्य उपस्थित थे। -*गौतमचन्द ओस्तवाल*

बनें आगम अध्येता (5)

उत्तराध्ययन सूत्र (भाग 3) पर खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 'बनें आगम अध्येता' योजना के अन्तर्गत पाँचवीं आगम परीक्षा 'उत्तराध्ययनसूत्र' पर आयोजित हो रही है। इसके दो भागों की परीक्षा आयोजित हो चुकी है। 'उत्तराध्ययनसूत्र' तृतीय भाग में 25 से 36 अध्ययनों में से प्रश्न लिये गये हैं। तृतीय भाग का मूल्यांकन प्रश्न पत्र सभी केन्द्र स्थलों पर भेजना प्रारम्भ

कर दिया गया है। मूल्यांकन प्रश्न-पत्र भरकर अग्रांकित जयपुर पते पर भिजवाने की अन्तिम तिथि 30 मई 2016 रखी गई है। मुख्य समापक परीक्षा का आयोजन रविवार, 19 जून, 2016 को होगा। **सम्पर्क सूत्र- अध्यक्ष**-श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा, ए-8, महावीरनगर, टोंक रोड़, जयपुर(राज.), 098290-19396, **महासचिव**- श्रीमती बीनाजी मेहता, जोधपुर-097727-93625 *-बीना मेहता, महासचिव*

स्वाध्याय-शिक्षक निर्माण-शिविर का आयोजन चेन्नई, जलगांव एवं जोधपुर में

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा स्वाध्यायियों के ज्ञानार्जन में वृद्धि हो, इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की पावन प्रेरणा से स्वाध्याय शिक्षक निर्माण शिविर का आयोजन हिण्डौन एवं जयपुर में हो चुका है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए आगामी 02 से 04 अप्रैल तक चेन्नई, हैदराबाद एवं कर्नाटक के चयनित स्वाध्यायियों का शिविर स्वाध्याय भवन, चेन्नई में आयोजित किया जा रहा है। 07 से 10 अप्रैल तक जलगांव (महाराष्ट्र) में एवं 09 से 12 जून, 2016 तक जोधपुर में सामायिक स्वाध्याय भवन, पावटा में आयोजित किया जा रहा है। जो स्वाध्यायी शिक्षक बनने की योग्यता रखते हैं वे ही इन शिविरों में भाग ले सकते हैं। शिविर हेतु निम्न व्यक्तियों से सम्पर्क कर शिविर में पधारने की स्वीकृति प्राप्त कर सकते हैं। **चेन्नई-** श्री सुधीरजी सुराणा-09150640000, श्री महेन्द्रजी कांकरिया-097109-99990, **जलगांव-** श्री मनोजजी संचेती- 094225-91423, सौ. मंगलाबाई जी चौरडिया- 094227-75692, **जोधपुर-** स्वाध्याय संघ कार्यालय- 0291-2624891, श्री ओमप्रकाशजी बांठिया-94615-22309, श्री गोपालजी अब्बानी-80036-15215, श्री कमलेशजी मेहता-94142-67824, श्री धीरजजी डोसी-94625-43360, **शिक्षा समिति-** श्री प्रकाशचंदजी जैन, जलगांव-93700-20005, श्री त्रिलोक जी जैन, जयपुर- 96944-30826 *-गोपालराज अब्बानी, सचिव*

चेन्नई में रविवारीय संस्कार शिविर का वार्षिकोत्सव

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तमिलनाडु के तत्वावधान में स्वाध्याय भवन, साहुकारपेठ के प्रांगण में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की सत्प्रेरणा से सन् 2005 में बालक-बालिकाओं के सुसंस्कार हेतु प्रारम्भ हुए रविवारीय संस्कार शिविर Wings To Fly का वार्षिक उत्सव श्री जैन रत्न युवक परिषद् तमिलनाडु के संचालन में 31 जनवरी 2016 को सम्पन्न हुआ। मंगलाचरण के पश्चात् कार्यक्रम में महासती मृगावती-

चंदनबाला, खंदक ऋषि, यशोभद्र राजा, अतिमुक्त कुमार, महाराज श्री कृष्ण, नंदीषेणमुनि, धर्मरुचि अणगार, माँ के गुणगान में स्तुति, संस्कार पाठशाला के उपकार पर गीत, माता-पिता संग पुत्र संवाद, कषाय रूपी चार चोर, सत्यवादी राजा हरीशचन्द्र-तारामती पर सुन्दर प्रस्तुतियाँ दी गईं। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा के सान्निध्य में शिक्षकों का संघ की ओर से सम्मान किया गया तथा सर्वाधिक उपस्थित रहने वाले एवं कक्षा में प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं का सम्मान किया गया। यह वार्षिकोत्सव बच्चों के लिए अत्यन्त प्रेरणादायी रहा।

जयपुर में बालकों की रविवारीय पाठशाला 'दृष्टि Sunday Shine' का शुभारम्भ

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की पावन प्रेरणा से श्री जैन रत्न युवक परिषद् जयपुर के द्वारा सुज्ञ श्रावकों के सहयोग से बालकों के संस्कार हेतु नियमित रविवारीय पाठशाला दृष्टि **Sunday Shine** प्रारम्भ की गई है। इस पाठशाला हेतु 10 स्थानों का चयन किया गया है तथा सुबोध कॉलेज एवं मानसरोवर में कक्षाएँ प्रारम्भ हो गई हैं। यहाँ एक घण्टे धार्मिक शिक्षण एवं दूसरे घण्टे में व्यक्तित्व विकास की कक्षाएँ होंगी। व्यक्तित्व विकास के अन्तर्गत गायन, हस्तकला, चित्रकला, खेलकूद आदि का शिक्षण सम्मिलित है। 31 जनवरी को श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने बच्चों को प्रभावकारी तरीके से सम्बोधित किया। *-वीरेन्द्र जामड़, मनीष मेहता-शिविर संयोजक*

संस्कार केन्द्रों की निरीक्षण रिपोर्ट

14 से 24 फरवरी 2016 के बीच अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र जोधपुर द्वारा संचालित नागौर, भोपालगढ़, बिलाड़ा के संस्कार केन्द्रों का अवलोकन तथा परिवीक्षण किया गया। परिवीक्षण दल में संयोजक श्री हर्षवर्धन जी ललवाणी, सचिव राजेश जी भंडारी तथा प्रबंधक श्री नेमीचन्द जी जैन सम्मिलित थे। बालक-बालिकाओं द्वारा सीखे हुए अध्ययन की जानकारी ली गई। अध्यापिका जी से भी विचार-विमर्श कर उन्हें आवश्यक निर्देश दिए गए। योग, प्राणायाम, ध्यान, 'नित्य करिए प्रार्थना', पुनरावर्तन, नया ज्ञान कैसे सिखाएं?, उपयोगी नारे, प्रतिज्ञा-पाठ, जैन विश्वगान, छोटे-छोटे व्रतप्रत्याख्यान एवं साथ ही संस्कारों के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। सभी छात्रों को आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में बैठने के लिए आवश्यक निर्देश दिए गए। बिलाड़ा में पुरस्कार भी वितरित किए गए।

रात को स्थानीय संघ के पदाधिकारी, सदस्य एवं महिलाएं एकत्रित हुईं। परिवीक्षण

दल के सभी सदस्यों द्वारा उनसे अधिक से अधिक छात्रों को जोड़ने हेतु आग्रह किया गया। विचार-विमर्श के साथ जैन विश्वगान के पश्चात् सभी विसर्जित हुए। *-राजेश भण्डारी, सचिव*

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आचार्य पदारोहण रजत वर्ष-2015-2016

जिनशासनगौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पदारोहण के रजत वर्ष में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा ज्ञानाराधन, तपाराधन व धर्माराधन हेतु कतिपय कार्यक्रम निर्धारित किए गए हैं। सभी गुरुभ्राताओं से निवेदन है कि इस कार्यक्रम को आपके परिवार में, संघ में प्रचारित एवं प्रसारित करने के साथ अपनी श्रद्धानुसार ज्ञानाराधना-तपाराधना एवं धर्माराधना से स्वयं जुड़ें तथा अपने सम्पर्क में आने वाले अन्य महानुभावों को जोड़कर रजत वर्ष के पावन प्रसंग पर गुरुदेव के प्रति सच्ची श्रद्धा की अभिव्यक्ति करें। आपके क्षेत्र में व्यक्तिगत अथवा संघ स्तर पर सम्पन्न कार्यक्रमों की रिपोर्ट संघ कार्यालय को प्रेषित करावें, ऐसा विनम्र अनुरोध है।

संघ द्वारा निर्धारित कार्यक्रम

(अ) ज्ञानाराधन-

वर्ग-प्रथम- 1. प्रतिक्रमण सूत्र विधि व अर्थ सहित, 2. हीराष्टक-हिन्दी पद्यानुवाद, 3. चयनित 25 थोकड़े, 4. वीर स्तुति-मूल एवं अर्थ, 5. उत्तराध्ययनसूत्र- प्रथम अध्ययन का सार।

वर्ग-द्वितीय-1. दशवैकालिक अध्ययन 1 से 4 तक अर्थ सहित, 2.उत्तराध्ययन सूत्र-9 वां अध्ययन का सार, 3.आचार्य-उपाध्याय के गुण, 4. विनीत शिष्य के कर्त्तव्य, 5. आचार्य श्री हीरा एवं उपाध्याय श्री मान के जीवन की प्रमुख विशेषताएँ।

नोट:-आवश्यकतानुसार पाठ्य सामग्री जिनवाणी में आलेखों एवं साहित्य के माध्यम से उपलब्ध कराई जायेगी।

(ब) तपाराधन- 1. कम से कम 2500 व्यक्तियों को न्यूनतम एक वर्ष की अवधि के लिए सामूहिक रात्रि भोजन त्याग हेतु प्रेरित करना (एक वर्ष की समयावधि तक अभ्यास के साथ इसमें आगे बढ़ने हेतु विनम्र अनुरोध), 2. कम से कम 2500 व्यक्तियों को जमीकन्द त्याग हेतु प्रेरित करना, 3. कम से कम 250 वर्षीतप (एकान्तर/एकाशन) का लक्ष्य, 4. श्रावक-श्राविकाओं को इस वर्ष में कम से कम 25 आयंबिल/नींवी तप हेतु प्रेरित करना। 5. वर्ष पर्यन्त अथवा मासपर्यन्त कषायविजय हेतु अभ्यास।

(स) धर्माराधन- 1. कम से कम 25 प्रमुख क्षेत्रों में नियमित संवर-साधना हेतु श्रावक-

श्राविकाओं को प्रेरित करना, 2. स्वाध्याय संघ का कार्य क्षेत्र देश के 25 प्रमुख प्रान्तों तक फैलाना, 3. कम से कम 125 दम्पतियों को शीलव्रत हेतु प्रेरित करना, 4. कम से कम 125 व्यक्तियों को चौविहार हेतु प्रेरित करना, 5. श्रावक-श्राविकाओं को वर्ष में कम से कम 25 पौषध करने हेतु प्रेरित करना।

(द) व्यसन -मुक्ति-

आचार्य श्री हीरा के सन्देश 'हीरा गुरु का यह आह्वान, व्यसनमुक्त हो हर इन्सान' को लेखों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों एवं प्रचार-यात्रा के माध्यम से देश के कोने-कोने में प्रचारित व प्रसारित करना।

आइए! आप-हम सभी त्याग-तप की आराधना के साथ लक्ष्य सिद्धि हेतु अग्रसर हों। संघनायक साधना सुमेरू महापुरुष के चरण सरोजों में यही हमारा विनम्र श्रद्धा समर्पण होगा। - *पूरणराज अबानी- राष्ट्रीय महामंत्री*

सूरत संघ के बढ़ते कदम

व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 5 के चातुर्मास के पश्चात् सूरत के श्रावक-श्राविकाओं ने विहार सेवा का निरन्तर लाभ लिया। नवसारी तक प्रतिदिन 30 से 200 और नवसारी से डहाणु तक 8 से 15 श्रावक-श्राविकाओं ने विहार सेवा की। महासती मण्डल की प्रेरणा का प्रभाव है कि यहाँ प्रतिदिन 20 से 25 एवं प्रत्येक रविवार को 120 से 170 श्रावक-श्राविका स्थानक में आकर सामायिक करते हैं। अष्टमी, चतुर्दशी एवं पाक्षिक पर्व पर स्थानक में संवर साधना होती है। पक्खी को सायंकालीन प्रतिक्रमण होता है। 24 से 26 जनवरी 2016 तक श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सूरत के द्वारा मॉथेरान में पारिवारिक स्नेह-मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। मॉथेरान जाते समय मुम्बई में व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 9 के दर्शन-वन्दन एवं जिनवाणी श्रवण का लाभ लिया गया। मॉथेरान में भी प्रातःकाल 2 घण्टे सामूहिक सामायिक की गई। 26 जनवरी को संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत भी पधारे एवं सूरत संघ का उत्साहवर्धन किया। 10 फरवरी को आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. के 96 वें दीक्षा-दिवस पर ज्ञान गच्छाधिपति श्री प्रकाशचन्द्रजी म.सा. का पदार्पण हुआ। इस अवसर पर लगभग 700 श्रावक-श्राविकाओं ने जिनवाणी श्रवण करते हुए 3 से 5 सामायिक की साधना की। -*सुनील नाहर, महामंत्री*

स्वाध्यायियों से निवेदन

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा सभी स्वाध्यायी भाई-बहनों से

निवेदन है कि वे अपना पासपोर्ट साइज नवीनतम एक फोटो एवं पूर्ण परिचय, मोबाइल नं., ईमेल आई.डी, वाट्सअप इत्यादि शीघ्र ही संघ कार्यालय में भिजवाने का श्रम करावें, जिससे आगामी पर्युषण पर्व से पूर्व सभी स्वाध्यायियों का आई कार्ड एवं स्वाध्याय संघ की निर्देशिका का प्रकाशन शीघ्र ही हो सके। इस हेतु किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोनः 0291-2624891 (समय 10 से 5 बजे तक) - *ओमप्रकाश बांठिया, संयोजक*

डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान हेतु आवेदन आमन्त्रित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व महासचिव डॉ. बिमला जी भण्डारी की पुण्य स्मृति में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में भण्डारी परिवार की ओर से जैन धर्म-दर्शन से सम्बद्ध विषय पर पी-एच्.डी एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्त करने वाले शोधकर्त्ताओं को **'डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान'** से सम्मानित किया जाएगा। इस सम्मान हेतु आवश्यक बिन्दु इस प्रकार हैं-

1. इस योजना के अन्तर्गत पाँच पी-एच्.डी. उपाधिधारकों तथा दो डी.लिट् उपाधिधारकों को क्रमशः 11 हजार रुपये एवं 15 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि से सम्मानित किया जाएगा।
2. 17 फरवरी 2015 से 30 जून 2016 के मध्य जो भी पी-एच्.डी. एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्तकर्त्ता हों, वे इस सम्मान हेतु आवेदन कर सकते हैं। आवेदन-पत्र के साथ पी-एच्.डी./डी.लिट् उपाधि के समुचित प्रमाण-पत्र एवं शोधकार्य का सारांश संलग्न करना होगा।
3. प्राप्त आवेदन-पत्रों का निर्णायक समिति द्वारा मूल्यांकन कर सम्मान हेतु अनुशंसा की जाएगी।
4. सम्मान राशि 'श्री सरदारमल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर' के सौजन्य से प्रदान की जाएगी।
5. सभी आवेदन-पत्र निम्नांकित पते पर 31 जुलाई 2016 के पूर्व प्राप्त हो जाने चाहिए।- **महामंत्री**, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन : 0291-2636763

-पूरणराज अबानी, महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

चेन्नई में मृत्यु एवं मरणविधि पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

मद्रास विश्वविद्यालय के जैन विद्या विभाग एवं दर्शन विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में International School for Jain Studies, New Delhi एवं ICPR के सौजन्य से Death and Dying in Indian Tradition (An exploration of Sallekhana, Santhara and Samadhi Maran) विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी 18 से 20 फरवरी 2016 तक आयोजित हुई, जिसमें 40 शोध पत्र प्रस्तुत हुए एवं प्रतिदिन 100 से 150 श्रोताओं की भागीदारी रही। संगोष्ठी में 8 तकनीकी सत्र हुए, जिनमें शास्त्रीय, पुरातात्त्विक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक एवं विविध दृष्टियों से संलेखना संथारा एवं समाधिमरण पर चर्चा की गई। विश्वविद्यालय सिण्डिकेट सदस्य प्रो. एस. करुणानिधि ने कहा कि भारत के सभी धर्मों में समाधिपूर्वक मरण की अवधारणा है। लोयोला मेरीमाउण्ट विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स के प्रो. क्रिस्टोफर चेप्पल, मारबर्ग फिलिप्स विश्वविद्यालय, जर्मनी के प्रो. जयेन्द्र सोनी, प्रो. लुइटगार्ड सोनी, शुगन सी. जैन, प्रो. जी.सी. त्रिपाठी आदि ने विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता की। इस आयोजन में डॉ. प्रियदर्शना जैन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही तथा डॉ. दिलीप धींग ने भी संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत किया।

खुली पुस्तक (जेलर) परीक्षा का परिणाम घोषित

श्री महावीर पाठशाला एवं संस्कार समिति, जोधपुर द्वारा आयोजित 'जेलर' खुली पुस्तक परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। **प्रथम पुरस्कार विजेता-** 1. श्रीमती सुशीलादेवीजी-बालेसर, 2. श्री अमितजी जैन-जयपुर, 3. श्रीमती अनिताजी सालेचा-जोधपुर, 4. श्रीमती संगीताजी ओस्तवाल-खामगांव, 5. सुश्री सलौनीजी जैन-मनासा, 6. सुश्री किरणजी भाण्डावत-मंगलवाड़ चौराहा, 7. सुश्री स्नेहल जैन-नासिक, 8. श्रीमती पिंकीजी चौपड़ा-सूरत, 9. श्रीमती आशाजी तलेसरा-उदयपुर, 10. सुश्री पूजाजी जैन-बुद्धविहार-दिल्ली, 11. श्री संस्कारजी जैन-छपरौली। **द्वितीय पुरस्कार विजेता-** 1. श्री चंदनजी जैन-आगर, 2. श्रीमती संगीताजी गुन्देचा-आवर, 3. सुश्री एकताजी नेतानी-हासपेट, 4. श्रीमती शिल्पा जी भण्डारी-मैसूर, 5. श्रीमती सुषमाजी बोहरा-डोगरगांव, 6. सुश्री अनन्याजी चौरड़िया-गढ़ेपान कोटा, 7. श्रीमती मितिशाजी भण्डारी-पाली, 8. सुश्री नेहाजी जैन-सवाईमाधोपुर, 9. सुश्री नेहाजी जैन-अमीनगरसराय, 10. श्रीमती ज्योतिजी जैन, रूपामिस्त्री गली-लुधियाना, 11. सुश्री इशिकाजी जैन-गांधीनगर, दिल्ली। *-अनिल जैन, 9413293279*

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर- श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी जोधपुर द्वारा निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर

स्व. डॉ. बिमलाजी भण्डारी की द्वितीय पुण्य स्मृति में 17 फरवरी, 2016 को आयोजित किया गया। शिविर में हर्निया, फीशर तथा पाइल्स इत्यादि के 9 ऑपरेशन सफलतापूर्वक किये। कई चिकित्सकों के सहयोग से 150 मरीजों का जाँच करके इलाज किया गया। ऑपरेशन के पश्चात् मरीजों को निःशुल्क दवाइयाँ भी वितरित की गई। आगामी निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर रविवार 15 मई 2016 को आयोजित किया जायेगा

-पूरणराज अबानी, अध्यक्ष

जयपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद् जयपुर के द्वारा 08 फरवरी 2016 को लाल भवन, चौड़ा रास्ता एवं सुबोध महिला महाविद्यालय, रामबाग सर्किल में विशाल रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 390 यूनिट रक्तदान हुआ। *-मनीष मुणोत, शाखा सचिव*

जयपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद् जयपुर द्वारा अपनी सहयोगी इकाई फालकॉन के माध्यम से पर्युषण पर्व के दौरान पुराने वस्त्र एकत्रित करने हेतु जयपुर के सभी स्थानकों में बॉक्स रखकर ऐसे पुराने कपड़े रखने हेतु अपील की गई जो पहनने योग्य हो। वस्त्रदान की इस प्रक्रिया में 4000 वस्त्र एकत्रित हुए जिनकी धुलाई एवं छंटनी कर कैरी बैग में पैकिंग कर उन्हें जरूरतमंद व्यक्तियों, बच्चों एवं महिलाओं को उपलब्ध कराया जा रहा है।

-मनीष मुणोत

बधाई

जोधपुर- पद्मभूषण, प्राणिमित्र श्री डी.आर. मेहता विकलागों के ही नहीं जरूरत मंद

महिलाओं के भी मसीहा हैं। भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति के महिला प्रकोष्ठ 'संबल' संस्था के रजत जयन्ती वर्ष के अवसर पर टाउन हॉल, जोधपुर में 13 फरवरी 2016 को आयोजित कार्यक्रम में महिला प्रकोष्ठ सम्बल की ओर से श्री डी.आर.मेहता का सार्वजनिक स्वागत अभिनन्दन किया गया। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत, पूर्व नरेश श्री गजसिंहजी, विधायक श्री कैलाशजी भंसाली, फलोदी विधायक श्री पबारामजी विश्नोई तथा नेत्रहीन विकास संस्थान की निदेशक श्रीमती सुशीलाजी बोहरा ने श्री डी.आर.मेहता का शॉल, माला एवं अभिनन्दन पत्र समर्पित कर सम्मान किया। उन्हें अभिनन्दन पत्र भी भेंट किया गया, जिसका वाचन श्री नौरतनमलजी मेहता ने किया।

बालोतरा- स्वाध्याय संघ जोधपुर के संयोजक तथा रोटरी सह-प्रान्तपाल श्री ओमप्रकाश जी बांठिया 'सी.ए.' को राष्ट्रीय स्तर पर साम्प्रदायिक सौहार्द, कौमी एकता, धार्मिक सहिष्णुता एवं समाज-सेवा के कार्यों हेतु मदनमोहन मालवीय सद्भावना अवार्ड से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह

सम्मान नई दिल्ली के कान्सीट्यूशन हॉल में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर दिया गया।

उल्लेखनीय है कि श्री बांठिया को रोटरी इण्टरनेशनल प्रान्त 3052 में वर्ष 2016-17 के लिए प्रान्त सचिव मनोनीत किया गया है। वे तीन बार सह-प्रान्तपाल रह चुके हैं।

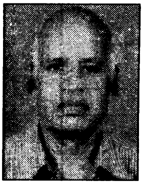

जोधपुर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्ष एवं समर्पित श्रावकरत्न श्री धनपत जी सेठिया राजस्थान केमिस्ट ऐसोशियन के 07 फरवरी 2016 को जयपुर में सम्पन्न चार वर्षीय चुनाव में लगातार पाँचवीं बार भारी बहुमत से महासचिव चुने गये हैं।

जोधपुर- श्री सुन्दरलालजी जैन सुपुत्र श्री बापूलालजी जैन (सालेचा) ने जैन विश्व भारती

संस्थान, लाडनूँ से ''प्राकृत एवं संस्कृत पंचसंग्रहों का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर डॉ. धर्मचन्द जैन, प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुशल निर्देशन में शोध कार्य पूर्ण कर पी-एच्.डी. की उपाधि प्राप्त की है। वर्तमान में आप राजकीय कन्या महाविद्यालय, पीपाड़शहर में वरिष्ठ व्याख्याता (संस्कृत) के पद पर कार्यरत हैं तथा द्विमासिक पत्रिका 'स्वाध्याय शिक्षा' के सम्पादक, वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं स्वाध्यायी-प्रशिक्षक हैं।

चेन्नई- साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग 'एडवोकेट' को तेलंगाना के मुख्यमंत्री मोहम्मद महमूद अली ने 09 फरवरी 2016 को हैदराबाद के निजाम कॉलेज में आयोजित ''हिन्दी का जैन साहित्य एवं साहित्यकार : एक अनुशीलन' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्मानित किया।''

जोधपुर- श्री सावन चौपड़ा सुपुत्र श्रीमती संगीताजी एवं श्री उत्तमजी चौपड़ा तथा सुपौत्र श्री दलीचन्दजी चौपड़ा ने 22 वर्ष की वय में सी.ए. एवं सी.एस. की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की है। वे श्रीमती अमृतकंवर एवं श्रावकरत्न श्री पारसमलजी गिड़िया के दोहित्र हैं तथा धार्मिक रुचिशील हैं।

जोधपुर- श्री संदीप जैन हुण्डीवाल सुपुत्र श्री सुभाष जी हुण्डीवाल (मंत्री-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर) ने सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। वे एम.बी.ए. करके विगत 6 माह से कल्पतरू पॉवर ट्रांसमिशन लिमिटेड की वलसाड़ शाखा में कार्य कर रहे हैं।

हैदराबाद- कु. स्नेहा मुणोत सुपुत्री श्री सज्जनराजजी मुणोत एवं सुपौत्री श्री रिखबचन्दजी मुणोत (सोजतसिटी-राजस्थान) ने सी.ए. फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

जलगांव- श्री संयम मुणोत सुपुत्र श्रीमती करुणाजी एवं श्री विक्रमजी मुणोत तथा सुपौत्र श्रीमती मायाजी एवं श्री रमेशजी मुणोत ने 7 वर्ष की उम्र में प्रतिक्रमण सूत्र, भक्तामर स्तोत्र एवं दशवैकालिक सूत्र का प्रथम अध्ययन कंठस्थ किया है।

मुम्बई- सुश्री सखी भण्डारी सुपुत्री श्रीमती शशिजी एवं श्री अक्षयजी भण्डारी तथा सुपौत्री श्री अचलराजजी भण्डारी, जोधपुर ने मात्र साढ़े चार वर्ष की वय में सामायिक सूत्र, पच्चीस बोल में 10 बोल, चौबीस तीर्थंकरों के नाम तथा प्रतिक्रमण में इच्छामि खमासमणो पाठ तक कंठस्थ कर लिया है।

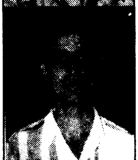

जोधपुर- श्री मुकेश हुण्डीवाल (कांकरिया) सुपुत्र श्री स्वरूपचन्दजी हुण्डीवाल एवं सुपौत्र स्व. श्री चम्पालालजी हुण्डीवाल ने सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

कोटा- श्री अंचित जैन सुपुत्र श्रीमती प्रीति एवं श्री कमलकुमारजी जैन ने सी.ए.,सी.एस. तथा सी.एम.ए. फाउण्डेशन में अखिल भारतीय स्तर पर द्वितीय रेंक प्राप्त की है।

श्रद्धाञ्जलि

चेन्नई- श्राविकारत्न श्रीमती किरणजी हुण्डीवाल धर्मसहायिका अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी

श्रावकरत्न श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल पुत्रवधू दृढ़धर्मी श्रावक श्री सोहनराजजी हुण्डीवाल का जोधपुर में 26 फरवरी, 2016 को 61 वर्ष की आयु में हृदयगति रुक जाने से स्वर्गगमन हो गया। श्राविकारत्न की संघ-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य सेवा भुलाई नहीं जा सकती। प्रकृति से सहज, शान्त, सरल श्राविकारत्न ने परिवारजनों में सेवा-धर्म की साधना में समर्पित रहने की भावना संजोई। संत-सतीवृन्द रूपी तीर्थ की सेवा में समर्पण उनका स्वभाव रहा। नित्यप्रति सामायिक, रात्रिभोजन-त्याग के साथ तप-साधना में उनका विशेष पुरुषार्थ रहा। आपने तीन बार वर्षीतप तथा अनेक बार बेला, तेला, पाँच एवं अठाई तप किए। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के चेन्नई चातुर्मास में उन्होंने शीलव्रत का खंध ले लिया था। पूज्य आचार्यप्रवर के बैंगलोर, बंगारपेठ, बीजापुर, इचलकरंजी चातुर्मास में आपने पूरे चार माह चौका लगाकर धर्मसाधना का लाभ लिया। सेवाभावी श्राविकारत्न ने संघ-सेवा के साथ अपने बच्चे-बच्चियों में भी सेवा के बीज बोए। श्रीमती किरणजी शरीर से स्थूल एवं अस्वस्थ रहते हुए भी आचार्यश्री-उपाध्यायश्री प्रभृति संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और

सेवा-भक्ति की भावना के कारण मारवाड़ की यात्रा करने को सहज तत्पर हो जाती थी।

भोपालगढ़ मूल का हुण्डीवाल परिवार रत्नसंघ में तन-मन-धन से समर्पित है। श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. एवं महासती सुव्रतप्रभाजी म.सा. इसी परिवार से दीक्षित होकर जिनशासन को गौरवान्वित कर रहे हैं। ''कहा सो किया और करके किसी को कुछ नहीं कहा'' इस सूत्र का जीवन-व्यवहार में चरितार्थ करने वाले दृढ़धर्मी, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व कार्याध्यक्ष श्रावकरत्न श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल को सेवा-धर्म की साधना में सक्रिय रहने में सहयोग-प्रदात्री दृढ़धर्मी सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती किरणजी का दृश्य-अदृश्य सहयोग प्रेरणादायी रहा। धर्म सहायिका के सहयोग के बिना गुरु सेवा में हर माह तीन-चार दिन आना तभी सम्भव हो सकता है जब कि दोनों के विचारों में एकरूपता हो, व्यवहार में समानता और आचरण में भक्ति भावना हो।

श्राविकारत्न अपने पीछे धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

कानपुर- संघसेवी गुरुभक्त श्री भंवरलाल जी लोढ़ा का 08 फरवरी 2016 को देहावसान हो गया। आप रत्नसंघीय संत रत्न श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के सांसारिक काकाश्री थे। जागरूक एवं धर्मनिष्ठ श्रावक रत्न ने व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के कानपुर विराजने पर परिवार सहित महासती मण्डल के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण एवं धर्मध्यान का पूरा लाभ लिया। आपने स्वयं संस्कारी जीवन जीते हुए पारिवारिक जनों को भी धार्मिक संस्कार दिए तथा संघ द्वारा प्रदत्त दायित्वों का बखूबी निर्वहन किया। आपने गजेन्द्र फाउण्डेशन ट्रस्ट में ट्रस्टी बनने के लिए अच्छा सहयोग प्रदान किया।

जयपुर- वीर भगिनी श्रीमती राजकंवरजी (भंवरी बाईसा) धर्मपत्नी स्व. श्री दशरथमलजी

भण्डारी, जोधपुर का 79 वर्ष की वय में 27 जनवरी, 2016 को निधन हो गया। आपकी संघनायक एवं संत-सतियों के प्रति पूर्ण भक्ति एवं निष्ठा थी। आपश्री शीतलराजजी म.सा. की सांसारिक बहन थी। धार्मिक संस्कार आपको विरासत में प्राप्त हुए थे, जो निरन्तर बढ़ते रहे। सामायिक, प्रतिक्रमण एवं तप-त्याग में आप सदैव तत्पर रहती थीं। जीव दया एवं निर्धन व्यक्तियों की सेवा में आपको आनन्द आता था। आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री अरूणजी भण्डारी ने आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के अहमदाबाद के चातुर्मास में 31 दिवसीय मासक्षपण तप किया तथा 7 वर्ष से निरन्तर मासक्षपण के अधिक दिनों की तपस्या कर रहे हैं। श्राविकारत्न भंवरीबाईसा अपने पीछे सुपुत्र अरूण, महेन्द्र एवं सुपुत्री उषा पटवा सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गईं।

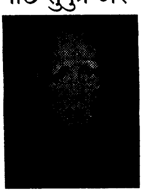

जोधपुर- सुश्रावक श्री सोहनलाल जी सिंघवी का 23 फरवरी 2016 को देवलोकगमन हो गया। आपकी संघनायक एवं संत-सतियों के प्रति श्रद्धाभक्ति थी। आप उत्कृष्ट हस्त रेखा विशेषज्ञ थे, किन्तु आपने कभी भी

अर्थोपार्जन के लिए इस विशेषता का आलम्बन नहीं लिया। आप नित्य प्रति सामायिक, प्रत्याख्यान आदि करते थे तथा रत्नसंघीय संत श्रद्धेय श्री कैलाशमुनिजी म.सा. के सांसारिक चाचाजी थे। आपके सुपुत्र श्री रमेशजी सिंघवी संघ के सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं। सिंघवी साहब की इच्छानुसार मृत्यूपरान्त उनकी पार्थिक देह मेडिकल कॉलेज को प्रदान की गई।

बालोतरा- श्रावकरत्न श्री चम्पालालजी बांठिया का 03 फरवरी 2016 को स्वर्गगमन हो गया। श्रद्धानिष्ठ एवं धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न साम्प्रदायिक भावना से परे रहकर धर्माराधन, तपराधन एवं संघ-सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आपका जीवन सरलता, मधुरता एवं सेवाभावना से समन्वित था। आप राजस्थान के विधायक रहे, अतः आपका राजनैतिक क्षेत्र में अच्छा प्रभाव रहा तथा सामाजिक कार्य में भी सराहनीय योगदान रहा।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती पुष्पादेवीजी धर्मपत्नी श्री सम्पतराजजी जैन (पालड़ेचा) 'वकील साहब', सरस्वतीनगर का 11 जनवरी 2016 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता एवं सेवाभावना से युक्त था। आप संत-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं तथा प्रतिदिन 4 से 6 घण्टे तक मौन साधना करती थीं। आपका परिवार संघ, समाज की धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में सदैव तत्पर रहता है। आपकी लिखित भावनानुसार देहावसान पश्चात् किसी प्रकार का आडम्बर नहीं किया गया।

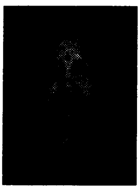

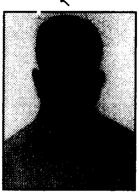

जोधपुर- सुश्रावक श्री मनोजजी नाहटा सुपुत्र श्री चांदमलजी नाहटा का 47 वर्ष की आयु में 20 जनवरी 2016 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन कर्त्तव्य परायणता, सेवाभावना, स्वधर्मि-वात्सल्य आदि गुणों से ओत-प्रोत था। आपकी धर्मपत्नी मंजूषाजी का 04-12-2015 को स्वर्गगमन हो गया था।

जयपुर- सुश्रावक श्री उदयचन्दजी कोठारी का 11 फरवरी 2016 को स्वर्गगमन हो गया। आप नियमित सामायिक करते थे तथा आपका जीवन धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता, सेवा भावना, स्वधर्मि-वात्सल्य आदि गुणों से युक्त था।

कोटा- वर्धमान स्थानकवासी जैन श्री संघ रामपुरा कोटा के संरक्षक एवं आधारस्तम्भ, धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री राजेन्द्रजी मेहता का 79 वर्ष की अवस्था में 04 जनवरी 2016 को देहावसान हो गया। आप स्वभाव से विनम्र, स्पष्टवादी, मिलनसार, मृदुभाषी एवं उदार थे। आप अनेक वर्षों से प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय एवं रात्रि चौविहार के त्याग आदि नियमों का पालन किया करते थे। प्रतिवर्ष चातुर्मास में तेले की तपस्या भी आवश्यक रूप से करते थे। सरकारी सेवा में रहते हुए 43 वर्ष की वय में आपने आजीवन शीलव्रत का नियम ले लिया था। आप सभी साधु-साध्वियों की सेवा हेतु तत्पर रहते थे। आपने कई वर्षों तक पर्युषण

पर्व के दौरान अठाई तप का आराधन किया। आपकी अध्यक्षता में ही पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का सन् 2014 का ऐतिहासिक चातुर्मास सम्पन्न हुआ। आपकी सन्निधि में रामपुरा स्थानक में प्रतिदिन सायंकाल प्रतिक्रमण होता रहा। ओसवाल समाज के कई प्रतिष्ठित पदों को सुशोभित करने के साथ संघ एकता में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

-बुद्धिप्रकाश जैन एवं अनिल जैन

जयपुर- श्रावकरत्न श्री राजकुमारजी नवलखा का 19 फरवरी 2016 को निधन हो गया। आप धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ श्रावकरत्न थे तथा आपकी देव, गुरु एवं धर्म के प्रति सच्ची निष्ठा थी।

जलगांव- धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ सुश्रावक श्री बंशीलालजी पन्नालालजी बोथरा 'हीरादेसर' का

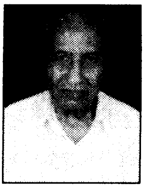

28 जनवरी 2016 को 84 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक, एकाशन एवं रात्रि में चौविहार त्याग वर्षों से कर रहे थे। संघनायक एवं संत-सतियों के प्रति आपकी अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आप जलगांव श्री संघ के कोषाध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे थे। अपने पीछे आप सुपुत्र श्री राजेन्द्रजी, श्री विजयजी एवं सुपुत्री श्रीमती आशाजी रूणवाल का धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गये हैं।

जोधपुर- श्रीमती रमकूदेवीजी जैन धर्मपत्नी श्री ज्ञानमलजी जैन सांखला (श्री अखिल भारतीय

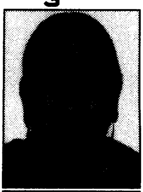

सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, जोधपुर के पूर्व उपाध्यक्ष) का 04 फरवरी 2016 को 70 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। सरल स्वभावी, मृदुभाषी श्राविका प्रतिदिन कम से कम 5 सामायिक एवं पर्व-तिथियों पर दया, संवर, पौषध एवं अनेक छोटी-मोटी तपस्या करती थी।

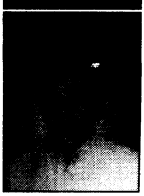

जोधपुर- सुश्रावक श्री ऋषभराजजी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री मोहनराजजी भण्डारी का 88 वर्ष की आयु में 30 जनवरी 2016 को स्वर्गारोहण हो गया। रत्नसंघ के आचार्यों एवं सभी संत-सतियों के प्रति आपकी श्रद्धाभक्ति थी। आप अपने पीछे सुसंस्कृत-सम्पन्न परिवार को छोड़कर स्वर्ग सिधारे हैं।

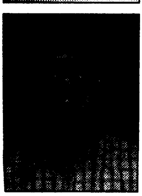

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री लक्ष्मीमलजी सिंघवी सुपुत्र स्व. श्री अचलमलजी सिंघवी का सड़क दुर्घटना में 24 जनवरी 2016 को आकस्मिक निधन हो गया। आपका जीवन सरल, सहज, शान्त, मिलनसार एवं सादगी जैसे गुणों से सुगन्धित था। अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व महामंत्री श्री जगदीशमलजी कुम्भट के आप बहनोई थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

संघ-सदस्यों का सूचना-संग्रहण कार्यक्रम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सभी सदस्यों की सूचना एकीकृत रूप से एक ही जगह संगृहीत करने की बहुआयामी एवं भविष्य हेतु अमूल्य निधि साबित होने वाली महत्त्वपूर्ण कार्य योजना को **सूचना संग्रहण कार्यक्रम** के माध्यम से युवक परिषद् द्वारा संघ के निर्देशानुसार से प्रारम्भ किया जा चुका है। इस कार्यक्रम को मूर्त रूप प्रदान करने हेतु युवक परिषद् के उपाध्यक्ष श्री विकास जी गुंदेचा-जोधपुर, सचिव श्री वेदान्तजी सांखला-बैंगलोर, संयोजक श्री मुदितजी जैन-जोधपुर एवं सह-संयोजक श्री शुभमजी कांकरिया-जोधपुर को जिम्मेदारी प्रदान की गयी है।

इस कार्यक्रम के द्वारा सभी सदस्यों की व्यक्तिगत, धार्मिक, व्यावसायिक, पारिवारिक एवं विशेष उपलब्धि आदि की जानकारी ऑनलाइन इण्टरनेट के माध्यम से संगृहीत की जा रही है। सभी सदस्यों को एक सूत्र में पिरोया जा सके, इसी शुभ ध्येय को पूर्ण करने हेतु सभी से अनुरोध है कि ऑनलाइन फार्म संघ की वेबसाइट **www.ratnasangh.com** पर उपलब्ध है, जिसे प्राथमिकता देते हुए परिवार के सभी सदस्यों का फार्म पृथक रूप से भरें। फार्म भरने की विधि-

1. सबसे पहले संघ की वेबसाइट पर लागऑन करें, तत्पश्चात नये फार्म हेतु **New Form** पर क्लिक करें।
2. नये फार्म हेतु वेबसाइट पर मांगी जाने वाली प्राथमिक सूचना दिये जाने पर आपको एक संदेश प्राप्त होगा, जिसमें आप द्वारा भरा गया फार्म नम्बर एवं फार्म भरने की तारीख प्राप्त होगी, इसे भविष्य में अपने फार्म में सुधार करने हेतु सुरक्षित रखें।
3. अपने पुराने भरे फार्म में सुधार करने हेतु आप **Edit Form** पर क्लिक करें। यहाँ पर आपको अपने पहले भरे हुए फॉर्म का नम्बर एवं फार्म भरने की तारीख डालने पर आपका पुराना भरा हुआ फार्म प्राप्त हो जायेगा। आप वांछित सुधार कर इसे पुनः **Save** कर देवें।

यह फार्म मात्र 5-7 मिनट में पूर्ण भरा जा सकता है। फार्म भरने हेतु कम्प्यूटर, लेपटॉप, टेबलेट, आई पेड या मोबाइल किसी भी माध्यम का उपयोग किया जा सकता है। यह संघ की सभी भावी योजनाओं, संघ द्वारा सूचना को त्वरित रूप से अपने सदस्यों को पहुँचाने एवं संघ के सदस्यों में सक्रियता का संचार करने में मील का पत्थर साबित होगा। आप सभी से अनुरोध है कि आप अपने परिवार के सभी सदस्यों का व्यक्तिगत रूप से फार्म शीघ्रातिशीघ्र भरें। अधिक जानकारी हेतु मेल करें-**sanghwebsite@gmail.com** *-मनीष लोढ़ा, महासचिव*

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मण्डल से प्रकाशित सत्साहित्य की 20 वर्षीय सदस्यता हेतु प्रत्येक

777 श्री हंसराजजी जैन, जोधपुर
778 श्री संतोष कुमारजी बाफणा, राजनादगाँव
779 श्री मोहनलालजी जैन, भीलवाड़ा
780 श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बदनावर

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15573 से 15592 तक 20 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

11100/- श्री सोहनलालजी, प्रेमचन्दजी हुण्डीवाल चैन्नई, श्रीमती हीराकँवर-प्रेमचन्दजी हुण्डीवाल की सुपुत्री सौ.कां. ललिताजी संग चि. अजयजी खींचा, चैन्नई के विवाह की प्रथम वर्षगाँठ 20 फरवरी 2016 के पावन प्रसंग पर सप्रेम भेंट।

11000/- श्री भागचन्दजी, सुनीलकुमारजी, अशोककुमारजी, सुरेन्द्रजी खिंवसरा, माण्डल, जिला-जलगांव (महा.), खिंवसरा परिवार की लाडली विरक्ता सुश्री रुचिताजी की 11 फरवरी 2016 को दूदू में जैन भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

11000/- श्री गोकुलचन्दजी, विजयकुमारजी, कांतिलालजी खिंवसरा, माण्डल, जिला-जलगांव (महा.), खिंवसरा परिवार की लाडली विरक्ता सुश्री नेहाजी की 11 फरवरी 2016 को दूदू में जैन भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

5000/- श्री मदनराजजी, सम्पतराजजी देशरला, मद्दूर-मंडिया, पूज्य माताश्री स्व. श्रीमती उमरावकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री सुगनराजजी देशरला का 11 दिसम्बर, 2015 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में।

3000/- श्री मूथा परिवार, मैसूर।

2100/- श्रीमती चंचलबाईजी धर्मपत्नी श्री निर्मलकुमारजी बम्ब, बेंगलूरु, श्रीमती चंचलबाई जी बम्ब के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री मंगलचन्दजी, धर्मीचन्दजी, राजेन्द्रजी भंसाली बडपल्ली-चैन्नई।

2100/- श्री हस्तीमलजी, विमलजी, अशोकजी, विनोदजी सुराणा, नागौर-कोलकात्ता-बेंगलूरु, चारों दीक्षाओं की अनुमोदना हेतु।

2100/- श्री सुशील कुमारजी, अंकित कुमारजी, सचिन कुमारजी जैन गंगापुरसिटी, मुमुक्षु बहिन सुश्री खुशबूजी सुपुत्री श्रीमती मायादेवीजी सुशील कुमारजी जैन की भागवती दीक्षा 11 फरवरी, 2016 को आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के पावन मुखारविंद से दूदू में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

2100/- श्री रिखबचन्दजी, उदयराजजी धोका, मैसूर, चि. संदीप संग प्रियंका के शुभ-विवाह के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री रौनकजी, उज्ज्वलजी गुलेच्छा, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री हीराचन्द्रजी गुलेच्छा की प्रथम पुण्यस्मृति में।

2100/- श्रीमती राजदुलारीजी भागचन्दजी सेठ, जयपुर, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर की ओर से महावीर नगर जयपुर में वैरागिन बहिनों के अभिनन्दन व श्राविका-मण्डल, जयपुर के वार्षिक समारोह के सानन्द सम्पन्न होने पर।

2100/- श्री पारसमलजी-अमृतकंवरजी गिड़िया, जोधपुर, अपने दौहित्र श्री सावन चौपड़ा (सुपुत्र श्रीमती संगीता-उत्तमजी चौपड़ा) के सी.ए. एवं सी.एस. की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।

1151/- श्रीमती मंजूजी धर्मपत्नी श्री गणपतजी सुराणा, श्रीमती आशाजी, श्रीमती अल्फाजी, श्रीमती आकांक्षाजी, जोधपुर, श्रीमती केसरजी धर्मपत्नी श्री चंचलमलजी गांग का 24 जनवरी, 2016 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

1100/- श्री जवाहरलालजी, प्रेमचन्दजी, सुरेशचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी बाघमार (कोसाणा वाले), चैन्नई, चि. प्रतीकजी सुपुत्र श्रीमती रूपाजी-राजेन्द्रजी एवं सुपौत्र श्रीमती शांताकँवरजी जवाहरलालजी बाघमार का सौ.कां. निशिकाजी के संग 13 दिसम्बर, 2015 को शुभविवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री अशोक कुमारजी जैन, जयपुर, पूजनीय मातुश्री श्रीमती किरणदेवीजी धर्मपत्नी श्री रमेशचन्द जी जैन (मेहतोली) का 19 जनवरी, 2016 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री गिर्राजप्रसादजी, जम्बू कुमारजी जैन, चौथ का बरवाड़ा, पूज्य पिताश्री श्री चौथमलजी जैन (चौधरी) की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री चन्द्रप्रकाशजी, जितेशजी जैन, महारानीफार्म-जयपुर, चि. नितिश (सी.ए.) का शुभ विवाह 04 फरवरी, 2016 को सुसम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री सौभाग्यमलजी, हरकचन्दजी, हनुमानप्रसादजी, महावीर प्रसादजी, कपूरचन्दजी जैन, बिलोता वाले, मातुश्री की 20 वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री कुंजबिहारीजी, राहुलजी जैन (अरनेठा वाले), कोटा, पूज्य पिताश्री श्री रमेशचन्दजी जैन की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री पारसमलजी सुपुत्र श्री मगराजजी बोहरा, मण्डली-बाड़मेर, सहयोगार्थ।

1100/- श्री देवीनारायणजी, प्रेमचन्दजी जैन 'कुश्तला वाले', रावतभाटा-कोटा, चि. ऋषभकुमार जी (सुपुत्री श्रीमती आशारानी-श्री प्रेमचन्दजी जैन) का शुभविवाह सौ. कां करिश्मा (सुपुत्री श्रीमती मीनाजी-श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन-श्यामपुरा वाले), इन्दौर के संग 29 जनवरी, 2016 को रावत भाटा में सानन्द सम्पन्न होने पर।

1100/- श्री सुभाषजी, प्रवीणजी-प्रियंकाजी, रविन्द्रजी, संदीपजी, लक्ष्यजी हुण्डीवाल, जोधपुर, श्री संदीपजी सुपुत्र श्री सुभाषजी हुण्डीवाल के सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को सत्साहित्य प्रकाशनार्थ अर्थसहयोग

100000/- अमोलकचन्दजी ज्ञानचन्दजी ढढ्ढा चेरिटेबिल ट्रस्ट, जयपुर, चि. सखिल सुपुत्र श्रीमती रेनुजी सुरेशजी ढढ्ढा तथा सुपौत्र स्व. श्रीमती हेमलताजी ज्ञानचंदजी ढढ्ढा का शुभविवाह

सौ.का. संक्षिता सुपुत्री श्रीमती सुनीताजी महेन्द्रजी बैद एवं सुपौत्री श्रीमती मैनादेवीजी रायचन्दजी बैद के संग 04 जनवरी, 2016 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

64000/- अरिहंत धर्मार्थ न्यास, अलवर, पुस्तक 'सामायिक दर्शन' के प्रथम संस्करण की प्रतियों के मुद्रण हेतु।

50000/- श्री हुकमचन्दजी जैन, अलवर पुस्तक 'सामायिक दर्शन' के प्रथम संस्करण के मुद्रण हेतु।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

संघ-सेवा सोपान के अन्तर्गत साभार प्राप्त

31000/- श्री भागचन्दजी, सुनीलकुमारजी, अशोककुमारजी, सुरेन्द्रजी खिंवसरा, माण्डल, जिला-जलगांव (महा.), खिंवसरा परिवार की लाडली विरक्ता सुश्री रुचिताजी की 11 फरवरी 2016 को दूदू में जैन भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

21000/- श्री गोकुलचन्दजी, विजयकुमारजी, कांतिलालजी खिंवसरा, माण्डल, जिला-जलगांव (महा.), खिंवसरा परिवार की लाडली विरक्ता सुश्री नेहाजी की 11 फरवरी 2016 को दूदू में जैन भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

6100/- श्री भंवरलालजी, प्रेमचन्दजी, किशनचन्दजी लोढ़ा, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1100/- श्री राजेशजी, राजेन्द्रजी, सुरेन्द्रजी जैन 'अणघोरा वाले', सुमेरगंजमण्डी, जिला-बूंदी (राज.), अपने पूज्य पिताजी श्री देवकरणजी जैन का 12 जनवरी 2016 को देहावसान होने पर उनकी पावन स्मृति में।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

11000/- श्री भागचन्दजी, सुनीलकुमारजी, अशोककुमारजी, सुरेन्द्रजी खिंवसरा, माण्डल, जिला-जलगांव (महा.), खिंवसरा परिवार की लाडली विरक्ता सुश्री रुचिताजी की 11 फरवरी 2016 को दूदू में जैन भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

11000/-- श्री गोकुलचन्दजी, विजयकुमारजी, कांतिलालजी खिंवसरा, माण्डल, जिला-जलगांव (महा.), खिंवसरा परिवार की लाडली विरक्ता सुश्री नेहाजी की 11 फरवरी 2016 को दूदू में जैन भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री अमोलकचन्दजी, बाबूलालजी 'एण्डवा वाले', सवाईमाधोपुर, अपने सुपुत्र चि. दीपक के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

15000/- श्री हरकचन्दजी, विरेन्द्रजी, राकेशजी सदावत मेहता, जोधपुर, पुस्तक प्रकाशन में सहयोग।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर हेतु साभार प्राप्त

51000/- श्रीमती पूर्णिमाजी विनोदजी लोढ़ा, जयपुर, सुपौत्र वीर (सुपुत्र श्री विवेकजी-श्रीमती विजेताजी लोढ़ा) एवं पर्व (सुपुत्र श्री विज्ञानजी-श्रीमती पूर्वीजी लोढ़ा) के जन्म के उपलक्ष्य में।

11000/- श्रीमती चन्द्रकान्ताजी प्रमोदजी लोढ़ा, जयपुर, सुपौत्री यशा (सुपुत्री श्री अंकितजी-श्रीमती नेहाजी लोढ़ा) के जन्म उपलक्ष्य में।

5000/- श्रीमती मंजूजी अशोकजी सेठ, जयपुर, सुपौत्र यथार्थ (सुपुत्र श्री अभिषेकजी-श्रीमती सलोनीजी सेठ) के जन्म के उपलक्ष्य में।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड
(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)
दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

48000/- श्रीमती मंजुलाजी जैन, उज्जैन (मध्यप्रदेश)।

31000/- श्री विजयकुमारजी, श्री चन्द्रभानजी खिंवसरा एवं परिवार, माण्डल, जिला-जलगांव (महा.), सुश्री नेहाजी खिंवसरा सुपुत्री श्री विजयजी-श्रीमती किरणजी खिंवसरा की रत्नसंघ में भागवती दीक्षा 11 फरवरी 2016 को दूदू में सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

31000/- श्री भागचन्दजी, अशोकजी, सुनीलजी, सुरेन्द्रजी, अक्षयजी खिंवसरा एवं परिवार, माण्डल, जिला-जलगांव (महा.), सुश्री रुचिताजी खिंवसरा सुपुत्री श्री अशोकजी-श्रीमती सुशीलाजी खिंवसरा की रत्नसंघ में भागवती दीक्षा 11 फरवरी 2016 को दूदू में सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री जिनेशजी जैन, जयपुर (राज.),श्री मोहितराजजी जैन सुपुत्र श्री जिनेशजी जैन की केन्द्रीय विद्यालय में नियुक्ति होने के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री उम्मेदमलजी जैन 'चौथ का बरवाड़ा वाले', जयपुर, स्व. श्रीमती पुष्पादेवीजी धर्मपत्नी श्री उम्मेदमलजी जैन की 08 फरवरी, 2016 को 12 वीं पुण्यस्मृति में।

12000/- श्रीमती हीरादेवीजी कोचर, नागपुर।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. M. Harish Kawad****, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व तिथि

फाल्गुन शुक्ला 8, बुधवार	16.03.2016	अष्टमी, श्री माणकमुनिजी म.सा. की 40 वीं पुण्यतिथि
फाल्गुन शुक्ला 14, मंगलवार	22.03.2016	फाल्गुनी चौमासी पर्व
चैत्र कृष्णा 8, शुक्रवार	01.04.2016	प्रभु आदिनाथ जन्म-कल्याणक एवं आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 78 वां जन्मदिवस
चैत्र कृष्णा 14, बुधवार	06.04.2016	चतुर्दशी, पक्खी
चैत्र शुक्ला 8, गुरुवार	14.04.2016	आयम्बिल ओली प्रारम्भ
चैत्र शुक्ला 13, मंगलवार	19.04.2016	भगवान महावीर जन्म-कल्याणक
चैत्र शुक्ला 14, बुधवार	20.04.2016	चतुर्दशी
चैत्र शुक्ला 14, गुरुवार	21.04.2016	चतुर्दशी, पक्खी

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन: 0141-2710946, 94614-56489 (मोबाइल)
Email-ahassansthan@gmail.com

प्रवेशार्थ आवेदन-पत्र-2016

(अ) व्यक्तिगत विवरण

1. नाम ....

2. पिता का नाम..

3. जन्मतिथि...

4. पत्राचार का पूर्ण पता..

अपना नवीन फोटो लगायें

....

5. मोबाइल नं. .... निवास दूरभाष नम्बर .... ईमेल...............................

6. शैक्षणिक योग्यता विवरण (पिछले चार वर्ष की)

कक्षा/डिग्री	संस्थान/कॉलेज	बोर्ड/विश्वविद्यालय	उत्तीर्ण वर्ष	प्राप्तांक/प्रतिशत

7. किस कक्षा/किस विषय में प्रवेश...................... 8. धार्मिक अध्ययन...........................

9. परिवार के कुल सदस्य................................ 10. मकान (किराया/स्वयं/सामूहिक).......

11. परिवार की वार्षिक आय.............................. 12. अभिभावक का पेशा/व्यवसाय..........

13. परिवार में धार्मिक गतिविधियाँ...................... 14. परिवार का किस धर्म संघ से सम्बन्ध....

15. संस्थान में प्रवेश का उद्देश्य एवं लक्ष्य ....

....

(आ) सम्पर्क सूत्र (स्थानीय श्रावक)

(1) नाम.. (2) नाम ....

पता .... पता ....

दूरभाष/ मोबाइल.................................. दूरभाष/ मोबाइल ....

(इ) विशिष्ट संदर्भ सूत्र-

नाम .... पता ....

....दूरभाष/ मोबाइल ....

मेरे द्वारा दी गई उक्त जानकारी सत्य है।

आवेदन में दी गई जानकारी के गलत होने पर फार्म निरस्त किया जा सकता है।

अभिभावक हस्ताक्षर   छात्र हस्ताक्षर

||श्री महावीराय नमः|| ||श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः||

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

❋निर्व्यसनी बनें एवं सामायिक आराधन करें❋

(अ) आवश्यक नियमः-

1. **निर्व्यसनी बनना** एवं सप्त कुव्यसन का त्याग करना। ☐
2. मादक, नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना। ☐
3. अखाद्य पदार्थ का सेवन नहीं करना। ☐
4. चोरी नहीं करना। ☐
5. स्वदार/स्वपति सन्तोष रूप सदाचार का पालन करना। ☐
6. जुआ आदि नहीं खेलना। ☐
7. फैशन में मर्यादित जीवन जीना। ☐
8. प्रतिमाह कम से कम चार दिन अथवा अधिक, रात्रि-भोजन का त्याग करना। ☐
9. जीवन में राग व द्वेष को कम करना। ☐
10. माह में भावनानुसार ब्रह्मचर्य का पालन करना। ☐
11. सामायिक में रेशम आदि महाहिंसा के वस्त्र नहीं पहनना, सूती वस्त्र पहनना। ☐
12. धार्मिक स्थानकों में सभ्य वेशभूषा में ही प्रवेश करना। ☐
13. स्वधर्मी भाई-बहिनों एवं असहायों की सेवा-शुश्रूषा सार सम्भाल करना। ☐
14. संघ की गतिधिविधों में प्रतिमाह अधिक से अधिक भाग लेना। ☐

(ब) नित्यक्रमः-

1. प्रातः उठने के समय, भोजन के पूर्व एवं रात्रि में सोने के पूर्व पाँच-पाँच नवकार मंत्र का उच्चारण करना। ☐
2. सामूहिक प्रार्थना प्रतिदिन/साप्ताहिक करने का लक्ष्य रखना। ☐
3. **प्रतिदिन कम से कम एक या प्रतिमाह चार सामायिक करने का लक्ष्य रखना।** ☐
4. प्रतिदिन कम से कम 15 मिनट स्वाध्याय करने का लक्ष्य रखना। ☐
5. प्रतिदिन कोई भी प्रत्याख्यान करना अथवा नियम लेना। ☐

(स) प्रतिज्ञाः-

मैं उपर्युक्त चिह्नित नियमों का यथावत् पालन करने की प्रतिज्ञा करता/करती हूँ।

नाम........................पिता/पति का नाम..

पूरा पता..

ग्राम/नगर...............जिला..............प्रदेश...........फोन नं.................

व्यावहारिक शिक्षा........................व्यवसाय......................................

धार्मिक अध्ययन...

हस्ताक्षर प्रेरक प्रतिज्ञाकर्त्ता

फार्म भेजने का पताः- अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोनः- 0291-2636763/2641445

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचिये

काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को पर्याप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियाँ आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए – 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन के पास, न्यू पावर हाऊस रोड, जोधपुर (राज.)

Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525

सम्पर्क : धीरेन्द्र कुम्भट

93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है,
जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

- आचार्य श्री हस्ती

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

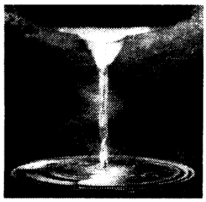
Electric Arc Furnace

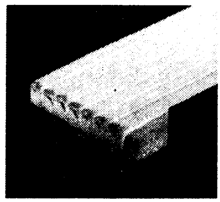
Billets

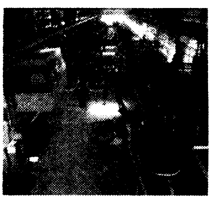
Rolling Mill

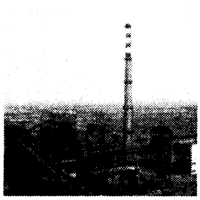
Captive Power Plant

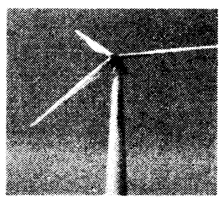
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

॥ श्री महावीराय नमः ॥

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का ॥

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

Acharya Hasti Scholarship Fund

Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam..........

Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.

Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. - AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.
• **For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)**

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस, चैन्नई।
युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमान् लक्ष्मीमल जी लोढ़ा, जोधपुर।
श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन	श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई।
	गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
	श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई।
	श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई।
	श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–
M. Harish Kumar Kavad - 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-600056** (TN)
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई (**Mob.095430 68382**)
'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का।।'

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम्।।

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports
Paras Chand Hirawat
CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),
Mumbai-400 098 (MH)
Tel. : +91 22 4018 5000
Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
PACHPADRA-PALI-ERODE
K.L. ASSOCIATES
'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)
Mobile : 094141-22757
135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)
Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

BHANSALI GROUP
Dhanpatraj V. Bhansali
BHANSALI DEVELOPERS
Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E),
Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O),
E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS
Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)
FC51, Bharat-Diamond Bourse,
Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)
Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429
Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates, C.A.
BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd.,
Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt.Ltd.
बसंत के जैन
अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,
Mumbai - 400020 (MH)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.
Launches
N.H. Studios ***N.H. Jewells***
A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg,
Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)
Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

।।श्री महावीराय नमः।।

।।जय गुरु हस्ती।। ।।जय गुरु हीरा-मान।।

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को आत्म-कल्याण के लिए स्वीकार करना चाहिए।
– भगवान महावीर

रात्रि भोजन त्याग के साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार करके ही अन्न ग्रहण करना चाहिए।
– आचार्य हस्ती

अहिंसा परमो धर्म

रात्रि भोजन सदोष व तामसी आहार होता है। समाधि का अभिलाषी साधक ऐसी तामसी आहार से दूर ही रहता है।
– आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या न करें, अगर त्याग नहीं है तो उसे दोष लग ही रहा है। अतः रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान करना आवश्यक है।
– उपाध्याय मान

सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ।।

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत – **समस्त जैन समाज**

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 मार्च, 2016
वर्ष : 74 ★ अंक : 03 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 मार्च, 2016 ★ फाल्गुन, 2072

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन